

इकाई दहाई सैकड़ा

•

••

•••

विमल मित्र
अनुराध
दिनेश आचार्य



राधाकृष्ण प्रकाशन

ये हैं।
स्वाय

नवल
हर म

। है ?
स्वस्थ
॥ का
आग

वेकिन

स्य मी
। शाना

© १९६६

विमल मिश्र कवयन्त्रिणी

प्रकाशक

आमप्रकाश

राधाकृष्ण प्रकाशन लिमिटेड ७

मुद्रक

श्यामसुन्दर शर्मा

राष्ट्रभाषा प्रिन्टिंग लिमिटेड

१२ रुपये १० पैसे

बूटे

। है ।
। वाप

। वल
। र ग

। है ?'
। प्वम्य
। का
। आग

। नेत्रिन

। य भी
। हाता

मन्टू

ससार-याया की सारी जिम्मेदारिया से मुझे
छुटकारा देकर तुमने हमेशा मेरी महायता की
है, इसलिए 'साहज बीबी गुलाम,' 'परीदी
कौडिया के मान और 'इराई, दहार्ज, मक्का'
की रचना सम्भव हो पायो। मेरी इच्छा है कि
जम वृत्ति के माय तुम्हारा नाम मलमल रहे।

The time will come when the sun will shine only upon
a world of free men who recognise no master except
reason when tyrant and slaves priests and their stupid
or hypocritical tools will no longer exist except in history
or on the stage

—*Marquis de Condorcet*
1743-179

राज्य-परिग्रमा के बाद राजा रोहित राजधानी वापस आय । एक बूटे ब्राह्मण ने सामन आकर राम्ना राक लिया ।

“कीन ?”

“मैं हूँ, राजा रोहित ।”

ब्राह्मण ने पूछा, ‘लौट क्या आये ?’

राजा रोहित न कहा, ‘मैं यक गया हूँ ।’

ब्राह्मण न कहा ‘चलते चलते जा थक जात हैं वही ता अन्न-श्री हैं । जा सत्यकाम हैं वे भी अगर निष्प्रिय बठे रह तो उनका भी पतन अनिवाय है । इसलिए तुम चलने चला आगे बगो चरवेति चरवति ।”

राजा इसके बाद घर नहीं चोट पाय । वे फिर स परिग्रमा करन निकल पडे । लेकिन फिर एक दिन राजधानी लौट आय । उसी ब्राह्मण न फिर म रास्ता रोक लिया ।

‘पर क्या लौट आय ?’

राजा रोहित न कहा, इमतरह लगानार चनन रहनसे क्या लाभ है ?’

ब्राह्मण ने कहा, ‘बहुत लाभ हैं । जा चल सकता है बहा तो स्वस्थ है । स्वस्थ आदमी ही स्वस्थ मन का अधिकारी है । उसकी आमा का विकास होता है । यह क्या चरम लाभ नहीं है ? तुम चनन चला, आग बढो—चरवेति चरवति ।”

राजा इस बार भी घर नहीं चोट पाय । फिर निकल पडे । लेकिन राजा रोहित फिर एक दिन लौट । ब्राह्मण दबता भा गडे ये ।

“फिर क्यों लौट आय ?”

‘अब चला नहीं जाता ।’

ब्राह्मण ने कहा, ‘यह क्या ? जो आराम करता है उमका भाग्य भी आराम करता है । जा उठ खडा हाता है उमका भाग्य भा उठ खडा हाता

वत्ता। उनकी पत्नी भी दखती। तभी थ लागे का पना लगा कि यह मवान
गिवप्रमाद गुप्त का है। वक्तता व मगहूर जातमी, प्रमिद्ध दामवन ।
एक समय के पालिटिकन मफरर गिवप्रमाद गुप्त का नाम किमी व त्रिण
जनजाना नहीं था।

बड़े आत्मिया का नाम फरने मे जितन फायर हैं ठीक वमी ही मुदिन
भी हैं।

गिवप्रमाद पहले पहल जब इस मवान म जाय उम समय मुहल्ले व
कितन ही लोग उनमे मितन आय। उम समय जो जाना जाना गुरू हुआ,
वह फिर वभी नहीं रता।

लोग कहत, “बड़े आदमी हान मे क्या हुआ, मिजाज दिनकुन ‘गिव’
की तरह पाया है।”

गिव का मिजाज अमल म क्या है किमे पना। लेकिन गिव का ठडे
मिजाज बाना मान नेन पर उपमाकी ठीक-ठीक बठान म आमानी हाती।
इसके अनावा गिवप्रमाद बाबू का गिव थ बहर म भी मेन था।

गिवप्रमाद बाबू कहते, ‘अरे नहीं आप साग कहते क्या हैं आजकन
जा हाल है उमम दिमाग ठडा रगना मुदिन हा गया है।’

फिर कहत, ‘दिमाग गम रगकर क्या पत्रिक के माय काम बनता है,
बबू बाबू?’

अकन बबू बाबू ही नहीं, मुहल्ल के कई रिटायड बड गाम के समय
मिर, गता जोर कान डेवे जा बठने। जगद्वार का उकर बन्य होती, काप्रेस
और बम्मुनिम्य को लेकर बाने हातीं। उरक व पाम करने तापक एक
धिपक, धन था उनका अतीत। वनमान जोर नविष्य मे उराग व लोग भून
व। लेकर मिर मपान। मभी के दिन म बीन त्रिना की तमवीर मिन उठती—
क्या त्रिन थे वे नी, जताय। वहाँ गया वह मान-माग्य। उम समय पनाई-
त्रिगाई की कद्र थी, भगवान और ब्राह्मण म तागा की थदा थी। अब तो
मब-कुछ पन्न गया है। उड कियो आफिम जाना है नौकरी करन। मडक पर,
रामन और पाकों म अवेनी धूमनी है। मनों कीना तम परवान ही नहीं करती।

हर राज ही ये बातें उठती। लेकिन किमी हन पर पहुँचन म पहले ही
बडीनाय आ पहुँचना।

इबाई दहाई सगडा

बनानाय आकर कहता आपन लिए पूजा की जगह हो गयी है।
बनानाय का उग समय कमर म आना ही शिवप्रसाद बाबू के लिए पूजा
की जगह होना था यह सब जान गये हैं। गुरु गुरु म जरा अजीब लगा।
मन तब एतन्म गुरु गुरु म। शिवप्रसाद बाबू ने हसत हसत कहा था यही
एक त्यागता नग छात्र पा रहा हूँ सी म

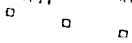
यक बाबू ने क्या बकित आप दग स्वोमना क्या कह रहे हैं ? पूजा
करना क्या इकामता है जनाय । आज भी इडिया सारी दुनिया म एतना
जाग है यह किमतिण जग बनताय । वह सब है इसी से तो दुनिया
जमा भी टिनी हुई है। चन्द्रभूष चन रहे हैं। नही तो दग्ने इडिया न कर
का कम्पुनिस-ज्वाय ज्वायन कर तिया जाना

शिवप्रसाद बाबू ठठार जोर म हसन। एतन्म तिल खोलनेवाली हमा ।
क्या क सब ना नग जानता भाई पूजा करके मन को तपि जाना
है सी म करता हूँ। वचपन की आत्न पड गयी है छाड नहा पाना
बाव चौशन सी नी थी। सभी पूछन, आप क्या वचपन म हा पूजा
करा आर है ?

शिवप्रसाद बाबू कन् ही एग वारह माल की उग्र से ही करता हूँ।
मी न करन की क्या था दमग करता हूँ। आज भी मी क आत्न क अनु
मार ना करता हूँ—यह दगिय न मरी मी ता फोटो
कहकर मी क नाम पर जाना हाप जाकर नमस्वार किया।
माने क परम म मडा मी का एक पाट्टे दीवार पर टगा था। काफी
बडा जीवन-यत्निग। पूरा दावार को डर पोड्डे भूत रहा था। सब सोत
उग आर ही एगन लग।

शिवप्रसाद बाबू कहन लग 'मी क मन की कोई भी साध पूरी नग कर
पाया दगा म आज दुग जाना है। मी मी का नालापक सटवा हूँ भाद
प्रमी मी का जावन म कानी दुग तिय है शिवप्रसाद बाबू का गला
कर भाया।

पहागा साग और नग एग। कटन नहीं-नगी आप पूजा करा
एग भागका और नहा राबे।



रान के नी बजे से साडे नी बजे तक गिवप्रमाद गुप्त का पूजा करन का समय है। उम समय कोई गात्रमाल नहीं कर सकता। केवन धनता ही नहीं, सुबह म रान होन तक मारे दिन दम घर मे जैसे सुवपूण शान्ति छावी रहती है। यहाँ मभी खुग ह। इस युग क लिए गायद अजीब बान है। अगर कही कोई गिकायन है भी, ता वह किमी के बान म नहीं जाती। हरक का मन जम खुगी मे भरा था। माकर उठन पर मभी कहन—बाह ! फिर रान को सोन जात समय भी निर्दिचन हाकर कहन—बाह ! न युग मे यह कम सम्भव हा पाया, यह इस मुन्ने के लागे के लिए एक ममम्या है। कुछ लागे माचने इसका कारण सायद पसा है। जरूरत म ज्याग पसा होन पर गायद ऐसी शान्ति का साम्राज्य सम्भव हा सकता है। तकिन पैसा क्या कनकता गहर म अकले गिवप्रमाद गुप्त क पाम ही है ? और किमी के पाम नहा है ? बकू बाबू क पाम क्या पम की कमी है ? तकिनाग बाबू का ही क्या पम का अभाव है ? अनाथ बाबू क तीना उडके गिगपान हैं—तीना ही गजे-टड जाफिसर हैं सपया चारा आर रिछा पडाह। मभी इस मुहल्ल की बडी बडा विन्डिगा क मानिक है। पनारमेंट नाग रफ्रिजरटर रडियाग्राम मभी कुछ नो बाहर से दिवलायी दन हैं। नजर म आनवाती मभी चौडा का इन योगे क यहाँ इन्जाम है। लेकिन मभी यहाँ गिवप्रमाद बाबू के घर आकर जमे थाडी दर खुती हवा का मवन कर जान। गिवप्रमाद गुप्त के माय दो बान करन पर जम मभी का उम्र बढ जाता। तकिन ऐसा क्या हाता है काई नो नहीं ममम पाता।

सुबह ऑफिस जात समय मन्ग आकर गरी हाती। गिवप्रमाद बाबू का चीजे गम्हाने के लिए नहीं। उम काम क लिए जनग आत्मी है। वह काम बद्रीनाथ का है। उमकी नौसरी इसीलिए है।

गिवप्रमाद बाबू न मन्ग की आर गवकर क्या 'पता है, बद्रीनाथ आजकन गाना मीग रहा है आटिस्ट बनगा।

बद्रीनाथ गम म जम सिपिटा गया।

क्या र कनाकार बनगा ? उम्नाद गया है ? कितना लेता है ?

मन्ग का भी जादचय हुआ। बानी, 'क्या कट रह हा ? वह और पायण, लव तो हो चुका।'

जर नहा, तुम्ह पता नहा है मुझ मैंने अपन काना सुना। ठंड स ट्टिर रहा था और गुनना है सब समीत चा रहा है। पहले ता ममम ही नहा पाया मैं नाचा क्षापद सत्तावन गा रहा है फिर लगा कि यह सुरीला गला ता बदनाय का छान जीर जिमा का हा ही नहा सक्ता।

मन्ना न क्या जन्दा छाडो इन बवार की बाता का फिर बहाग जाफिम क विण दग हो रहा है।

जर प्रवार का बान नया है उमा मपूछ ता न, कौन मा गाना गा रहा था र ? बाव न ! मुन्ना प्रन क्या रनात हा क्या ! इसके बाव क्या है र ?

मन्ना म न रहा गया। बानी दखती है तुम्ह जिमा वात का होग हा रहा है मुन्ना कुछ रचना हा नहा है।

'वाह उमक ता प्यार करा म भी कुछ नया विगडा और मर कहन मे ही क्षान्त ग गया ?

मन्ना न रहा सू ता ता बदनाय, भाग दम कमर मे।

बदनाय न भागहर जान बचायी।

सजिन गिवप्रमाण बाव हमने लग।

बाव बाका शिम ता घर नया गया प्रीवी का माट जानी होगी थीर क्या ? उम कुछ जिना की छान ता न क्या कहती हो ?'

बाव उम लम्बा ता म तुम्हारा काम कम चलगा ? उमक जिना रह पात्राग ? बदनाय क जिना ता तुम्हारा एक मिनट भी काम नहीं चलता।'

क्या उमका कामनम तनी हर पात्रागा ?

मगी क्या क्षान्त जाया है ! बन्हर मन्ना न चन्ने का जुरा भारी करन का बागिना का।

गिवप्रमाण बाव बाव सजिन पन्ना ता मरा सारा काम तुम्हा लानी था !

बद करना भी तत्र करना भी। तुम्हा क्या अब पटल-जम रह गय ?

क्या मैं बब बन्द गया ?

बन्द नहा गय ? पन्ना रचना प्रमता फिरता नहा हाता था न पन्ना बड़ा मजान था न पन्ना पगा हा था।

सजिन पन्ना क्या अपना मर्जी ग रचटा क्या है ? तुम्हा ता मानूम

ही है पैसों का लोभ मुझे कभी भी नहीं था। पत्नी, भवान, गाड़ी, रिक्रिजिंग। रेडियोग्राम मैं कुछ भी नहीं चाहता सब अपने आप आ गया। वास्तव में मैं सब तुम्हारे भाग्य में ही आया है।

मन्दा न जरा गुस्सा दिखलाया। वानी, जाजा जाजा, तुम्हें दंगी हा रही होगी।'

गिवप्रसाद बाबू हँसन लग। कुर्ता परन चुके थे। चीज-बस्तु भी सत्र ठीक हा चुकी थी। गिवप्रसाद बाबू न कमर में निकलने के पहले पूछा 'कज न गाड़ी निकाल ली क्या ?

बद्रीनाथ बाह्य ही मडकाया। कहा मैं वाला जा ही, निरान रहा है।

गाड़ी की बात सुनकर गायन मन्दा का ध्यान आया। पीछे में वानी "तुमने सदाशन के लिए गाड़ी सरादशन का कहा था।"

गिवप्रसाद बाबू धूमकर बाने, "हाँ, कहा ता था। सगसत कुछ बट रहा था क्या ?'

"उसकी गाड़ी पुराना हा गयी है न, टमा मैं बट रहा था। मुझे डर लगता है, पता नहीं क्या एक्सिडेंट कर बटे।

गिवप्रसाद बाबू— "बट रहा है ता मरीद दान। और मैं गुनाता उसकी उम्र में गाड़ी पर बट हा नहीं पाया।

"लेकिन अभी मैं अपनी गाड़ीना क्या अच्छा हागा ?"

"गाड़ी रखना क्या गौरीनी है ? दम-दुम में कलिक जान पर ना एक्सिडेंट हान के पराश चाम है। उस दिन अपने आफिस ही का एक क्लक वम के नीचे दबकर मर गया।"

अचानक टमीफान की घटी बजत में बान बीच में ही रक गयी। घना की आवाज सुनत ही बद्रीनाथ न धाकर रिमावर उठाया। गिवप्रसाद बाबू कभी भी शुद टमीफोन नहीं उठात।

मन्दा तब तक अपने कामकाज निपलानी। दिन में जितना दर के लिए गिवप्रसाद बाबू घर गहन उनना दर टमीफान। हजारा भागा के साथ मन्दा रगना पडता। यही जा ऑफिस जा रह है, गाम के मान प्राठ बजे घर लौटते। अगर कही मीटिंग हुइ ता और भी दर जाना। और मीटिंग भी क्या एक-गो हाता। इन मीटिंग में सौत-सौत हा किता किती दिन दम-

प्यार भ्रज जाने। मुन्ले के बबू बाबू अनाय पाबू बगरह बाबू कौन पा
सौत जा। इना रात का सौटन पर भी गिवप्रसाद बाबू पूजा करने
बन्ने। पूजा नियम न होनी चाहिए फिर ग्याता।

गिवप्रसाद बाबू फ्रान ख्यकर जा रहे थ।

गन्ग न पूछा 'क्या आज भी तुम्हारी कोई मीटिंग है ?

गिवप्रसाद बाबू ने कहा 'अरे नहीं बड़ी मुश्किल न टाल दिया है उन
सागान।

रिन सागान ?

जीन बौन ? वही पी० एम० पी० बाने। मुझे लेकर सीचतान कर
रह हैं। क्या रह हैं कि आप हमारी तरफ से इलेक्शन लडिये। मैं जितना ही
गन्ता हू कि भाई, मैं किसी भी दन का नहीं हू, बचपन से नि स्वाथ भावम
दग का काम करता आया हू आज भी कर रहा हू, जब तक जितना रहूगा
करेगा। हाँ तो गन्ग-भवा के त्रिण राजा हूँ तकिन तुम्हारी पार्टी वार्टी म
गान हू सकिन व लाग रिगी भी तरह मुनन को तदार नहीं होने। सिफ मुझे
रपना पार्टी म घमाटना चाहत है—या तो डॉ० प्रफुल्ल घोष की पार्टी
जमान करी हागा नन्ग तो अनुय घोष की धीच की गाडी नहीं चलेगी।

गन्ग व त्रिमाग म यन् सब नहीं घुमता। पूछा तब क्या तुम मीटिंग
म का रह हा ' तमत फिर क्या कहा ?

और गन्ग म जा बहता हूँ, यही कहा। बट दिया कि बिना माँ की आगा
क ता मैं वृद्ध भी तनी कर गन्ता। माँ म पूछूगा—दसू माँ क्या कहती हैं।

कन्तर और नहीं रह। बरामन्ग त होकर एक्कनन्नेकी और बनने लगे।
बगानाय नी बागड-पत्र की गठरी त्रिय पीछे-पीछ चल दिया। यह गठरी
गड गिवप्रसाद बाबू व भाय गागी म जाती है और फिर साय ही बापग
जाता है। बनीसाय भा साय साय जाता है और बाबू व साय ही सौतता
है। तमात्री मुभाप राग पर दो मल्ल के पन्त म गिवप्रसाद बाबू का ऑफिस
है। गड गन्गमन्ग मिटाहन्ग। गिवप्रसाद बाबू व यही बनक हूँ टाइपिस्ट
है ट्रापन्गमन्ग है। पूरा ऑफिस म बागच बरा है। बनकता जब तासाय
और पापरा म पूषा हुजा पा तत्र की बान अन्ग है। धीरे धीरे मकाना की
जितना बड़ी है। भापपी बड़े है। पार्टीगन व बाद राहर जते सोगा से अँ

गना है। उस समय में ही शिवप्रसादबाबू की बुद्धि न रग दिडलाना। तनी यह जॉफ़िम तारा। उ्हाने माच निरा था कि आगामी पाच-दस माल में कतकता ऐमा ही नहीं रहगा। जी बनेगा। जगल जोर भाडिया के पार पश्चिम म चन्दननार, चचटा जोर बैल मक पडूवेगा। दक्षिण म त्राश्वपुर और गरिया ने पर डायमड-हूबर त्र फनगा। और उत्तर में बडानगर, दमम का पीछे छाट कहा तक पाव फनाया कुड टाक नहीं है। इसके अलावा ही० बी० मा० प्राक्कट है दुगापुर है कल्याणी है। जावपुर गरिया और भरदपुर मभी उनक प्यान क अनुमा बनै हैं। शिवप्रसादबाबू अपनी दूरगिता पर मन-ही-मन प्रमन्न तान। जम यह उन्नी का कलकता है। यह प्रेटक कतकता तम उन्ही क हायों मग गया । पसा जा जा रहा है मोता आ हा रहा ह साय ही एक और तामी चीउ हाय लगी है व ह आमतपि। यह आत्मवृत्ति ही गुण-भविता आ मवस बडा प्रॉफिट है। उस 'प्रॉफिट' के वून पर ही शिवप्रसाद गुण ने हिन्दुमान पाक म वाना बनाना है।

जॉफ़िम म घुमन ही दना एक जवनवी बटा ह। वानी नहीं है। शिवप्रसाद बाबू के आन ही यह उठकर खटा हा गया। नमस्कार किना।

आन कौन हैं मैं ठीक में पडवान नहीं पा रहा ।

आन मुझे नहीं पडवान पावेंगे। मैं एक जी काम में जाया हूं जमीन की मीर-भरोन्त का काम नहीं है।

शिवप्रसादबाबू कहा 'लेकिन मग कामना जमान की खरीद-भरोन्त करना ही है।

'बह जानता हूं लेकिन मैं उस काम म नहीं आया हूं। मैं जपपुर म आ गया हूं।

जपपुर ।'

'तुं मुन्दिनाचाई न आनके नाम चिन्गी भेजी है' कहकर एक चिन्गी शिवप्रसाद बाबू के हाथ में दी।

चिन्गी तकर शिवप्रसादबाबू ने बडीनाय का बुलाया। बडीनाय बाबू था। आन ही उत्तर वान त्र उस समय आधा घंटे चिन्गी के हाथ बान नहीं कर पाऊँगा अगर कोई आन तो बटाना अत्र मन जाने देना।

इस बात वनीनाथ का बुनासूर फिर कहा, जोर ऑपरटर से वह दो
ति मुझे रिग न कर में व्यस्त हूँ।'

□ □ □

वनरनाथ भिन्न भिन्न मुहनाक जनग अलग रूप हैं। हिन्दुस्तान पाक
का आकाश जय नाना हाता है बहूमाजार की मधुगुप्त लन म उम समय
धुए का वाताच भरा होना है जबकि शिवप्रसाद बापू व गुरु व तिन इसा
मुत्तन म बर है। इसा महने की अधरी गला म मदाविनी न लख को
पाता पाता। एसा मुत्तन म मशरत प्रता हुआ। इसी मुहल्ल म अपन मकान
की बिचकी म मशरत वातवार का मडर पर तइवा को सिनेट खेलत
रगता। इसी बात जग बड होन पर मुत्तल व नडवा म मिलन का
इजाजत मिना। तिन दूर म। ज्याग म न मिलाप मे माँ नाराज हाती।
जराभी ल बटनयाडा करने ही माँ डाटता। माँ उम आग्या के मामन
रगती।

माँ कहता मत्तन व नखा व साय दतना मिलना-जुनना अच्छा बात
नहीं है।

मशरत कटना तिन माँ व लाग सराब तो नहा है।

य मव तम नग रगता हागा में कटना इ व लोग सराब हैं, उनकी

म ममी खराब हैं।

सदाब्रत मन हा मन जरा हैंमा। इगके बाद नम्बर खोजकर एक मकान के मामन जाकर दरवाजा छटखटाने लगा।

क्या मजे की बात है ! बचपन म इसी गभू क यद्दा मा आन नही देती थी। शभू के पिता किमी आफिम मे बरकी बरन थ। हाय म टिफिन का डिब्बा लिये मुबह साडे आठ बजे बस-स्टॉप की आर दौडन हुए जाते थ। तमी म पता नही क्या, मां को दन लोगा मे बडी घृणा हो गयी थी। बमे अज सदाब्रत बटा हो गया है। लागा के घर जान मे अब उमे कोई भिभव नहीं है। वह गभू के साथ गप्प लगा सकता है, बठ सकता है। किमी को पता भी नहीं लगेगा। बह अज इम मुहल्ले का रहन बाना नही है। इसी से कोई आपत्ति भी नहीं बरगा।

“बौन ?”

अदर म जनानी आवाज आयी और साथ ही किमी न दरवाजा खाल दिया। फॉक पहन छाटी-मी लडकी।

‘गभू है ?’

‘भया तो बनन गय हैं। घर नही हैं।’

‘बनव। बौन-मे बनव ? गभू का बार् बनव नी है क्या ?’

लडकी ने बहा, ‘सामन गली का माड है न, माड पर ही दवेंगे एक बतारोवाने की दूकान। उमी के पीछे भया का बनव ह।’

सदाब्रत न पहने तो माया, जान दो, अब बनव तक बौन जाय। घर पर मित्र जाना ता बुद्ध देर बठ लता। फिर कोई खाम काम नी नहा है। त्रिनात्रे खरोदने के लिए कॉलेज स्ट्रीट आया था। त्रिनात्रे ल चुवन के बाद अचानक पुरान मुन्सल की याद आयी और दधर चना जाया।

सदाब्रत लीटते-नीटन भी आग बढन गगा। एक बार हाय म बंधी घड़ी म समय दगा। काफी समय है। जानी-पहचानी बही गनी। इनन दिना म बुद्ध भी नही बदला है। लम्बी-लम्बी दुमजिना निमजिनो दमारनें। ठमा-ठम भरा जीए एक-दूगर मे मटी हुइ। मोड पर की बह डाई-बनीनिंग की दूकान अभी भी बस ही है। पहने घर म गरज नही था। पिताजी को सडक पर के एक मकान के गरज म गाडी रगकर आना पन्ना था। आफिय के

बाजू लाग चोर हैं । मॅनरी गली हाने से क्या हुआ, भाड खूब थी ।
इननी-सा गला म एक गाड़ी भा आ जाती तो मुश्किल होती—लागा का
मराना ही चौगनिया पर चढ़कर लड़े होना पड़ता ।

गना क माड पर जाकर मशरत रका । मपरल-पडी एक छोट्टी-सी दूकान
नियलायी था । दूर म ही मालूम हा जाता है मूडी-बताग की दूकान होगा ।

मशरत न दूकान क पीछे की ओर दगने की कागिंग की । वही तो
होगा चागिंग मन् का बनब । एक धार सोचा दूकानदार म पूछे । तैकिन
दूकानदार उम ममव अपन घाहका का सभ्हालन म लगा था । दूकान की
बाजू म ही एक पनली मीमर की गली चली गयी है । वहाँ स मकान क
ब्रन्टर की रोगना दाग रहा था । हा एक लाग जन्तर जा रह थ ।

मशरत मान रहा था अदर जाय या नहा । अचानक एक आत्मा का
जन्तर जान तर मशरत न पूछ लिया यहाँ काई बनब है क्या ?

आत्मा न मुडकर दना । मशरत को नगा चंहरा जम पहचाना
पगाना-ना है । उम्र म उमग कुछ ही बडा होगा ।

जान्मा त जगार म रहा ही ।

मशरत न पूछा अदर गभू है क्या ? गभूत्त ।

जन्तर म काफी गारगन की आवाज आ रहा था—हमी ब्रन् मर
एक साथ ।

उम जान्मा न मशरत का आर अच्छी तरहनेया । फिर वहा जच्छा
जरा टर्गिय दगना ह ।

मशरत बनी मन्क पर गडा रग ।

जन्तर जान हा उम जान्मा ने आवाज दा, 'गभू तुम्ह बोई बुला
रग है ।

बाग जच्छी गर म मुनायी लिया । इग वान के माय ही जन्तर ता
गाग सारगुन रक गग ।

बीन क्या रग है ?

कग अपन मुन्तन क गिवप्रमाद बाजू का पाप्य पुन ।

बीन गभू जग सब भी तनी ममम पाया ।

अर पन् तनी है अपन मुन्तन म पढ़ने जा गिवप्रमाद बाजू थ जव

इकाई, दहाई, सैकड़ा

वालीगज में मकान बनवाकर चले गये हैं।'

फिर भी जब किसी ने पूछा, 'किसका पोष्य पुत्र ? पोष्य पुत्र क्या कह रहे हो ?'

'पोष्य पुत्र को पोष्य पुत्र नहीं तो जमाई कहेंगे ? बुलाये तक जब कोई बाल-बच्चा नहीं हुआ, तो उस गाद लिया।'

'मदाप्रत, अपने मदाप्रत की बात कर रहे हो ? वह आया है ? कहाँ है ?'

'बाहर खड़ा है। तुम्हें बुला रहा है।'

'शुभ न गिरते पड़ते गली के बाहर आते ही उसे बाहरी मजकूर लिया।'

अरे, तु ! मदाप्रत, बात क्या है ? अचानक इम मुहल्ल म ? तेरी गाड़ी कहाँ है ? पदल ही आया है ?'

उस अंधेरा गली में खड़े मदाप्रत को लगा जम वह पत्थर हो। जमे वह होग म नहीं था। भर चुका था। एकदम फामिल। मधुगुप्त लेन के बलकत्ता की मिट्टी के नीचे दबकर फॉसिल हो गया हो। पुष्प-पुष्प की घुटन-भर अधकार म जम उमकी आगिरी समाधि हा। वह नहीं है। वह खत्म हा चुका है। दुनिया से जैसे उमका अस्तित्व ही मिट चुका है।

'क्या र पहचाना नहीं ? मैं ही तो हूँ शूभ ! पदल क्या आया है ? तारी गाड़ी कहाँ गया ?'

मदाप्रत कोई भी उत्तर नहीं दे पा रहा था।—वह उम घर का बाई नहीं है उमके माता पिता, जिन्हें वह अपना समझना आया है उमके बाई नहीं हैं इतने दिन उमने नक्ली जिन्दगी बितायी है। इतने दिन की पुराना मंत्र बानें एक-एक कर याद आने लगी। वह अज तज समझ भी नहीं पाया। उममें छिपाया गया। मज बात वह देने से क्या उमका यह नुकसान हाता ! वगे लाम भी क्या होता ! लेकिन किमी न बतलाया क्या नहीं ?

'क्या रे तेरी तबीयत ठीक नहीं है क्या ? फिर दूर कर रहा है ?'

मदाप्रत के मुँह म जम इतनी दूर बाद शब्द फूट। बोना आज चलू भाई, फिर किमी दिन आऊँगा। आज अच्छा नहीं लग रहा।'

'इतनी दूर आकर एमें ही वापस चला जायगा ! आ न, अज कब म आकर जराँ देर बठ, एज क्या चाय पीकर चल जाना, और नहीं तो मदाप्रत न कहा, 'नहीं, आज चलूँगा। फिर किमी दिन आऊँगा।'

'तो फिर क्या थापणा ?'

'अभास नहीं बर मरणा समय मिलत हा त्व त्तिन चला जाऊगा ।

कच्छर मरणागत वहाँ जोर नया रया । स्व ही नहीं पाया विद्या
न उग बननाया क्या नहीं ? उग बलना दार म विभी का क्या विगहता ?
निमीन उग पर विद्याम क्या नहा विद्या ? यह क्या विश्वाग करने लायक
ही नया है । मरणागत मधुगुण तन की सखरी गली से जल्दी-जल्दी चलन
लगा । यथा त्व यही स्वतन पर जमे उग काई पहचान लेगा । होपन
होपने मरणागत माध धम-स्टाय पर आरि रवा ।

□ □ □

क्यू बायू न क्या क्या बात है जनाम ? आजकल तां आपका पना हा
नहीं राना धये म गापन बुरी तरफे केमे है ।

विद्यप्रमाण बायू न क्या धध की ज्ञान द्वाष्टिय अब ता धधे का
मधन का गार रवा ।

क्या ?

अब यदा व त्तिन गृह है । अर तो गवनमट नही जमान का धधा गुरू
कर दिया है । मिन तो उग त्तिन ज्ञ० राय को कह दिया कि क्या सत्र बुद्ध
हा नगननागठ कर टालियगा ? बग दाम इनविट्टिमिती गभी तो ल रह
है अर अगत्र जमान जमान का काम भा न करेगे तो त्तिन राय वहाँ जायें ?
इम मग क्या गाकर दिना र ?

तो डॉ० राय न क्या क्या ।

गुनकर इमन सप । डॉ० राय मर पुराने दोमन हैं ।

आप बायू न चौककर कहा डॉ० राय आपने पुराने दोमन हैं
क्या

बार भावना नहा मानूम । आज मन ही चौक विनिमटर हा गये हैं
इम सोगा न ता एक गाथ एक ममा म सखर दिये हैं । कलरता म त्तिन
दिना रायतम हूण ध नव मिन और दयामाप्रमाण बायू न हीमा त्तिन राय पूम
पुनकर मारा काम विद्या । उम समय मधुगुण तन के मजान म राना पा ।
मने पर त्तिन म रा ता बार भौतिक हीना । कायमवान उग समय ममक
ही नहीं पा रन थ कि क्या करें ।

य सब सिर्फ बानें ही नहीं था। य बानें कुछ ही लाग जान पान थ। रिमी किसी दिन अचानक टेलीफोन आ जाता। गिबप्रमाद बाबू रिमीवर उठान। कुछ दर बान करत। फिर भुम्माकर टेलीफोन छाडत। कहते—
'लगता है य लोग मेरी जान लेकर छाडेंगे।

ममी पूछत, 'बया, बया हुआ ? किन्नन टेलीफोन किया था ?'

'और कौन करगा ? वही आप लाग का मपर।'

मपर का नाम सुनकर ममी को जरा आश्चय होता। मारा बलवत्ता जैम गिबप्रमाद बाबू की राय तन क लिए चालापित रहता है। गिबप्रमाद बाबू की राय सिध बिना जस मिनिस्ट्री टूट जायगी मारा बलवत्ता तहस नहस हा जायगा। काई फोन ऐन समय पर जाता कि ममी मुद्रिकल में पड जान।

मन्डा पूछती, "अब फिर से कहीं जा रह हा ?"

गिबप्रमाद बाबू कहते, 'हो आऊँ अचानक बुलाया है। नहीं जाने से माराव लगगा। मोचेंगे मैं किसी की परवाह ही नहा करता।'

इसक बाद बट्टीनाथ का बुलाकर कहत बट्टी, कुछ न गाडा तिकालन का कह।"

बहुन अरन पहल जय मन्डा बट्टी बनकर इस घर म आयी थी, मुन् बट्टी रने धुपचाप गहमयी का मारा काम करती। गिबप्रमाद बाबू के के कहीं मन्मत क तिन थ। एक बार ता लगानार तान तिन तक भवे आदमी का पना ही नहीं लगा। घर पर मपर तन नहीं पाय। मुबह म्मा-पीकर पर न तिकन गाम का लोट आने का बान थी। बह दिन गुजरा, दूसरा तिन भी तिकला। उमक बाद का तिन भी तिकल गया। फिर भी काई मपर नहीं, पना नहीं उम समय घर मे इनने नोकर चाकर भी नहीं थ। कही काई गतिडेंट ही ता नहीं हा गया ? घर म काई मबर तनवाना तन नहा था। पूछें भी ता किमन ? पनित्व कहीं जान किसी तिन मन्डा का नहा बनलाया। मन्डा क लिए क दिन बहे अकन-अकन गुजरे। उन दिना गाता भी नहीं था। मधुगुप्त तन के मजान की गिटकी के पीद से मन्दा गीत तिन तक गटक की ओर देती सही रही। फिर भी पना नहीं। हिन्दू मुस्लिम दग क समय घर के अदर अन्ना सही डर म कापती रही। भल

आत्मा के लिए हुए समय हर बना रहता। भन्ना ने जितनी ही बार कहा भी— आज ही न जाओ तो क्या आफन आनी है। इस मार-नाट और मन-गराबी के समय तुम्हारे न जाने स क्या हा जायगा।

बगल में नी निकल गये। दग अकाल में हो या रात, छाटी छाटी बाल के लिए श्वाक के सामने धरना देना। उस समय भन्ना तो मगना— मैं जाऊँ तो जैसे बटगा हा नहीं रात बीतगी नहा। तबिन दुख बन्ना हा या सुख के व गुजरत ही हैं। निवप्रमाण बाबू के भी वे सारे में गुजर गये। न जान कहीं कहीं माटिंग करत फिरत, मारे में, मारी रात की महान के बाए शामद मुबट के समय घर लौटत। इसके बाद जरा र विभ्राम किया नहीं कि कोई और बुनान आ जाता उमा समय थोडा बहुत पर म हावकर फिर निकल पएन। भन्ना कहती न मत्र भमला। न अगर तुम अपन का जसग हा रगा।

निवप्रमाण बाबू भन्ना 'तबिन मरे अनग रहने म कामकम चयगा?' मभी अगर घर म गौरव नगापर बठ रह तो इतने मोगा का क्या हाल हागा?

भन्ना कहता उर रगा के लिए तो मरजार है पुनिम है, वही दगगा।

निवप्रमाण बाबू नाज हा जान। बूत 'जा बान ममभना मही हा उर पर बहन मने किया करा औरला की बुद्धि म चयन पर दग का काम हा किया।

रगा तरत में गुबरत रह। रगत धाए ही गाय मव गटबड राम हा रगी। तनी म निवप्रमाण बाबू को जैसे थोना आराम मिरा।

सचिन तब नी बठगगा मे भांग्य जमनी। बार बार चाय जाती पात आत। सिनी हा बार बान लगापर मारी बाले मुनी हैं। बुद्ध नी ममम म न। माया। पाटीबाडा दल म पूर। जार की बहन चल रही थी। इगा बीच एक बार अरर धारर पूजा कर गये। फिर वहा। राम बाबू निवप्रमाण हाग न दगाम बाबू। बीन मयर हागा बीन डिगी मयर हागा रगी पैगन के लिए उन लागी की ना हराम थी।

उम समय कनी-कही मरी पूर है। आज जगजगदुही मव सा दुमरे ही

दिन बरासात म मीटिंग होती। वहा म तौनत ही फिर आमनमान। मन्दा को कभी-कभी डर भी लगता। इस तरह घर का अंदेरा छाड़ मस्जिद म दीया जलात वहा खुद का घना न टाप हा जाय।

मन्दा पूछती, 'इधर तुम कई दिना मे जाँफिन नहीं जा रह हो, तुम्हारा आफिन कौन देख रहा है ?'

गिवप्रसाद बाबू मवान मजबूत इन, विज्जनमपहन कि देग पहने।

देग देवनवाल ता मितन ही हैं। तुम्हार न दवन म कुछ जानवाना नहा है।'

गिवप्रसाद बाबू कहते, 'मैं क्या जानकर दगना हूँ ? अगर नहा दगना हो ता गायद बच जाऊँ। लेकिन पता है इन देग के लिए कितन लागान प्राण लिये हैं ! हजारा गंगा का कद टूट जोर जेल में टी० वी० के गिका हो गय। खुदीराम और गायीराम माहा का फाँसी टूट, यनानदाम जनगन करके मरे—अगर जान हम लोग न दखें ता उन लोग का प्राण देना बनाव ही गय। आँगा क मामन इधर उधर के जाँमी लूट-पाट कर मजे उठाये, यह ता और देना नहीं जाना, इसी मे तो मन्ता हूँ। नहीं ता मरा क्या है ? अपना विज्जेस करता रूँ और आराम से ना-पीन पना रहें।

मन्दा य माग बाने मुनती लेकिन उसमे विरोध करन का माहम नहीं था। और उसने विराय करन पर गिवप्रसाद बाबू मुननवाने जाँमी नहीं है। गिवप्रसाद बाबू हमना म अपना मर्जी क मुनाबिक चन है आज भी चन रह है। आज भा कितनी कितनी तिन कर्ता चन जाते हैं कुद्र पता नना चनता। कान का समय ही कही मितना है ?

बाहर के कमरे से अचानक पति का अन्तर आन दख मना अवाक रह गयो।

मन्दा ने पूछा क्या हुआ ?

गिवप्रसाद बाबू— बगीचाय कहीं गया ?

'वह ता तुम्हारा पूजा का इन्तजाम कर रहा है।

गिवप्रसाद बाबू जीना चन्त-चन्त वान कुत्र म गाड़ी निकानन क लिए कहमाना है।

क्या कननी रात्र में क्या फिर वहा बाहर जाना है ?

कुञ्ज न एकमी नटर दवाकर डकित चात कर दिया। इमन वा मव चुप। कुञ्ज चुपचाप हा गाड़ी चताना है। शस्वर का बकार बोलना गिवप्रमा बाबू का पनन्द नहीं है। कानवागिन स्वदापर के मामन पहुँचन में गिवप्रमाद बाबू नीचे बठ पर। बान कुञ्ज एक टक्की ना रात।

मन्ड के किनार पर गाड़ी नाकर कञ्ज बाहर निकला। 'दक्की चाटिंग बहन ही ना टक्की मिनती नो। उग देर लगती है। इन्तजार काना पटना है।

गिवप्रमाद बाबू की गाड़ बाई इन्दी राम था। टक्की क जान हो भट म बठ मव। फिर कुञ्ज की आर पूनवर बौर पग मरना में जमी जाया।"

कानवागिन स्वदापर क कान पर गाड़ी नाकर कञ्ज चुपचाप बठा गया। गन के नी बत हूध।

□ □ □

वाम्भव म टक्की गुआन १९५३ क पत्र ३ हा हुयी। वनकता म क ना ममम गये एक और नया युग आनशाता है। विग हिनी के विग में हा जागता आती हा ह। उकिन आजाता किमहा ? गरीया का दा बने सातो की ? बाउर म एक बान ममम म नहीं बापो बह मममी ना नहीं ना मरती। अब बाउर जना है ना मव-मव दूब तान पर भी जागित में बने उमर बानु छात्र जाया ह भी बने उबर बछार। क्या बकर हाता है ता हुनगा ना मान का मनी गता है। कुञ्ज यह पत्र नहीं माचना। गार शिमग म य धाने आना ना मना। मला भी नया माचना। बानाव नो मन मव बाना म निर नही गपाना। अनाप बाइ बरू बाइ अरिनाग बाबू कोइ ना म म नगे माचना। मव-मव अपना गेगन क शिवाइ का मेहर म मून म न है। धनी न क म मपुआन मन बवव क म म म मनी मावत उवा निर एर आमान। मना क्यों मूआ म मना का हाना नहीं गहिग था।

गना म न पत्र-पान उगा म मुना था। उग ममम मपुआन की उम क म यो। मधुपुत्र मन बान ममान म राउ गाम का पगान जान थ। गार शि स्वक म रहन क बा म गाय का क्या निकलन द। मनाया थी।

"आमिर कुछ कहगा नी, क्या हुआ ? याया क्या नहीं ?

नरा तुम यहाँ न जाया । मुझे कुछ नहीं हुआ है ।

मरा फिर भी कुछ नहीं ममम पायी । पूछा, 'तब बनला क्या बात है ?'

मदाब्रत न कहा तुमम वटना बकार है तुम नहीं ममभागी ।

लेकिन बल भी याया नहीं आन नी नहीं या रहा तुम्हे हुआ क्या है ?"

तुम साथ ही क्या मुझे अब-कुद बतलान हा ।

'तुम मरा बाँ नही बतलान ? नू कह क्या र्हा है ?'

'माँ मैं मुम्हार पाँवा पठता हूँ तुम यहाँ न जाया । मुझे जग पर अवन रहन दा ।'

उमके बाँ मरा न जीर कुछ नहीं कहा । उठवा बढा हो गया है उनरा इच्छा अपना इच्छा हा मक्ता है । मराब्रत भी उम जिन क मरा न जान क्या हा गया । अपन पिछन जीवन का एर-एक घटना याँ करन चाँ । उमन कब क्या चाँन क्या मित्त जीर क्या नहीं मित्त । उमन बार म मित्तान ना ता नहीं माचा । उमक मन-बुर का नकर किमन मिर नपाया है ? पित्तारा । उह बर पर म किननी दर के लिए दपता है । वह ताँ जिन रिज्जत जीर अपन दूतर कामा म लग ग्त हैं । और माँ । उह घर-गृहम्हीं म हो पुरमत नहा है ।

मास्टर माहब के मवान क पाम पहुचन ही दता गली क अन्तर बन्त-गा गाठियाँ गत हूँ हैं । एक उमक पित्तारी की भी है । गाठी के अन्तर कज चुपचाप बढा था । मराब्रत लौट पढा घूमकर दूतर राम्न मे गयी क अन्तर आया । इत आर नीर नहीं थी । मास्टर माहब क मवान क मामन पट्टेवरर मदाब्रत न दरवाजा गतमटाया ।

मास्टर मास्टर ।'

कीन ?'

बकार बाँ न अन्तर म ही क्या दरवाजा खुला ही है अन्तर आ जाओ ।'

मराब्रत को दरवार केतर बाँ बढे गत हाए । 'अरे तम आय हो ।

इनाई दहाई सक्डा

अभी जरा पन्न तुम्हारे बार म ही सांच रग था ।
मर बार म ही गाव रहे थ ?

बनारबाबू न क्या ही सांच रहा था पहल तो राज ही तुम्हार पर
जाता था उम गमय तम्हार पिताजी की हालत खतनी अच्छी नहीं थी,
लखिन दगा अब ता तुम लागा की हाजत काफी अच्छी हा गया है—गे
गयी है न ?

गंगाब्रत एतन्म ग एम बान का जवाब नही न पाया । बवल बोला
जा हुई ता है ।

लखिन नेगो तुम लागा कीतर मिफ तो चार लागा की हाजत
अच्छा हुई है दग की हाजत ता अच्छी नहा हुई देश क आम लागा की
हाजत ता बाय पन्न म भी गराय गे गया है । बान मच है न ?

बनारबाबू जवानक य मय क्या पूछ रहे हैं गंगाब्रत कुछ भा नही
समझ पाया । एष छुटे-मनपन पर विद्यी दरी मला चिट्टा एव तरिया
उगा दगा म ऊपर अघट जान तस विन रह थ । सारे बमर म ग
जमा थी घारा जा विनावे वागिरी-बागत्र विगर पढ थ ।

मय है ति नगी राता ?
गंगाब्रत न कहा मच है ।

मै ना यी गाव रहा था । ममय न मवान ता ठीक ही उगाया ।
ममय कोन ?

मग एन विद्यार्थी । मै उन हिस्सा पढ़ता हू । एगिपेंट हिन्द्री ।
पढ़ात पढ़ात आत्र ए मममय न माडा हिन्द्री का मट सवाल पूछ लिया ।

मै न भी गावरा एता ममय न का मलत बान ता नग कही । य बान
ता मै न पहल कना रग माभी था । ताी तुम तागा का ध्यान आया ।
मय वान काता ए गावता रग । गाता गीता जवाब मिल हा गया ।

कना रग बनारबाबू उात्रित हा उठ । बान समभ सगान्त
त्रबाव निन हा गया । रगा का विनाव म एता गाप-गाप लिगा है—
भाय्या दगा गा रवकन दुभा है लखिन हज जगह उगके परों म बडिया
पहा है । मै ममय म क्या ति ए का का इम मिलो त ही आम जाभी
की की हा कयगा एगी काई बान नग है ।

सदाशत बदार बाबू की बात जग भी नहीं समझ पाया।

तुम कुछ समझ पा रहा या नहीं ?

सदाशत न कहा ' मैं आपस एक और बात पूछना चाया था ।'

लकिन तुम पहले मेरी बात का उत्तर दो, अपन पिताजी की ही मिसाल ले ता। अब तो तुम लोग काफी बड़े जादमी हो गय हो, तुम्हारे पिताजी के मन म कोई दुख नहीं है ? बार्द कष्ट ? बार्द यात्रा ?

सदाशत न कहा, 'बह ता मुझे नहीं मालूम।

'लकिन 'मानूम नहीं कह दन म ता काम नहीं चलण। तुम्हारा काम चलन पर भी मरा ता नया चलण। मुझे लडका का पढाना होता है मुझे तो उत्तर दना ही होगा—दोनोंलिए मैं तभी न माव रग था यह मवाल सदाशत स पूछना हागा। मननव—रग का प्रीम मितन म आदमी का फीडम मितनी है या नहीं ? अरअगर मितनी है ता अपन इशिया म जिमे मिली है ? कितना का मिली है ' अनावृथ छटकारा पाना भा ता एर तरह की फीडम ही है—ठीक है न ?

सदाशत न बाबू म ही क्ण इस विषय पर फिर किसी दिन बात करेगा ।'

'मुझे बतलाना मत हो, इस समय तुम्हारे पिताजी का इन्कम कितनी है तुम्हारे पिताजी ता जमीन का मरीज फरायन का काम दवन है इडियहेम के बाद उनक बिजनेस म एवाएर एनो उन्नति बन हा गयी ' सायन क भागों के साथ मचजाव है इमीनिण न

'नहीं, पिताजी तो किसी पार्टी क मम्बर नहीं है। पिताजा न बिजनेस न पसा कमाया है।'

'लेकिन उनकी इन्कम कितनी है ?

सदाशत—' मुझे माफ कीजिये मास्टर माह्य, मुझे कुछ भी मालूम नया है। मर माना पिता मुझे कुछ भी नहीं बतलान—मैं उा घर का काम भी नहा हूँ अमल म मैं उन लोता ग लडका नहीं हूँ—यही बात बनवान मैं आरव पाम आया था।'

बदार बाबू अचम्भे म पढ एप। सोन, ' लडन नहीं हा, मान ?

'बर्द दिना स अच्छी तरह माना पा रहा या नहीं पाना—ममम

इराई, दहाई सबका

मना आता बिगन पाम जाऊ बिगन पाम जाऊर अपनी बात कहूँ—
टीन नहा कर पा रहा था दगा आपन पास चला आया। अब चल्
गायन आपन गाय मरी यह मुनामान अलिम मुलाकात हो।
अर मुना-मुना ! जा बटी रह हो ?

रविन सगावन तब तक सडक पर पहुँच चुका था। इतनी जगहा के
रहन वह माण्डर गाव्य क पाम ही क्या आया ? अपने म माये इम भोला
नाय स जपती शाने पकर वह कीत मी सहानुभूति चाहता था ? जो
जायमा गण अपना भला-बुरा नया समझना, उस पर दूगरे की भलाई
बराई का बान बालकर क्या सगावनत बच पायेगा ? चलते चलते जस
गगावनत क मिर का बोझ भी बढ़ गया। आम-गास म बिनने लोग चन
र है। गरीर अमीर—गाटी रिक्का ट्राम। सगावन को लगा जमे
वा अक्का है उगगा अपना कार नहा है। गहम्यो की छोटा माटी बातें
जम उगगी आया क गामन जावर बौघन लगा। उमर कमरे म विस्तर
की चान्द ममय पर क्या नया बन्ना जानी गात ममय उमग क्या नहा
पूदा जाता रि उ ओर बुद्ध चाहिए या नही। गव बिनकुन छोटी छोटी
बातें जिनका उन पार कभी गाता भी नया था। रविन आज बही
बातें ज बडी गान पाने लगा। काम माकग किमी पर भी विश्वास नहा
करता था—उगका बायाघापी म विना है। अनजिनावाग मव कुधसमभ
म घागा है। हाताकि मा-बार पर भगामा कर उमन जितनी ही बार हू
रिदा है अपना अधिकार मारान का वागिग की। वही भूग विदवास
अम मात्र सगावन क जावन पर बोझा डतकर नया था। रामरुण परमहग
अ गन् नी र किगा पर विनाम नहा करता थ। कम सगावनत हरव
म क्या अपना मुना आया है कि अविवाग करते फायदा करन से भरोग
ग टाना उगाज जगा है।

कान बाबू फिर म अपन ध्यान म मगागून होने जा रह थे कि अघानत
गाद का रराडा गता।

कीत आया था ?

कार भी नगी गू जा दग ममय अभी गाना गही गाऊंगा।

गाता गान नहा चना नहा मी अकर मव-बुद्ध गुन विदा ह। सम

एक बात जल्दा दगकर तो आआ तुम्हारे पिताजी घर में हैं या नहीं ?
उग समय सप्ताह द्याग था । घर में अन्तर दग आन के बाद बोला
नहा पिताजी ता नहा हैं ।

बगार बार न बहा था किस समय घर पर रहत है समझ म नहा
जाता बनी मुनिल हुई । कब आन पर मिन गवगे ?
पिर कुछ गाचकर कहा गुव व समय ।

तय सुरह ही आऊगा ।

बगार मास्टर माहुर बन गय । दूसर लिन सुरह होत ही जा पडूवे
पिताजा उग समय बठवगान म बठ थ । गिवप्रमा बार् मास्टर माहुर क
परपान हा नहा काय । तलिन इगस वाई पक नही हुआ ।
जाय कीन हैं ?

मैं गारा का मास्टर ह आपने नहन सप्ताह का मास्टर बगार
नाय राय । आपन कुछ कहना था ।
क्या कहना चाहत हा बन्धिय । रपय बड़ान हाग ?

गिवप्रमा बार् काम क आमा हैं याना क नहा । पूरी बात सुने बिना
ही बात रगिय मैं क्या गाधारण आत्मी ह छापी का पमीना एठा तर
बगार पमा पमा करता ह । मैं अपना मामध्य के अनुमान आपनो द रण
ह । वग आपनो विनता मिनता है ।
पचाग ।

पचाग रपय म एग पमा ही ज्योग दन की ताबत मरी नहा है ।
अगर हाता ता मैं उर दना । आग गाय माचन हागे—मैं विउनम करगा
। उमान मरीन बचन का दनावा करगा ह तलिन वाताय म विउनम
का आर रगन का समय हा नहा मिनता । बल ही रगिय न ऑफिस म गा
रनापुर बन जागा पमा ।

मन्नीपुर ? क्या ? मन्नीपुर म गाय आजकन कुछ जमीन का
नाम
नही रहा बाड़ का बजत म । बाड़ म कौ सत-मुद बग गरा है ।

तकिन वह सब छात्रिय इसन क्याना दना मरी मामय्य क बाहर है।
क्यार बाबू न कहा 'मैं कहा बान कहन ता जाया या आप मनी तन
ध्याह कुछ बन कर दीत्रिय।

कम !' गिवप्रसाद बाबू जम चौक पडे। अच्छी तरह न क्यार बाबू
का दना। माचारण कपडे। गाऊ घन बान। परा म पुरानी चपल। और
पर माटा चामा। डवल एम०ए हैं मुनकर नहक का प्यान क लिए रग
निया। मने आत्मा का निमाग ता धराव नही हा गया।

कम कर दीत्रिय। मनलव ?
क्यार बाबू न कहा 'आजकल बाजार की जा हासन है उअगत हुए
पचाग मय्य नना मरी क्याना है—आप कुछ मय्य कम कर दीत्रिय।
चारा जाग बाहकगरह आ रहा है। इन हासन म कितना हो क लिए महम्या
चनाना मुकिन हो रहा हागा अजसन ला बही तननाऊ म हैं।
गिवप्रसाद बाबू और उमुक हा उठ। बान आप बठिन न मडे कों
ह ?

एना अजीव जान्नी गिवप्रसाद बाबू न अपनी तारी जिन्ना म नहा
रना। यह क्या इन गताली का आत्मी है ? तकिन क्यार बाबू उठे नहा।
बान, इन समय म पाउ बठन का समय नही है म जग जोर प्यान
ताना है ताना हो नहक बी०ए० म पट रह है।

टपूगन करन क अलावा आप और क्या बान है।
क्यार बाबू न क्या समय ही नहा मितना औ क्या कयगा। मर
पाउ क्या एक हा टपूगन है—दिन भर म छ तडका का पयना ?।
तब ता आप काफो मय्या कमान हागे।
मा ता कमाना ही ह।
कुन मितार कितन मय्य हात है।
आप त्व हैं पचान और तीन लाग ताउनीम मय्य त्व के मनी म

मुजाग हा जाता है।
गिवप्रसाद बाबू न जिनाब जगावर कहा य ता कवन एमनी चानाम
मय्य हुए और म जन ?
'उन मोगा की बात छाड दीत्रिय क शाना कुछ भी नरी म गन।

तब आपकी गुजर बस जाती है ?'

बनो ता बान बट रहा था बडा मुश्किल से गुजर होती है—हिस्ट्री में कई कई एसा समय आता है जब इसा तरह मुश्किल से गुजारा करना होता है इन्डिया में एसा तरह की सिचुएशन एक बार १७७० में आयी थी। एसा समय ता फिर भी गान गाये गये है। १८६६ में अफगान के समय य भी नहा था जहाँ जय में चनु कई काम हैं।

कन्जर केजर बाबू जा तो रहे थे कि निक्कामान् बाबू न राहा। पूछा, आप एसा नीकरी करेंगे ?

बात सुनकर कन्जर बाबू जीवन-मे गढे रहे।

मर जाकिस में नीकरी करेंगे ? मैं आपको दासो रूप मानना दूगा।

कन्जर बाबू एतन्म में कुछ भी गही कह पाय। कुछ देर ठहरकर बोले 'तस्मिन् मर पाय समय कहो है।' मैं छू छू टूटगन बाना हूँ, नीकरी कर सकूंगा ?

'टूटगन छोट गत्रिय टूटगन करत जा भिगता है उसमें बगाना पायेगे आप तू आनन्द आत्मा की ही मुझ उदरत है।

तस्मिन् कन्जर का क्या हुआ ?

उने आगा का और कई मन्टरे भिन्त जायेगा।

कन्जर बाबू एसा पड बाव तब ता हा निया। मन् गभा स्टूडेंट अन्ध हैं। मराब मन्टर के हाथ पडन ही उनका करियर चौपट हो जायगा—गरी ता धागा ता है। एसा अनायास तब ता आप जानत हा है कि दान की एतन्त किन्तनी गमब है। किन्तनी ही के पाय बिनायें मरीदन को भी पगा ता है।

टटा धाता त्रिए भागले भीगने जाकर पटा जाते । पटने के मिवाय मन्त्राज
जन कुछ जानना ही नहीं था । जान इतन त्रिना बाद जम अचानक दुनिया
के साथ पहली मुनाकान हुई । पहली दास्ती । उम पहला निकटगा म ही
एक जार का धक्का लगा ।

सुम्ह हात ही मा कमर में जायी । मन्त्राजत न मिर उठाकर एक बार
दना, फिर मुह फेर लिया ।

ही र खाका, कल किस समय जाया ?

सदाजत अचानक कोई जवाब नहीं द पाया ।

‘क्या रे, तुम्हे हुआ क्या है ? कन गाणी भी नहीं ल गया ! बान क्या
ह ? वह कट रहे थ कि तेरा गाडी पुरानी हा गयी है एक नयी गाडा
मराना हागी । गाडा क त्रिए गुम्ना हा ता गाडी चाहत ही ता नहीं
मिन जाना ! आजकन एक माल पहन स नाम रजिस्ट्रा कराकर रनना
हाता है ।

फिर भी सदाजत न कुछ नहीं कहा ।

‘तभा एकाएक शिवप्रसाद बाबु कमर म आव ।

‘अर क्या हुआ ? कन रात इतना दर तक कहीं थे ? यार-गान्ना
क चक्कर म पह गय हा क्या ?

मन्त्राजत कना भी पिता के कामन महज हाकर बान नहीं क पाता
था । त्रिनाजी के साथ उनका सम्पक थी कितना है ! शिभ भर म उनक साथ
मुनाकान ही कितना दर के त्रिए हाती है ! बचपन में ही उान घर म अन्ते
किताजा के बीच त्रिन काट है दामन नहा, भाई-बहन नहीं । मुन्कर क मन्त्र
थ सकिन उनम बानना मना था ।

शिवप्रसाद बाबू का क्या उत्तर न, वह ठीक नहीं क पाया ।

‘आज मर साथ आश्रित चरना । जय तुम्ह जभी म मन्त्र-कुट उनन
रना चाण्ण ।

मन्त्राजिना का भी मुनकर जग आचन हुआ । बोना तुम क्या उन
भी आपिम म बगथा ।

शिवप्रसाद बाबू — तुम चुप रहा हर बान म करो बोलना ही ! वह
अश्रित में बढेगा या पडाद त्रिगा करण क में ठीक कर्ना । मैं जाकुछ

बाद म एकदम ने जमीन का भाव बढेगा, बर्न बटा ?'

गिवप्रसाद बाबू न काफ़ी डाँट लगायी। छान्ना-मा ऑफिस। अदर गान बग्गन पर मारे आफिम म मुनायो दना है। ममी चुपचाप मुनने रह। नि मन्त्र ऑफिम म टाइपरान्तर की गट-गट जन बाना का बढी म्बराव नानी।

नदी बाबू न टाइपिस्ट की ओर द्शारा कर कहा 'ए मिस्टर इतनी गट-गट क्या कर रह हो ? मुनने नहीं, अदर किनना चिन्त-या मर्ची है।'

'चिन्त-या हा ग्हो है तो मैं क्या करूँ ?'

आफ, जग धीर पीर काम करिय न मुनायी नहीं दे रहा।'

७ ८ ९

बउ मुनने तायर बुद्ध है भी नहीं। एरदम व्यापारिक बानें। कनकता उ पचान-माठ-मत्तर मील के बीच की नारी बकार जमीन मन्ने भाव पर नगान्कर यहाँ जगान दाम पर बचा जाती है। न मी म्बय बीधेक हिमाव न नगान्कर यहाँ तो हजारा का दाम दिया जाना है। गान न न पर एक दिन तो कनकता बढा होगा। और भी उडा जागा। १९६७ क पार्टीगन क भाग कनकता म्बना बढ जावगा, यह क्या बाद माव पाया था ? कोई भी ग्ना माव पाया। माव पाव थे मिक गिवप्रसाद बाबू।

गिवप्रसाद बाबू की टमी फ़म न जाना बाने जमीन मरीन्कर, पाकर पाकर गढक बनार जगन का गन्ग म बग्गन दिया है। उन मय जगनों का भाव आज एक हठार हेर हजारा म्बया बग्गठा है। यकी म्बयकिटक दुन म बड़कर आजगन कनकता के आफिम। क बाबू गान केला पगजरी करन हैं। नरिन उनम मे कार्ई नहा जानना, यकी कनकता म जमी किननी हो ग्हा-बग्गन हागी। गान जिन म्बय टनग्पाडा बानी हायमन् हारिग म पान बवान बमान कनकता बाने हैं जय हाइवेव आग्जनहार और बचिन का नकर बग्गन करन हैं जव नग्ग विधातराय गाश्रा को नेकर मापापबर्ची करन हैं उम ममन भी निमाग म नही धाती कि उनकी परनी धाी हुई जा ग्ना है और गग्ग म जागान बढ ग्नी है। गाव न गान पान कि मही कनकता किमी दिन गुांपुत्र तक जा पग्गेवगा। मपुग्गुन

सा का बलाग की दूरान व पीछे जिम समय उहवाखार म ससृति कद्र व गभू आदि राम क लिए नया नाटक चुनन व लिए मीटिंग करते हैं व भा नया जान पावेंगे। बकू गानू, अविनाग गानू अगिल बाबू—हिन्दीमान पात्र व पेंगन गान्डम का भी पता नया चवगा कि अंदर ही अन्दर क्या पढ्यत्र चन रहा है क्या मलाह हो रहा है क्या जालमाजी हां रना है। पछपुपुर उन व कपार बाबू भी नही जान पाा कि ऐंगियेंट हिस्टी क पेजा म कब नाथूराम गान्म न महाराज अगाक का गून विधा और कय भगवान बुद्ध का हया करता है माजा-न्म-नुग। रातारात कलकत्ता बल जाता है दुनिया बल जाता है। मन्गप्रत भी बल जाता है।

गिबप्रसाद बाबू उन मारी दनिया का विन्ना म पढ जान हैं तय अचा नन पाा कि रातारात उनका गुरू का नवगा भी बदल गया है। मन्गप्रत बला हा गया है।

मन्गप्रत मय गुन रहा था। गुन रहा था जोर देस रहा था। बचपन म ही बाबा व काराबार की बानें गुन गया है। आंगा म जाज हा दया। आंगा म आनन और हाय म कयम लिय लाइन-वा लाइन कवक बठ हैं और यं उनका भाया मालिन है। उग भा क्या यहा एक दिन इन नागा का भाव्य विधाना बनकर बलना हागा ! एमा आफिम व अन्तर जमीन क नाय म कमा-वगा हानवान बरामीन्ग की जार तजर रग सारी जिन्ग। गुद्गाना हागा ! साग और प्राकि ? पाउड गिलाग पस की लजर सुर !

बना !

असनात जग मन्गप्रत का जिगारभारा टूट गयी। गिबप्रसाद बाबू लडे हा गये थे।

लिग एड मारि नार्डि। मारि विगणन। अभी म यह मय दान का म तुमगे गग क रना। यह भा नया कह रना कि तुमको अभी म यती बलना हागा। अरिग तुम जानकारा रगना जलना है। अपने लिए तुम कीन-ना प्राणान चनाग, मय तुम्हा का डोक बरना हागा। मी तुम्हार ऊपर बुद्ध लोपाग नगी बरना पाहना।

मन्गप्रत पुरवार मय-बुद्ध गुनता रहा।

'इतन दिन तक मैं तुम पर यह सब नहीं कहा। लेकिन बाड़ घोर नीर बढी ह्राई हाती जा रही है। हनाी हिस्ती, बायापासी, महाभावन, गता गमायण सब कुछ फिर से निराने का समय आ गया है। आज मन का इडिया फी हा गया है, लेकिन एतन दिना बाद यह भावन का टागम आया है कि हम इस आत्रादी के साथ हैं या नहा। जीर साथ बनन क लिए हम क्या-क्या करना चाहिए। मैं जिस गहर म पदा हुआ हूँ उसम नून पत्ता नहीं हुए। मैं जा बगान नहीं देना, तुम वही बगान आज देन रहे हा। यह और भी बदरगा। तुम लाग कादा उपमाय कर रहे हा, इसी से हम लागी की अपगा तुम लागी की जिम्मेदारी भी रदाग है तुम लाग ही दग को साथ बढाजाग। स्कून-बोनेत्र मे एतन दिन जा प्तार निगाद का वह बहुत ही कम है, तुम लागी की अनला एतून गन ता अब कुछ हुई है। और बाई भी प्रादर हान पर तुमको अभी म विजनस या नौसगा म लग देना, नेकिन मैं तुम्हारा करियर खराब नगे करना चाहता—तुम नाचा। गून अच्छा तरह न साचा कि तुम कौन-सा करियर पान्द कराग। तुम जा कुछ चाहोग मैं वहा दन की वागिग बसोता। रय का विन्ता न करना अगर इच्छा हो ना अनरिहा जा मन्त हा यू० क० जा मकन टा। टाकिदा या वेस्ट जमनी जहाँ भी तुम्हारी इच्छा जा मको हा—मैं सब एन डाम कर दूग। जात्रकल बायर का बगानिकित है एक्सचेंज ट्रबुन ता है हा, लेकिन तुमका गान्द पता हा है मिनिट्री म मग एननुगम है। मैं सब ठीक करेगा एम बार म तुम्हें कुछ भी नहा साचना हाग।

फिर अचानक हा क्या मन म आया। बाउ 'बाग ता अउत प्राउंउर ग इस मामले म मराहल मरते हो। देनो न का बल है।

निब्रमाण बावु न अचानक बात बरन दा।

अच्छा तुम्हारा एक ट्यूब थ, जान क्या नाम या उनका ?

'बशरनाथ राम रीमेटमी उनके साथ मरी मुनाजान हुई है।

'क्यों ? उनके साथ मुनाजान कम हुई ? वउ आना अच्छा है बगी अनिस्ट। यह भी मानता हूँ कि अनिस्ती इब द वेस्ट पॉलिसी। आज भी मुझे वह पटना याद है।

'मने आमी न एक दिन मर पाग जाकर अपना फास म दउ एद

कम पर देने का कता। एक्कम सिली, तुम्ही कहो। मुनकर उस दिन मुझे गूब हेंगा आयी थी। बस मैं इमानही था लेकिन उमी तिन समझ गया कि हम आत्मी मे जीवन मबुछ भी नहीं होगा। उसा समय जान गया, आत्मी कम्पलीटली फेल्यार है—उममे बुछ भी नहीं हागा”—इसवे बाबु बुछ देर क तिन गिबप्रमा बाबू रने फिर कहने लग 'असात म तुम्हें य मर बनाना बसर है तुम कराइट कवालीफाइड कराइट एजूकेटेड, य बावें तुम मुभम क्या अछी तरह से जानते हो यह सब ऑनेस्टी आज क उमाने म नहा चानी। यह 'मर्वाबल ऑफ द फिटेस्ट का उमाना है। य भी एर तरह की लडाई है। यह दुनिया ही लडाई का मदान है। हम लोग जो मांग-मछरी गाते हैं क्या खाने ह ? क्यावि खुद जिन्ना रहन के तिन उरें मारना ही हागा। हिमा अहिमा की बात नहीं है। दमी तरह हम मापा का मारनर कोई बचे रना चान्ता है तो उम ताय नहा निया जा मरना। उग क्या शेष निया जा मरता है ? तुम्हा बोलो। इसलिय हम मना जपना आत्मरणा क तिन मनष रहना है। म आत्मरणा के लिए फी-नभा हिम अलिम होग होगा। यह भी एक तरह का घम है। और घम-मदु का बात ना अपना हिन्दू नाम्ना म है ही—मी से कह रहा था कि आत्मी एक्कम फायर है वही नुम भी उमने प्रिमिषण पर अमल न कर बरता। जर ही—जाने क्या नाम था उमरा ?

केनागाध राय ।

'ही ना व गय बान छोडा। यह सब कहने क लिए ही आज तुम्हें यहाँ ल आया। आज गाआ क मामले पर मीटिंग है मैं यही उनरूगा, दमी हाडरा पाव म। बर तुम्ह पर पहुचाकर मुझे यहाँ ल ल जायगा।'

बहर गानी म उतर पड। बोयो 'बुज, इधर फूपाय पर गानी रगा।

हाडरा पाव में उम समय अघार भीड जमा थी। चारा ओर बहे-बहे पाकर भूग रहे थ। 'पोनु गीत्र गागाजान गाआ छोडा। 'गोआ क बरिया का आडा करो।' गिबप्रमा बाबू मीटिंग की भीड म घुम गये।

बर उ गादा मर कर सी था। सगवन न कहा, 'बुज, अभी घर नहीं जाईंग मुझे बर बूबाजार-स्ट्री छोड दो।

दवाई, दहाई, रावडा

“बहवाजार ?”

“हाँ, वहाँ मेडिकल कॉलेज के सामने—मधुगुप्त लेन ।”
कुज ने मिन्टी क पुतले की तरह स्टियरिंग ह्वील घुमा दिया ।

□ □ □

मधुगुप्त लेन की गली के नुकरड पर बताने की दूरान के पीछे उस समय गमागम बहम छिने हुई थी । बलर के लिए यह राउमर्ता की बात है । जय सारे मम्बर आ जाते हैं सब आर्टिस्ट आ पहुँचते हैं तब शुरू होना है । बामर-नैरी आफिम में काम करता है । सबसे ज्यादा जोर उमी का है । बगरर बहता रहता है— हमेशा कन्चर-कन्चर करत हो, कन्चर का मतलब समझन हो ? दमन पटा है ? बर्ना गाँ पटा है ? टनमि विनियम पटा है ? आपर भिन्न पटा है ?

मधुगुप्त लेन बतव के किसी मम्बर ने यह सब नहीं पटा था । वे लोग आफिम में नौबरी बरन हैं, मिनमा डामा देगने हैं, उनकी पटुच ज्यादा-जे ज्यादा गिगिर भादुनी और अडाड चौपरी तक है । डा० एन० राय और भीरोप्रसाद विद्याविनोद का नाम सुन रहा है । उस सब पर बमी मिर नहा मपाया । उनके लिए पटाई लिगाई मान बंगला अगवार ।

हाँ, ता उमी बानीपद न ही एक सटम्ट टकनीक का नाटक निराना । ‘मरा मिट्टा, अद्यात पाकिस्तान में चने आय रिपब्लिकिया की पुष्ट-भूमि पर । नाटक हीरोदन प्रधान है । शुरू में अन्त तक टारोदन ही मय-बुद्ध, दूगने गारे रोत से बडरी ह । जिन् लिन पत्नी बाग नाटक पग गया, बाला पत्नी की लण्टी पाटी क नडका का भी बहता पटा—‘न मारु, तुमम आट है । माहने का नडका बहकर हम लोग अब तक नहा पहचान पाये ।

उमी लिन म ‘मरी मिन्टी का रिहमन शुरू हा गया है । चन्दा हुआ, अभा भी हो रहा है । मुस्लिम हूट हीरोदन को लकर । नह भी मिल गया । बारापत्नी रितनी ही सडकिया का बुता-बुताग नाया—‘दाम-मुनन में गनी टाक थी । प्रोमनी ब्रेमरी और फ्रॉन्सू जूडे नानन पग बिसी की उम्र का अगार करना मुस्लिम है । लेकिन दा-एक लिन रिहमन होन के बाद ही एवन एक ऐब निकल आता । बाई टीक में हिय का उन्चारण नहीं कर

पानी काई चद्र त्रिदु बालने म गडबडा जानी । फांसी बहत बहत 'पानी पट जाता ।

आगिर कानीप ने सागे आगा छात्र था । कहता— दग्गता हूँ एव स्पूत्रन हीराइन व निए पे छराब होगा—मर ड्रामा की थीम ही चोपट हा जायेगी ।'

सारे मम्मर गय धात्र हीगान का गोज म लग गये । स्टार रगमहूल और विश्वरूपा म जिनने अम्पचार विपेट्ट हात सर रन्गर हारोइन का रात्र म शेषन पटुत्त ।

त्रिमी का त्रिगताकर गभू कहता यह क्या रहेगी ? तो त्रग इसने अलावा पाछ का नाअर पाट बडा स्त्रिफ है ।

इमा त्ररह काई-न काई क्या निरन हो आती । त्रिमी का साअर पाट स्त्रिफ है त्रिमी का प्रत्र ध्यु एक्त्रम पनट हाता तो त्रिमा का स्टेपिंग वत्र । जमा हातो चार्त्ति वमा एत्र भा न मिलती । गभू त्रिसकी भी बत्रव म त्राना कानापत्र त्रिजत्र कर रेना । जातिर जत्र मरा मिट्टी का स्टज होना लम भग न भित्त हा गया कुन्ली नाम का लठरी आयी ।

गभूत्त न कानीपत्र न कान व पाम मुहूल जाकर धार म पूछा क्या र पमन्त्र है ?

कानापत्र उम गमय एक्त्रर कुत्ता की आर देग रहा था । बर प्रत्र मात्र—त्र आर म त्रग सेा र यात्र त्रानापत्र एत्र वप चाय त्रर मात्रता जीर बाव-बाव म त्ररका का ओर त्रगता ।

चाय पा त्राना कुत्ता र पूछा दाना क्या त्रग रह हा ?

कानापत्र त्रर नैव गया । बात बत्रवकर बोता, 'आपन कौन-कौन म ड्रामा म भाग त्रिया है ।'

मैर बत्रपात्र बत्रव व स्वणलता ताटन म बत्रव का पात्र त्रिया है त्रग म भित्त व त्रिगरी जगी मत्री तात्रक म अनत्रा का पात्र त्रिया है टात्र मारिमा ऑत्रिग बत्रव व भित्तगान ड्राम म

कानीपत्र र टाहा त्रर-वम बात म कानी है ?'

कुत्ता अत्रान का गरत्र देगरी रनी 'बत्र-वम माने ?

गिरीग पोव व मात्रक नही पड ?

कानीप न चाय की चुम्बी ना । गिरीग घाप का नाम नही गुना, इन लोगो को लेकर ड्रामा करना भी एक आफत है । क्या वह समझ मनहीं आ रहा था ।

पास बैठे गभू न धार में बत्ता "दमी का ल ने कालीपद, एसी फिगर और नही मिनगा—बड़ा मुस्किन म गटा है ।

"गभू !

अचानक अपना नाम सुनकर गभू न मुत्कर दवा । लेकिन ठीक म पहचान न-। पाया । कोट पट-टाई पहन घ्यान म चेहरा देखकर ही पहचान पाया ।

"अर मदाग्रत क्या हान है ?

गभू न उठकर मदाग्रत का दाना हाथा में जकड लिया ।

यहाँ लडकियाँ भी आ मक्ती हैं मदाग्रत न नहा गाचा था । उरा सकाच हुआ । कब के मारे मम्बर उमकी जाग ताक रू थ ।

मदाग्रत न कहा 'तुममें एक काम था अरा बाहर आयगा ? बडा जरूरी काम है ।

'बाहर क्या, यही बठ न, उस दिन यहा तक आकर चना गया, आज बठ न उरा । बत्कर मदाग्रत का हाथ मीचकर उसे बठा लिया ।

मदाग्रत की बटने की उरा नी इच्छा नहा थी । लेकिन न बठना भी अच्छा नहीं लगता था । मदाग्रत का ऐसी अजीब जाबहवा म आन था पहले कभी मौका नहीं हुआ था । टीन को छन । दावार पर बटून-मो तमबीरें टेंगी थी । रामकृष्ण परमहम का फाग । गिरीग घाप की फोटा । और नी मिनगा हा फोटा फ्रेम म मडो भून रनी थी । सिगरट का धुजा, चाय के कपा की मन-मन । मभी मदाग्रत की आर रू रह थ । गायक इन लोग के सिमा जरूरी काम म बाधा पडी ।

मदाग्रत न पूछा, 'तुम लोग गायक कोई काम कर रहे थे ?'

गभू न कहा 'नगी-नहीं, नू बठ । कानीप नू अपना काम कर ।'

कानीप निए पूछन मगा, 'अच्छा आप गा मक्ती हैं ?

कुन्नी न कहा, 'मैंन ता पहन हा गभू बाबू का बतना मिया था कि मैं गाना नहा जानती । अगर जानता होनी तो स्टार म चाग मिन जाता, आप

मदावत न कहा, "कितन ही दिना म तरी आग 'जाळें-जाळें' माच रहा था—मैं अत्र गापद उवादा तिन कनकता नहीं रूँगा। क्या कळेंगा वृद्ध तय नहीं कर पा रहा।

विनायक घना जा।'

'इम ममय कन जा सकता हूँ।'

क्या? अत्रवार म राज ही ता दग्ना हूँ, कितने ही साग जमना चीन और मम म घूमन जा रहे हैं। मत्रय और माट्टियिक भी जान हैं आत्रवत ता मभी इण्टे रिटन हैं।'

लेकिन मुझे कौन स जायगा? टानर-एक्सचेंज ही नहीं मिलता, आजकल बड़ी मग्नी हो गयी है।'

गभू ने कहा, "इसमें तुम्हें क्या। तर पितानी ता हैं उनके साथ ना कितने ही मिलिस्टरा की जान-सहचान है।

'वह मत्र रहन द। अमन म मेरा एक और ही प्यान है—तरे पान में एक हुमर ही काम से आया हू। तरा वह दान्न कहाँ है? वही उन तिन घाना, जो कह रहा था।'

गभू ने कहा, "कौन? क्या कह रहा था? तरे वार म?

सदावन मत्र स्वर म बोना वमे में उनकी बात पर कुछ घ्यान नहीं लिया है उन बात क लिए जरा भी वरीड' नहीं हूँ लेकिन बात अब उठी है, तब जरूर ही कहीं कुछ हुआ है।

'कौन-सी बात? गभू कुछ भी समझ नहीं पाकर मनावन की आर एकटक दग्ना रहा।

सनावन ने कहा 'अच्छा, तुम्हें क्या लगता है। तू तो बाकी दिनों में मुझे जानता है मर पितानी का भी दग्ना है।'

लेकिन अमल म बात क्या है।'

'आज मैं पिताना के ऑफिस म गया था। साचा, वान चलाजेंग। लेकिन किमन पूछ, यही ठीक नहा कर पाया। लेकिन कभी-कभी माचना हूँ—आदमी का विचार क्या उमरी बय पर ही हागा? आदमी का बय उमकी हेरिडिटा—क्या इतना हा इम्पोर्टेंट फक्टर है? फिर गावना हूँ।'

ललिन मैं बुद्ध भी नहा समझ पा रहा ।'

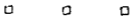
ललिन वह आत्मी वहाँ है जिमकी ज्ञान मे पहली बार सुना कि मैं अपने पिताजीका पत्नीपेटेड मन ह । मुझे याद दिया गया है । लेकिन मैं दान या बुद्ध भां ह ज्ञानन को तो मुझे भी अधिचार है कि मैं किम फमिता का ?—जगन म मर माँ-बाप बोन हैं ? वे लाग वहाँ रहते हैं ? अनी ता जि न हैं या नहा ?

गभू न इतना डेर बाट सत्रात्रत क चेन्ने की ओर अच्छी तरह म गया । आचय ! एक समय ज्मा सत्रात्रत म मुहल्ल क सारे लडके जलते थे । आज इता दिसा बाट गभू को जगा जम सत्रात्रत टूट चुका है ।

तरी गारा का क्या हुआ ?

वर्द्ध लिसा स गाली लखर नहीं निकलना भाई । लगता है मेरा बुद्ध नीन ।—'तिसा चीज पर भा भरा राइट गही है । मैं लाइफ की इम निया म जम द्रमपागर हूँ ।

ज गू ना लिन खाना म पडा है । ऐस तो, तू किनना बडा आत्मी है । एवरज नटका क गायसू का मुताबता करक दगन । कितने ही मरत अपन लिसा कमर म जवन मा भी नहीं पाते, ग्यान पहनने की बात मा छाड हाट । जोर गायसू तभे तू मा मारूम मैं जानना हूँ वस, ट्राम जोर टबगा म जा मनेगारा टरिलिन की घुगट और मगरडिन ट्राउडर पन्न घूमत ? जगन म ये लिन पाना म हैं ? यही दगन मारे दिन आलिन म काम करक घूँ करव म जाकर बटन हैं । आगिर कयो ? हम सागा क घरा म जगन तना पना है ? भाई-बहन लिंगन पढ़ते हैं इसी से घरा पन र गाव बुद्ध मगम बाट जान हैं—हम लोग की तेर साथ बरा घरा ! अगर तभे गारा गना है तो क्या हम सागा को राइट है ? असल म मा हम सागा गाय बड क द्रमपागर हैं ।



कचर गनु हमने सगा । हमर गायसू बुद्ध और कानवाना था जवानन रहता पडा । यरी सडकी कचर म निरन रही थी । शभू भीकक गगा र्हा । पहरा बनिग-अग निय गयी पार कर मधुगुष्ठ लन की ओर आ रही थी । गनु जाकर मामने सडा हो गया । पूछा ' यह क्या, आप तो

जा रहा है ।'

सन्तान ने भी दया बही लडनी। कुन्ती ।

कुन्ती ने कहा, 'अभिये, अभी तक आप लोग का कुछ भी ठीक नहीं है, पहले ठीक करिय फिर मुझे बुलादयगा ।'

बहकर वह जान गयी। गभू की बात पर लकी। बानी, 'दगिय, आपन कहा था इसी म मैं आप लोग के बनन म आयी हूँ। नहीं ता मुझे और भी काम है ।'

'लेकिन कालीपद ? कालीपद न ही ता 'मरी मिट्टी जिगा है, काली पद न आपम क्या कहा ?'

कुन्ती न कहा, 'दसिन मैं बनेक-बस जानती हूँ या नहीं जानती, मैं गिरंग पाप का नाम सुना है या नहीं सुना इन बातों का इतिहास दन आपन यहाँ नहीं आयी हूँ । मुझे जो लाग पाट दत है व मुझे दगकर ही पाट दन है मरी परीणा लेकर पाट नहीं दने ।'

लेकिन उरा दर और शकिय न । मैं कालीपद म पूछता हूँ ।'

लेकिन कुन्ती और नहा रुकी। जा जान कह गयी, अब अगर मुझमे काम कराना हा तो पहले मर पर जाकर विचहनर रूपय दे आइयगा तब काम करन आऊगी, बिना हाय म नकद रूपए आय अब कही भी नहीं जाऊगी ।

बहकर लडनी चनी गयी। उसे वापन लान के लिए शभू की मारी वाशिग सारी सुगामद बनार गया ।

गभू चुपचाप गडा था। सन्तान ने कहा, 'वह वहाँ रहनी है ? क्या करना है ?'

गदव की ओर देगन हुए गभू न कहा, 'करनी क्या मुद्दन मुद्दन नाक करनी फिरनी है। दया न आजकल कितना घमण्ड हा गया है इन लोगो । और कालीपद भी अजीब है, करता ता है अम्मचार डामा, उमर लिए दननी पूछनाछ किन बात की ? और जब हम लोग विच हसर रूपए म उमादा दे नहीं पावेंगे तो दननी जीव पन्ताल की क्या करन ?'

लेकिन देगन म तो ठीक ही है, गायद पाट ठीक से नहा कर

पानी ?

'अर यह बात नहा है वह एकदम घनाडि साँ हो गया है—यही अपना कालीपन ! हम लोग काई नाट्य साहित्य की उन्नति के लिए तो डामा कर रहा रह कर रह हैं जिसस एक रात चाप-बटलट खा पायें उरा मोज मजा करें, और क्या ! हमने अलावा दा नाट्य-प्ल कर पान पर गबनमट म एवाध हजार रुपया बसूल कर लेंग ! हाँ, तो स्त्रीलिए इतनी सुशामन करनी पड रही है ।

उन सागा को पमा देना हागा न ?

मिफ रुपय / रुपय भी देन हागे ऊपर से खुशामद भी करनी होगी । गाथा स घर तक पहुँचाना भा हागा मा अलग । आजकन इन लोग की गूब रिमाण्ड है न ! इसस तो भाई पहन अच्छा था, लडके पाठी मध्य माफ कराफ लडकी का पाट करने थ सर इन सय बाता का छोड तू इन बाता पर रिमाण मन खराब कर ।

गन्धर्वत न कहा 'मैं दिमाग नया खराब कर रहा, लेकिन मैं उन भासा न एक धार पूछना चाहता हू कि उन्हें सबक कहाँ म मिली ?'

लकिन तुमालगा तो आज आय नहा है मैं पूछ रगूगा ।

लकिन मरा नाम मन लना । मैंने पूछा है यह न कह दना । मैं फिर आउगा । अगर बात सच है तो मुझे सब-बुद्ध भय मिर स मोचना हागा दिग्गगी को अब तज जिग तरह देना है अब उस तरह काम नहीं चलगा ।

गभू न पीठ घपघपाकर उमरी हिम्मत थड़ाया, 'अरे, तू पढ़ा लिगा है इत मय धाना पर इतना ध्यान क्या देता है ? तू हम योगी की तरह भूग तो नहा है जहाँ तज मरा गवाल है दुलाल गाना न मजाक म कहा होगा !

मजाक !

गभू का सायन अन्तर बनब म काम था । उमन क्ता, 'ठीक है फिर जिगा नि आना मैं पूछ रगूगा । अब उरा अन्दर जाकर देगु, आनिर हुआ क्या ? पटका ताराड हासरक्या घनी गया ? अच्छा !'

बगल अन्तर पढ़ेपन पी गगा—वागवाप गुमगुम बटा है । गभा का पारा बडा हुआ है । गभू न कहा 'क्या कालीपन क्या हुआ ? कुन्ती लाल

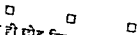
पाला हाकर क्या चली गयी ?'

कान्हापद ने एक मिगरेट सुलगाया । बाला "ऊँह, उमम नहीं हागा । मेरा सक्जेक्ट है रिपयूजी प्रावनम उमके गले अभी तक वही मलांडी लगी हुई है ? अर बाबा, यह डा० एल० राय का 'चंद्रगुप्त' तो है नहीं या मवाह-पनन भी नहीं है—कापती आवाज म एक्टिंग करन का समय क्व का जा चुका है काई खबर हा नहीं रक्ता । इसन क आन स डामा की क्व म किना बडा रिव्यालूगन हा गया है इमका भी किमी को पना नहीं है—और टेनमि विनियम्म क बाद से अमरिक्न डामा होलसेल चेंज हा गया है । बांगला दग म कोई इन जानना भी नहा ।

उम ओर गक्तिप बठा घा । उसन कटा लेकिन हम लोग डामा प्रम्नावल म ता नाम तिका नहीं ग्ट हैं । हम लाग तो मज्जा करन क लिए हा डामा कर रहे हैं ।

कान्हापद गुम्सा हा गया । बाना, तव वही करा । मौजकरक ही अगर दग की उन्नति करना चाहते हा करा, लकिन बाबा, मुझे तव माफ करा । इमसे ही अगर बगाली जानि का नाम रोगन होना हा तो वही करा काई भी नहीं राकगा । लकिन मैं कट दता हूँ एक दिन इन बगान म ही इम्नन, टनमि विनियम्म और आपर मिलर पना हागे । मरी यह 'मरा मिट्टा' ही एक तिन बगानी कक्कर का गौरव हीगी ।

फिर गामू की आर हाय बगकर बाना ता एक मिगरेट निवाल, दम सागाना-नगाना घर जाऊँ ।



बुज का यहाँ आन ही छोड दिया था । चलते-चलते सगदत मपुपुन सन पार कर ट्रामके रास्ते पर आगगा । इम ओर फुटपाय पर चलना मुश्किन है । रामन म ही बाजार सग गया है । एक बार बस म चटन की कोणिका की । मूनन-लक्वते साग । बरी-बरी डबन डेकर बस । ट्राम स जान पर एम्पनड चेंज करना होगा । क्या कर सगदत टाक नहा कर पा रग था । कापन ग्ट फुटपाय पर चलता रहा । भीधे एकदम दक्षिण की आर । अचानक एक माली टकी रोककर सगदत बठ ही रग था । टकनावान न पूछा कहीं जायेंगे -

‘बानागज !

तबिन त्रवाशा खानकर टक्का म प्रठन ही एव गवड हुई ।

‘तबिय य लाग मरे पीछे लगे हैं ।’

गन्धर्वत पाछे त्रवते हा भौनवता रह गया । बहा नडकी । कुन्ती । कुन्ती को भी आश्चय हुआ । गभू बानू के बन्धन म इसी जाग्गी को तो लेगा था ।

कौन ? पाछे-पीछे कौन जा रहा है ?

कुन्ता न पाछे की जाग गगारा कर दिया । अंधेरे के कारण साफ त्रिव सायी रहा त्रवता था । फिर भा गन्धर्वत उस जोर बला । लकिन भीड म त्रुद्ध भी पता नहा चला । बुद्ध लाग सिफ मन्त्रहजनक लगे ।

गन्धर्वत न पूछा कर्ना ?

सायद कुन्ता भा खोज रही थी । बोला ‘वह है न !’

लकिन पीछे म उगन किस त्रिवलाया, ठीक से समझ म नही आया । गभी इरागेत । मीधे-गात्र आदमी । अपन अपन बाम से जा रह थे । काई भी जपराधो जमा नही लगता था । कम-म-कम त्रिमी क चेतुर से ता ऐमा नहा त्रवता था । जोर मड रत्ना भी ठीक नही था । गाथ म कुन्ती भी थी । गन्धर्वत सौत्रर त्रवता की जाग आया । पूछा ‘तुम कर्ना जाजागी ?’

कुन्ती न कहा आप अगर जरा छाड दन मुझे

कर्ना रहमा हा तुम ?’

आप त्रिव आर जायेगे ?

त्रवता कात्रा त्र म गटा थी । गन्धर्वत त्रवहा ‘तुम बटा मुझे बानी गत्र जाना है । तुम्हें त्रही जाना न छोड दगा ।

त्रवता चलत समी । मीधे यलित्त सायावर का ओर जाकर मोड पर धूमि । कुन्ता चपचाप बरी थी । गन्धर्वत न असात्र पूछा ‘उत लाग न क्या तुमता त्रिया नहा ।’

कुन्ता त्र गन्धर्वत की आरत्गा । बोला ‘आप भी ता उमी बलक क मन्वर है ।’

मन्वर ! मैं ना त्रही त्रिगा का पहचानता भी नही । गभू मे धोना काम था इगी म गदा था ।

कुन्ती न बहा, तब मुनिये, आप गायद नहीं जानत वही फिर मत जादयगा।'

"क्या ?

"व मय कम्पुनिस्ट हैं' कुन्ती न बहा।

मन्त्रत को इमने पहन गायद इतना आरुचम कभी नहीं हुआ था। कम्पुनिस्ट ! उमन जग ध्यान स लडकी का आर दया। जान कमा मन्त्र मा हान लगा। चेहर से ता बसी नहा लगनी। अय ममकम आया—लोग पाछ बया लग थ।

लकिन कुन्ती ने गुद ही सफाई ली। धापी, 'गायद आप माचन हागे में बकार म उन लाग का बदनाम कर रही हूँ। गायद मोचने हागे मेरा कोई खराब मतलब है लकिन विश्वास करिय मैं किसी भी दन को नहीं हूँ। मैं काप्रम क माय भी नहा, कम्पुनिस्टा क माय भी नहीं हू। मिक पस क लिए पेट पानन के लिए यह पना करना पड रहा है। मरी माशी हाठा को निपटिक दनकर गायद आपका लगगा कि मरी हालत अच्छी है, लकिन मच मानिय मेर इम बग म मिक नान रुपय है। साचा था इन लाग न जान बुद्ध एखाम मिनगा, लकिन बुद्ध भी नहीं मिला। ऊपर म मरी पनाइ लिनाई और बुद्धि पर टिप्पणा कती। यहा मच दगकर मुझे गुम्मा आ गया मैं खली आयी।"

मन्त्रत चुप ही रहा। मच ही ता लडकी न मिल्क का माशी पहन रगा है वत् इननी दर बान् टिननापी ना। हाठा पर का लिपस्टिक भी अब साफ-साफ नडर आन लगी। बदन म सेंट लगाया है। म्पुनू आ गही थी।

एक और माड आत हा मन्त्रत न पूछा, "तुम वहाँ जाआगा ?'

लडका न बुद्ध भी जवाब नहा लिया। अरानव मन्त्रत न दगा—लडका की आँसे भरी हैं। बीच-बीच म चर् पर लडक का रागनी आकर पढनी। लेकिन क्या यह क्या कहना गीक हागा—बुद्ध भा ममम म नहा आ रहा था। लडकी का नो आभिर इगगा क्या हा मकता है

अचानक लडकी सीधे हानर बडा, यही।

'रहा' क्या ? अचानक क्या हो गया ?'

कुन्ती न कहा, 'अचानक नहीं आपको मैं जानती नहीं, पहचानती नहीं इस तरह आपसे सब-कुछ कहना भी नहीं चाहती थी। आपने ही मुझे गाथा म क्या बठाया ? मैं चार डाकू या खराब लडकी भी तो हा सकती हूँ ? आप मुझे पचानने तक नहीं हैं आपका बलबमेन भा तो कर सकती हूँ ?

मन्त्रमल गन्ध मुनकर मदाग्रत का जीर भी आश्चर्य हुआ। बोला, 'तक मन शान्ति के माने जानता हो '

ठीक ठीक मान नहीं जानती, लेकिन कितन ही मुह मुना है मैं भी ता क्या था मकना हूँ ? आपने मुझ पर विश्वास करके गाडी म क्या बठा लिया ?

मन्त्रमल न क्या गाडी म बठन के लिए तुमने ही तो कहा था ।

लेकिन मैं तो आपक लिए अनजान हूँ। इस तरह अनजान लडकियाँ को गाथा म बठाकर मुद्विल म पड सकते हैं यह क्या आपको मानूँ म नगा ।

मन्त्रमल हम पडा ।

बाता जपनी फिर मैं कर लुगा तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। तुम्हें जाना क्या है मुझ बतना दा मैं पहुँचा दगा ।'

कुन्ती तब तब घाटा मग्हन चुरी था। बोली, 'मैं उन लोगो को बम्बुनिम्न क्या है क्या मन्त्रमल आप नागज हो गय है ?

नागज ? लेकिन बम्बुनिम्न मान क्या जानता है, तुम जानती हो ?

कुन्ती न मन्त्रमल का ओर दगा। फिर पूछा 'आप भी क्या बम्बु निम्न है

'जाना हूँ तुम बम्बुनिम्न म काफी नागज हा । बम्बुनिम्न के माय मुम्हारा मना मल जोग कम बडा ।

कुन्ती न कहा 'हम लोगो का मेन-जोव नहीं है तो किमना ज्ञाना ? पता है हम अपना कान ग्राहकर यही घने आय हैं एत कपडे में, मन्त्र-कुछ ए-हरर । यही हम लोग जानकरा की तरह गाय-बकरिया की तरह मुडर कर रत है। यही आय है क्या क्या अपना देग है ? यही चांग ओर रोगनी, बमन्-मन्त्र मानें—यह सब क्या हमारा अपना है ?

“तुम लागे का नहीं है ता किमका है ? यह दग तुम सोगा का ही ता है । और किमका है ?”

“अमीरों का । व लागे क्या हम लागे क बाग म सावने हैं ? हम लागे क्या खान हैं, किम तरह डिन्ना हैं बार्द परवाह करता है ? वे लागे क्या परवाह कान रहे । हम लागे मरे या जिसे उन लागे का क्या जाना है ?”

मुनकर सग्यत वो जगह हेंमी आन लगी । थोडा मडा भी लगी ।

मदागत न पूछा, “य सब तुम्हें किमन मिमनाना ? कम्पुनिम्ना न ?”

कुन्ती न क्या ‘मिन्नायागो वोन ? हम लागे क क्या आसो नहा है ? हम लागे क्या बखवार नहा पत्न ? हम लागे गरीब हैं, कम्पिण क्या हमारे मिमना नहा है ? कानता आप आज सात मान हा गय । किम ममम आयी प्राक पत्नता थी अब माहा पहनती हैं । बटुत-बुछ दगा-मुना है, तब भी क्या कहना चाहत है कि दूमर के कंधे पर रखकर बन्दूक चला रही हैं ?

दकसी द्वाडवर एक मरगार था । एक माट क पास आकर बचावर रह गया ।

‘किधर जाना है मा क ?’

द्वाडवर का जगह बतनाकर सग्यत न कुन्ती स पूछा, ‘तुम कहीं जाता हा ?’

कुन्ती न क्या, ‘वातीगज म रहना मर बूत क बाहर है ।’

‘वह ठाक है फिर भी जगह का कुछ नाम ता हागा ?’

ममम सात्रिय पुम्पाप पर ।

‘तकिन मैं क्या आम्मी हूँ यरी कान साव तिया ? मग मूग्त दगकर ? कान दगार ?’

कुन्ती न क्या, वह ता मानूम नहीं । और आप अमीर आदमी हैं मा गरीब यह जानन का भी मुझे बार्द जगरत नहीं है । उन लागे क कान स निरनन क बाग म मन बडा मराब हा गया था इनी से गुम्मे में बटुत-बुछ कह गयी । आप बुग न मानियेगा ।

कुछ तेर तद दानों ही चुप रह । फिर मदागत न ही पहने शुरू किया ।

कुन्ती न कहा, 'अचानक नहीं, आपको मैं जानती नहीं, पहचानती नहीं दूंगी तरह आपसे सब-कुछ कहना भी नहीं चाहता थी। आपन ही मुझे गाढा मकरा बढाया ? मैं चीर, डाकू या सराब लडका भी तो हो सकता हूँ ? आप मुझे पहचानने तक नहीं हैं, आपको लकमेल भी तो कर सकती हूँ ?'

स्वयंमल गल मुनकर मन्त्रप्रत को ओर भी आश्चर्य हुआ। बोला स्वयं-मल क्या क मान जानती हो ?

'ठीक राक मान नहा जानती, लकिन कितने ही मुन सुना है मैं भी ता कहा हा सकता हूँ ? आपने मुझ पर विदवास करके गाडी म क्या उठा लिया ?

मन्त्रप्रत न क्या गाडी म बटन क लिए तुमने ही तो कहा था।

लकिन मैं तो आपन लिए अनजान हूँ। इस तरह अनजान लडकिया का गाडी म बढाकर मुश्किल म पड सकते हैं यन क्या आपको मानूम नगा ?'

मन्त्रप्रत हग पना।

बाता अपना शिक मैं कर तुगा तुम्ह चिन्ता करन की जम्हरा नहीं है। मम्हें जाना कहां है मुझ बाता दा मैं पहुँचा दगा।

कुन्ता तर तर बाता मम्हें चुकी था। बाती मैंने उन लोगो को बम्बुनिस्टा रगा है क्या एनालिए आप नाराज हो गय हैं ?

नाराज ? लकिन बम्बुनिस्टा मान क्या होता है तुम जानती हा ?

कुन्ती न मन्त्रप्रत का आर लपा। फिर पूछा, 'आप भी क्या बम्बुनिस्टा है ?

'लगा हूँ तुम बम्बुनिस्टा म काफ़ी नाराज हा। बम्बुनिस्टा क साथ मुझाग इना मल जान कग बडा ?

कुन्ता न कहा 'हम सोगों का मल-ओन नगा है ता लियरा हागा ? पना है हम अपना कान छोडकर यही पन आप हैं एन कपडे म, सब-कुछ लोडकर। यही हम साग जानकरी की तरह गाय-बकरिया की तरह मुडर कर रह है। कहां आप है यह क्या अपना देग है ? यहा चारा और रोगनी, बमर-मर मारें—यह सब क्या हमारा अपना है ?

“तुम लोग का नहीं है तो किसका है ? यह दस तुम लोग का ही
ता है ! और किसका है ?”

‘अमीरों का ! व साग क्या हम लोग व बार म साचने हैं ? हम
साग क्या खाते हैं किम तरह जिन्ना हैं कोई परवाह करता है ? व साग
क्या पगवाह बग्न नग ! हम साग मरे या जिये, उन साग का क्या
जाता है ?’

मुनकर मन्नात्रत को जसे हंभी जान लगी । थाडा मन्ना भी लगी ।
मन्नात्रत न पूछा, ‘पह सब तुम्हें किसन मिशनाया ? कम्पुनिस्ता

न ?
कुन्ना न कहा, मिशनायाया कौन ? हम साग व क्या आंशे नहा हैं ?

म साग क्या अगवार नहीं पन्न ? हम साग गरीब हैं इनलिए क्या हमारे
साग नहीं है ? कसकता आय आज मान मान हा गया । किम समय आयी
अब पहनती थी अब साढी पहनती हैं । बहून-बुछ दसा-मुना है तब नी
सागना चाहत है कि दूनर व कथे पर रनकर बन्दूक चना रही हूँ ।
सागना द्वापर एक मरदार था । एक साग व पाम आवर अचानक रन

।
किधर जाना है जाब ?’

सादर को जगह बनलाकर मन्नात्रत न कुन्नी न पूछा, ‘तुम कहाँ
हो ?’

कुन्नी न कहा ‘बातागत्र म खना मर बून व बाहर है ।
वह ठाक है फिर भी जगह का बुछ नाम ता हागा ?’

मन्ना सातिय पुत्रपाय पर ।

किन में क्या आत्मा हूँ यनीकम मोच तिया ? मगी मूरत दगाकर ?
सादर

सा न कहा ‘वह तो मानूम नहा । और आप अमीर आत्मी हैं या
दुखाना का ना मुक्त कोई जम्परन नहा है । उन साग व कसब म

साग म मन बढा खगाब हा गया था इमा से गुन्ना म बहून-बुछ
आप बुरा न मानियगा ।

र तक दानों ही चुप रहे । फिर मन्नात्रत न हा पहल गुरू किया ।

है, अभी मुम्हारी उम्र कम है, लेकिन एक बात याद रखना—आदमी
 का ऊपरा रूप ही सार-बुद्ध नहीं है। मुझे कुछ खुशी रख यह सब गरीब-
 मीर की परवाह नहो करत। मैं जिन्ना म बितन हो गरीब आदमिया
 का मिना हूँ और जिनन ही रईमा का भी जानता हूँ, पक सिफ बाहर
 के पाया भातर दाना ही एक हैं।

अगर आप मेरा हजरत जानत हाने तो यह बात नहो कहते।

फिर एकाएक मन्दात की आर दरकर वाली जानत हैं बिना साये
 लता क्या चाञ्च हाता है? जानत हैं पाक करना किस कहते हैं? और
 किस कहत हैं खानी पर पात ग्यार पट भर हात का बहाना करना?

बन्दर जरा रर चुप रहो फिर अखान्त बोला अच्छा नमस्त,
 हाञ्चरा पाक आ गया है टकगी राबन का कस्य।

तभा एक आवाञ्च मुनरर दाना चीर पडे। पाक म लग लाउरुपाकर
 म भाषण का आवाञ्च आ रहा था। जाग पीछे हर तरफ नीक था। जन्म
 ऊँच चरफाम पर गड बका लबकर रहे थे—और हजारो लाग मुग्ध
 हाशर गुग्ध।

मया कट्ट रह्ये बिनामफर काट राज सुबह ठीक पाँच बज घूमन
 जात थे। लेकिन उन दिन एकाएक खबर आयी फाम का जनता के हाथा
 अपरा मिहामत छानर वहाँ का राजा बन्नी गया। खबर आयी बैटिन
 का पात हा गया। फाम की राज्यगबिन के हम पता न मारी दुनिया म
 मन्वता मरत थी। जिन्ना म सिफ हमी दिन उह घूमन जान म दर हुई।
 पर गवध का बरिञ्च हञ्चरिन न हम सिद्दाह का खामत रिचा। मभान
 मात निदा रि मून गराया म न अतान के माप जा सिद्धे आया वह
 सिक्क के निर मगलरारा जागा। भारत म आज हम पुत्रापति धम द्वारा
 सापिा ममाञ्ज-स्यग्रम्या नहो पाटा। भाषण रनि ममाञ्ज-सत्र हा म्माग
 मन्त्र है। जा धम मन्मन का ता मून गिलाय और आदमी का मून चुन,
 उम हम अग्निा गहा मानत

साग आर म म्माञ्ज साविपा पिन्त नया।

मभान फिर म बावत मून किया आज म्मा म्माञ्ज है हमारी
 आवा। म कही भा बापानिदधिरम की मू गही है। तकिन हमी म्मा म

एक हिंसे में आज भी पुणगीड़ कॉलोनी का जहरी फोड़ा रह गया है। वैसा आज यह बहुत ही छोटा और मामूली लगता है लेकिन मैं कह दना हूँ, एक दिन यह जहरा फाड़ा हा जानलेवा हा जायगा। आज हम गोआ की बात कर रहे हैं। भारत सरकार को मुक्त करन का भार अगर अपन ऊपर नहा लेना चाहती ता हमार ऊपर छाड़ द। हम क्रान्ति चाहत हैं, और क्रान्ति का क्या मूल्य दना हाना है वह भी जानत हैं। इमी क्रान्ति क सन्तिका के लिए हम ”

गाडी अभी भी भीड़ काटनी चल रही थी।

बुन्ती १ एकाएक मूह खाला। कहा, 'दवा, य लाग भी कम्युनिस्ट हैं ?'

'किसन कहा, कम्युनिस्ट हैं ?'

"मुझे मालूम है मैं सबका जानती हूँ।"

तुम उन्हें कम जानती हा ?

बुन्ती फिर से हँसा। बानी, 'मैं मार करोंम जो जाना हूँ। मरा पया ही ता नाटक करना है। सोचत हा—दूरी औरता की तरह मैं भा रमोईधर में दाल भान पवाती हूँ और अशुवार पटनी हूँ ? आप नी जा नहीं जानत मैं जानता हूँ, आपसे बहुत ज्यादा जानती हूँ। इती म ता कह रही थी।'

गदाप्रत बाना, 'जानता हा वह कौन है ? कौजा भापण द रू है ' वह है मेरे पिता। मैं निवप्रसाद गुप्त का लडका हूँ।

गामने गाप रसकर नी गापद लाग दतना नहीं हगन। अउरे म मग प्रत टीक म दव नहीं पाया लेकिन नाम मुनत हा बुन्ती डर से त्रिहु गयी।

हाजरा पाक मे बाबू शिवप्रसाद गुप्त अभी भा बान जा रू थ— 'गोआ हमारा है—हमारा मानभूमि का अभिन्न अंग है। यही अभिन्न अंग आज दूगरे के पत्र म है। इन छुडाना नी हागा उरगत हान परक्रान्ति भी करनी होगी। जान, कम और रवा' लिप्टा अगर हमारे जावन म नया है परिण की दूड बुनियाद अगर नहीं बना पाते है ता एक बार फिर जग-सी ब्रिटिश शक्ति का तरह यह गाआ ही गारे भागत को हडम कर जायगा य

चनावना दिय दता हू

!

□ □ □

त्रुतिया म बटुन-कुछ हाता हे जा नजर नहा आता । या नजर आने पर ना उगता मन्त्य समझ म नहा जाता । १९४७ के बाद मे शहर म मग चम रना था । वात न चीत वार्ड-बोर्ड आम्ही एकाएक बडा आदमी ना गया और दूगरी गिशा बुद्धि और क्षमता क होने हुए भी धीरे धीरे नाच की जोर जान गगा । या एव दूगरी श्रेणा वार्ड सहारा न पाने के कारण अराम का पीनक म डबा था । दूगरी आर अखबार की कोई बडी-सी खबर घोना नर क लिए लागी को चीरा नना । कम क स्टालिन की मृत्यु हो गयी या कम न स्पूतनिक छोडा । मुबह मुबह जा लोग कम टॉम म भूलते नूनन जाफिम जान ये माय म अदवार लगर चलत । समय मिलने पर कभी पढ़ गन । कभी बडी चमक-रमक वाता वार्ड फिल्म आन पर मिनमा घरा क मामन जागर लाइन लगाते । नग आजाद है, जब क्या चिन्ता । कट्टीव ग म हा गया अच्छा ना हुआ । मामट चीती कपल—गभी चीजा के काम चढ़ गय । टीर है वने क्या नगर जिम गिर गपाना है सपाये । 'यह आजात भया ? —कगर बिलानवान चिन्ताये । मोनूमट के नीचे माउन्टपावर पर गरमागरम भाषण रे । हम लोग म वह गव नही होगा, उम्मत ना ना है । हम नाग हमेगा गान पीन राने गाते हैं अब भी वही करेग । वल्लिदार गिनजी क समय म कन की ब्रिटिश हुकूमन तब वही गिया आज भावही करग । हम नाग जपन भभरों म ही परगान हैं जनाव ! य मय माचा का समय हमार पाग कती है ?

उम त्रि कगर बायू यता गाव रह थे । उह लखा को पढ़ाना होना है । य मय बाते भी तो हिम्मा की है । समय न घ्यान त्रिा त्रिया, अच्छा हा हुआ ।

मठ गब गावन गोचर हो पर लो गह थे । रास्त म वही भीठ थी । तय म बटन-ना त्रिाबे निय मन हा मन मागत आ गह थ । 'वार' के बाट एक मया पुस्तक निरना है । ग गवे अति बड गिनिमाइजान —यह पुस्तक पढ़ना हागी । आम्ही का भी रिजना परेगातिया है । कगर बाबू चलते-चलत रुक रुक । गगा मन्डर कम नगाविपन क कारण हा हुई । प्र ब त्रिवात्पूगन

जमी घटना का एकदम से उलट दिया ।

माचने-माचन बग धर क पाग आ गये, ध्यान ही नहीं र्ना । दरवाजा खटखटात-खटखटात जावाज दी, "गर ! ओ गर !"

अन्दर स दरवाजा खानकर बिभी ने पूछा, किन चाहत है ?

बन्धर बाबू मकपरा गय । किने चाहते हैं—मनलर ? अपन घर आने म भी मुक्ति ।

बन्धर बाबू ने पूछा "आप कौन हैं ?"

उन्होंने भी पूछा, आप कौन हैं ?

अरे, क्या अपन घर म भी नहीं घुमन देंगे ?

तभी शायद अदर नजर पची । सब-बुद्ध नया-नया-ना लगा । माचन पर बुद्ध अजीब-ना लगा । क्या नून म दूसरे रे घर घुम आये । बीम गाल से इस घर म रह रहे हैं, फिर भी यह गुलती कर बडे । चाग ओर दरवार खान, "किन्, मैंन गायद गुलती की है ।"

घर के मालिक जग मुमरराये । फिर पूछा आप गायद इस माहल्ले म गय हैं ?

बन्धर बाबू न कहा, गया क्या हान लगा ? इस फटेपुत्र स्पीट में गने मुझे बीम मान हा गय हैं ।

'यह फटेपुत्र स्टीट ता नहीं है यह ता मोहनबागान रा है ।'

अजीब तमाशा है ।' बन्धर बाबू न कहा, 'पुरा न मानियेगा, जरा गानमान हा गया ।'

बन्धर बाबू पर आ गये । इस बार भूल बन्धर का खान नहीं आया । अपन घर के ठीक सामन पहुँचत ही हरिचरन बाबू न कहा, "अर माम्तर गायद ।"

बन्धर बाबू न कहा, कौन हरिचरन बाबू । आज ता गडब हो गया मैं गजनी म आज माहनबागान रा पहुँच गया बडे आज मुझे कर्ना रहने बीम मान ।'

हरिचरन बाबू न बीच म ही रोक दिया । खान "आपसे एक बात कहने के लिए कई दिन मे चक्कर पाट रहा हूँ । आप ता मित्र ही नहा । काली अरने पहुँचे मैंने आपन कहा था, गायद माह होगा ।"

कनार बाबू— हाँ हाँ याद क्या नहीं होगा ? '

आपन कहा था, मवान खाला कर देंगे ।

कनार बाबू न हमी भरा ही, कहा तो था । '

'और यह भी कहा था कि दो एक् महीने म ही छोड देंग । मा आज करीब एक साल हो आया लेकिन अब और राह देखना तो मरे लिए मुश्किल है । आगिर मैं भी तो साधारण जाटमी हूँ जरा मेरी भी तो गाबिय । मिनना मुश्किल से गुजर कर रहा हूँ वह मैं ही जानता हूँ ।

कनार बाबू ने कहा आप बिलकुल ठीक कहते हैं । जमा समय जाया है गुजर करना उछा हा मुश्किल हो गया है । मैं एक सत्त्व का पढ़ाता हूँ, उमका ताम है घमन । सत्त्व खूब ही अच्छा है त्रिलियट बाय । पना है, उमरे पिता न आज कहिया—समय बटा सराब है मेरी छ महाने की तनया नही पायेंग ।

हरिचरन बाबू बाबू वह सत्र सुनकर तो मरा कोई लाभ हागा नहा आप घर कर खाला कर रह हैं यहा बनराइये—एक डेफिनेट डेट बनना तीजिय अब और नया कर पाऊगा ।

डेफिनेट डेट ?

कनार बाबू मान लेंग । फिर बात उबर, कोई डेफिनेट डेट ता देना हा तालिए । आपना काफी सबलीव हो रही है समझ रहा हूँ । सेमिन मैं एक्म भूल गया था सत्रों माह्य एक्म भूल गया था । कई जिना म एक ओर ही बाग मोच रहा था । हिस्ट्री म एक समय आता है जय मी तरह वा स्वयंरजिया इसी तरह क सराव जि आत हैं । एक बार एमा हा समय आया था मवर्गीन विगरी सधाम । अब इन युद्ध के बाट आप गाबन हैं क्या दानि आया है ? कनार की बात—तमिय न, जमनी म पार्गीनन हा गया इदिया म पार्गीनन हा गया, कोरिया म पार्गीनन हा गया

हरिचरन बाबू । बीच म हा कनू 'द मय वानें मैन पहल भी दिगना ही बाट मुनी है । अब आप मन्वानी कनक मरा महान मानी कर तीजिय ।

कनार बाबू न कन उबर मानी करदुंगा । मैं कर कहा कि आपना

मरान नहा छाड़गा ।'

“लेकिन क्या छाड़ेंगे, यह भी तो बतनाइये ? मुझे इसी महीने क अन्दर मकान चाहिए ।’

केदार बाबू बात ‘माली कर दूंगा । कह तो रहा हूँ इसी महीने कारा ।’

अन्दर में एकाएक गल की आवाज आयी । केदार बाबू न एक बार अन्दर का आर दखा । बोन, लज्जा है मरी भतीजी न मरी आवाज मुन सी है आ रहा है री, जग चटर्जी माइय के माय न एक बात कर रहा है ।

‘बाबा, तुम उरा अन्दर तो आजा—एक काम है ।’

केदार बाबू न अन्दर जाकर पूछा, ‘क्या री क्या हुआ ?’

‘अच्छा, तुम क्या हा ? तुमन क्या माचकर इसी महीने के अन्दर मकान घाली कर लन वा कह लिया है ? यह घर छाड़कर कर्ना जाआगे ? कहीं मिलेगा घर ? कनकता म मकान मिलना क्या लना ही आमान है ?’

लेकिन उम क्यो तरनीय हो रही है । उमने शायदा कर लिया है ।

तुमन वायदा क्या कर लिया ? इसीलिए ना मैं तुम्ह बुलाया ।

जाआ, उमग जाकर कह न कि नव मकान मिलगा नव जाएंगे ।

यह क्यो हा लकता है । मैं उमग वायदा जा कर लिया है ।

लेकिन क्या वायदा ही सब-कुछ है ? मकान छोड़कर हम लाग जाएंगे कही ?

उमके लिए कुछ-न-कुछ तो होगा ही पना है आज नवानीपुर हाइर आ रहा था मुना सब मीटिंग-वार्टिंग हा र्यो है ।

किस बात की भीटिंग ?

‘और मिटिंग गात्रा की । इन लोगा का अकल ता दम, इडिया म आन भी जमे है । मभी चने मय, मिटिंग मय, फच मय पुनगीज अभी जमे रहना चाहत — यह तो ठीक बात लो है । हम गात्रा का आ तरनीक हो रहा है क नगी ममलत—यगी जिन तरह हम लाग के शरण घाटुजे माइय का हा र्यो है । हम गात्रा एकलम जमकर बटे है ।’

गन और नहा गट पाया। बोना, ‘तुम क्या ता ! गोआ के लिए क्या

रहा है, यह जानकर मुझे क्या करना है ? तुम जाकर चाटुज्जे साहब से
 आओ कि हम लोगो को जब महान मिलेगा तभी जाओगे ।’

रविन मैंने ता कह दिया है ।

तुम्हारा रक्त का का बीमन नहा है । जाओ, तल्दी से कह आओ ।’

बेकार मारू न कहा जाऊँ ?

‘जल्द जाओ, तुम ता मार दिन बाहर रहत हो, और मैं यही चिन्ता
 मुझसे मे गमय काती हूँ तुम्हें क्या पता ! मवान छाडकर अब अगर
 मार पर गड हाना पए ता क्या करोग ? एक महान व अंदर तुम्हें
 कही मरना मिलेगा ? जाओ !’

बेकार बाबू बाहर आये । हरिचरण अब वहाँ नहीं थे । तब तब चने
 मर थे ।

गन न क्या, जरा आग बन्दर दय जाजा त, अभी भा सायत क्याश
 दूर तनी गय थाग । तुम जाकर क आजा कि जब महान मिलेगा तभी
 जाओगे इनम पहन जाना सम्भन नया हागा । फिर हम लाग जिना भाडा
 लिय ता रह नया रह । हर मनाज किराया तो ठाक स द रह ह ।’

बेकार बाबू उगा हासन म फिर म मरक पर आय । फेपुबुर स्ट्राट
 पर भी अनगिना लाग थ । बेकार बाबू गावन लगे—मर ही ता काका
 लिन पए चाटुज्ज न महान गाला रगन का क्या था । उम घर की जल्दत
 है । हरिचरण उमने कोई खगत्र बान ता नहा था । फिर भा अगर एक महीन
 व जल्द घर न मिले तब ‘ चाटुज्ज माह्य ! चाटुज्ज माह्य !’

गामने हा हरिचरण बाबू ता रथ थ । उहाने पाछे मुडकर दया ।

बेकार बाबू ने क्या लिंगल चाटुज्ज माह्य एक बाव ।’

बेकार पटा रथ गय । कोई जोर था । अनजान आत्मा भा मरपरा
 मना । बेकार बाबू ने क्या मैं ठाक स पहनात नहा पाया, मैंन गावा
 हरिचरण बाबू है—आप मुछ गानिणगा तया

दाम-ना-तत तारर बेकारबाबू लोर रथ थ । मरान मामिक महान
 का ताक दृगगा मारंग का बराबर सिगया लन आता । बेकार बाबू क्यू
 पुगन सिगलार ह । आग रथन महाना किराया दया ह । तान कमर ।
 बरन पुगता मरता है । मन कितना बार जरा मरम्मत करगा क लिन कया

है। वभी मफ़ेनी भी नहीं कराना मरम्मत की बात कहते ही घर छोड़ दन का कहता है। क्या किया जाय। वमे उमे तबलीफ़ तो जहर हो रही है। हम भी ता पुनगीज लोग म गाबा छाड दने को कहन ह।

लौट ही रह थे। एकाएक दाहिनी ओर से कुछ गानमाल मुनाई दिया। बेदार बाबू ने चदमा ठीक कर लिया। बहा लम्बा प्रमिगन जा रहा था। अब फिर किस बात का प्रमिगन? गली क आम-पाम जा इधर-उधर जा आ रहे थे घमककर सड़े हा गय।

“क्या हुआ जनाव? किस बात का प्रमिगन?” बेदार बाबू न मुडकर पास के आदमी की आर दया, “कौन आया है?”

थोड़ी दूर म आवाजें आ रही थी

‘हमारी मांगें पूरी करो।’

‘नहीं तो गद्दी छोड़ दो।’

‘ये लोग कौन हैं? क्या कह रहे हैं?’

‘अत्याचारिया को मजा दो—मजा दो।’

कौई नती समम पा रहा था य लोग कौन हैं। देगते-दगन जुनूम काफी पास आ गया। बेदार बाबू दगन लगे—जुनूस की लाइज क सिरे पर क ताज कपडे पर न जान क्या-क्या लिखा था।

‘बगानिया को आंखें अभी भी नहा खुली हैं। हाय रे बगाली जान।’

“क्या हुआ जनाव? किस बात का प्रमिगन है?”

एक ने कहा, ‘मुना नहीं डनहीजी स्ववापर म गानी चनी है? डेड सौ बेकगूर पुलिम की गाली के गिकार हो गय। फिर भी

“क्या किया था उन्हाने?”

‘करते क्या, मफ़ जुनूम तेकर विधानराम मे मुताकान करना चान्त थे अपना अधिकार मांगना चाहत थे—मही उनका कगूर था। दग आद्रप रास्ता सून से भर गया है।’

जो लोग मुन रह थे मभी कहन लगे, “क्या? क्या? निग्य लोग पर यह अत्याचार क्या?”

‘मही ता है जनाव कापती राज्य। इमी क लिए मगीराम और गोपा नाम सादा फांसी के तग्न पर भूते। इमने ता ब्रिटिश राज्य कही अच्छा

था। कम-ना-कम बिलेगा राय है, यह तो मालूम था। आज के ये लोग तो बग बन्त डाकू हैं ब्रिटिशा की गोली खाकर हमन आजादी हासिल की और य राग मज से मात्र मोटा तनन्वाह डकार रहे हैं।'

जुलूम सामन में गुजर रहा था। दहाती किमान परिवार की औरता था भण्ड। पत्रग लिए जागे आगे व ही बन रही थी और पीछे ये लाइन पा-नाइन जादमी। नग पांव पत्र कपडे पिचरे गाल धँसी जालें। बेकसूर नून। मना क चहर उनेति। जुलूस क दाता ओर घाटो थोडा दूरी पर बुद्ध नीटन नग लाग थे। व ही चिल्ला रहे थे

अत्याचारिया को सजा दो !

और गभी गवा फाडकर चिल्लाते
सजा दो !'

फिर आवाज बन्दवर बहने
'मारा माँगे माननी हागा !

मत्र जोर में बहा
हमारी माँगे मानना हागी !

उमी आजाज में साठर चिल्लाने
तहा ना गयी छोड गो !

नीट ना चिल्लाती
नग तो गदी छ्वाड गो !

आस पाग ब सागा में भी कुमकुमाहट शुरू हा गयी। यह सरकार अचापागी है इसका पतन जरूरी है। विधानसभा क्या इसके घाट भी चुप पाग गदी मग्गल बठ रहंग। और हम साग गुग्गे-गडे यह सब सहगे ? पिबहार है यगमा जानि बो !

गुनने गुनन आम पाग ब सागा वा टगा सून जमे एक सेवेण्ड में लीजो गगा।

एक न बहा 'आप सागा न ही ता बाट न बर नर गरी नर ...

बेगार बाबू सहे-बडे चुपचाप देग रहे थे और मुन रहे थे। हरिचरन बाबू को डडन जा निकून, अब वह बाग ध्यान मे उतर चुकी थी। उह यह भी ध्यान नहीं रहा कि उन्होंने मरान मालिक मे काई वायदा किया है या एर महीन व अन्दर उ हें घर छाडना होगा। उनरे मन में बार-बार एक ही बाग आ रही थी। मन्ना के लाग सचमुच दु ग्नी हैं। उन पर गवनमट व अत्यासाग का अन्न नहीं है। तब क्या हागा ? लडके पनाई कसे करेगे ? बान्न व पिता न महेगाई के कारण उाकी छ महीन की तनन्वाह नहीं दी। मन्मय न ता टीन ही कहा। ममार म बहुत-बुछ हाता है जा दिनतापी नना दना। इगी म म काई-योई आदमी तो अमीर हा जाना है। मन्नावन के पिता न ता म्बू टामटान वर ली है। इम महेगाई के उमाने म के एकाएक इनने बडे आत्मी बन हा गद ?

माचन-माचन दिमाग चकराने लगा। बेगार बाबू धीरे धीरे घर की आर लौटन लगे।



मरगार टकमी ड्राइवर एकमन स गाडी चना रहा था।

मदावत न कहा, "गाडी घुमा लो—घुमाआ गाडी।"

बहन-बहन मन्नावन विचारों म म्मा गया। अगानक बेगार बाबू का याग आ गयो। सच ही नो, बेगार बाबू नही एक तिन पूछा था—तुम्हार पिताजी की इन्वम कितनी है ? मन्नावन मुद भी नही जानना—उमर पिता की इन्वम कितना है ?

लडकी को जरा पहल रामविहागी एव नूर माड पर उतार दिया था।

मदावन ने पूछा था, 'यहाँ म कहीं जाओगी ?'

कुन्ती ने कहा, "पाम हा कानीपाट बनव है। बुछ रुपय बाकी है।"

'तब नुम रूनी कहीं हो ?'

'जादा गाँवो।'

गायद अनजान आदमी का पना बनाना नहीं चाहती थी। अपनी अगला हानत का परिचय कौन दना पाटना है ? कुन्ती का मरनन बरक गाता जाता है। उसरी बातें मुनकर सगना था—बम्बुनिम्नों स नारी

नाराज है। सिर्फ कम्युनिस्टा पर ही नहा, अमीरो पर भी गुस्सा है। कुन्ती का उदारतर उनी ब वारे मे मोचने मोचने सदाग्रत को और किसी बात का ध्यान हा नहा रहा। स्वभा बिधर जा रही है यह भी भूल गया। इतन बिना कतिज म पत्ता। उमा कतिज म भी कितना ही लडकियाँ पढनी थी। उमा म सिगा के भा साथ उमकी जान पहचान नही हुई। सायब वह मभा म बचकर रता था इमा मे परिचय नहा हुआ। सिफ लडकियाँ ही नहीं सभा स भा उमका क्या मलजाल नही था। बलास शुह हा के टीक पहच उमकी गाडी कतिज पटुचता और बलास सत्म हाते ही स्टार्ट हो जाता। यत् सायब बचपा की जादत था।

बाई-कोई उमका आर इगारा कर कहता—'घमडी !'

गन्धर्व का बिमा के साथ क्या मलजोल नहा बढाना भी लागे को घमडीपना लगता था। ता-एक न बातचीत करने की काशिग भी की। मिगरट बढायी। सायब उमकी गान्नी म बटन का लोभ था। उसकी गाडी म बटन उमा के पम म गिनमा देगना चाहा जसा मत्र कतिज म हाता है। कतिज गन्धर्व को आर म क्या बिपत् न मिलने के कारण ही सायब दास्ता रहा जम पायी। जोर लडकियाँ ? एसा नही कि लडकिया से बान पाने करत का गन्धर्व को इच्छा रही हुई। बलास म ही कई बार एक सटका के साथ जाँने भी लडी। लकिन वही शुह और वही अन। न जाने क्या एक मकोर गन्धर्व का आँवा मुत् और चहर पर छा गया। फिर कभी उम आर नही बडा।

जोर भी पत्त का बान है। उम समय गन्धर्व फस्ट ईयर म पत्ता था। उम दिन सायब स्टूडेंट-स्ट्राइक था। सय हुआ था कि मभी कतिज स साथ बरत-बरत मानुमत् के पीध जाकर इबटठ हाग। उम जुवुग मे लडकियाँ भी सामित हागा। सायब इमारित लडका म बहा जाग था। मभी जब कतिज कम्पाउंड म इबटठ हा गय तभी कुज गाडी सगर आ पटुचा।

एक सटकी त त्रिगहा नाम आज मात् रही है पूछा था जाप क्या हम लोग के साथ नही आयेंगे ?

गन्धर्व त समय मे गिमन्टर रह गया। बग मन ही मन यह कतिज ता बिना मे उमके साथ बात करना चाह रहा था कतिज पता रहा, क्या

हुआ उसे, जवाब तक नहीं दे पाया। किसी तरह सिर्फ 'नहीं' कहकर ही गाड़ी में बैठकर घर चला आया। बचपन में ही सदाप्रसन्न बड़ा गर्मोला था। अभी भी गर्मोला है, लेकिन पहले जितना नहीं। अब ता फिर भी कुन्ती का गाय एक ही टक्की में बैठकर उममें किननी ही घातें कर डालती किन्तु ही सवान पूछे डान, काफी उत्सुकता दिखनायी।

सड़का में से कोई-कोई पीठ पीछे कहता—'लाडला बेटा !'

गायद इतना दिना बह माँ-बाप का लाडला ही था। जन्म में उममें कोई भी बमी, कोई भी तक-तोफ नहीं हुई। अब लगता है कि दूसरे सड़का की तरह अभाव की जिन्दगी ही उमके लिए अच्छी रहनी। उन लोगो की तरह आवागमर्दी करत घूमना ही उमके लिए अच्छा होता। तब उस इम नयी दुनिया का आमने-भामने खड़े हात यह भिभक नहीं होती। बस भी आज मधुगुण लन में गभू का बन्दब में नि मकाच बठा हाता। तब इम तरह कुन्ती का मडक के मोड पर उतारकर जम आफत टन गयी नहीं माचना। बदार बाबू के अलावा और किसी भी टयूटर में पढन पर उमका यह हाल नहा होता।

'किधर जाना है, मा ब ?'

सदाप्रसन्न अचानक जम माने-से चौंक पडा। इतनी दूर तक अपन पिछन दिना की याद में इतना ग्याया था कि पता ही नहीं रहा किधर जा रहा है। सदाप्रसन्न न बाहर की आर दवा। दमने पहने कभी इन ओर ता नहीं आया। गायद यही टालीगज है। दोना आर टीन की चालियाँ और सपरन के भापडे। यहाँ जो लाग रहत हैं व ही शायद शरणार्थी हैं। रामन में और मडक पर उह दना है। पानिम्नान बनने के बाबू में ही य लाग आ रह हैं और गहन की भीड बड़ रही है। य ही लाग जुलूम निकानते हैं मडक और रामन गन्द करने हैं गडबड करत हैं। अगवारा में वह इन्ही नागा के बारे में ता पडता रहना है।

सदाप्रसन्न बहटा हिन्दुस्तान पाक चलो।

टक्की घूमकर उल्टी आर उलने मगी। टक्की डाक्टर का नी गायद बरा आम्ना हुआ था। बाबू बहवाबाद में एक सड़की का गायद निय आ रहा है। फिर एक जगह उम उतार भी दिया। क्या ता बगया और क्या

ताराङ्ग है। मिफ कम्युनिस्टा पर ही नहीं, अमीरो पर भी गुस्ता है। कुता का उतारकर उगी बच्चे म मोचन गोचन मत्पत्रत को और किमी बात मा घ्यान ही नहा रहा। टकमी किघर जा रही है यह भी भूल गया। इतने मिफ कानज म पडा। उमरे कॉलेज म भी बितनी ही लडकियाँ पन्ती थी। उनम म मिमा क भा माय उसकी जान पहचान नहीं हुई। गायद वह मभी म बचकर रत्ना था, इती म परिचय नहा हुआ। मिफ लडकियाँ ही नहीं नडका म भा उगना ज्योत्न मलजाल नहीं था। बलाम शुभ्र हान के ठीक पहले उगकी गापी कनिज पहुचती और बलास स्वत्म हाते ही स्टाट हा जाती। यह गायद बचपा का आन्त था।

कोई-नाई उमरी जाए इगारा कर कहता—'घमडी !'

गन्धन का किमा क माय ज्योत्न मन्जोल नहा बडाना भी लागो को घमडीपना लगता था। दा एक न बातचीत करन का कोशिश भी की। मिगरट बढ़ायी। शायद उमकी गाडी म बठने का लोभ था। उमकी गाडी म बचकर उगी क पम म मिममा ज्यना चाहा जमा सब कॉलेजा मे हाता है। लेकिन गन्धन की आर म ज्योत्न निपट न मिलन के कारण ही शायद शोणा उता जम पाया। जीर लडकियाँ ? एसा नहीं कि नडकिया म बात चीत करन की गन्धन की सहा नहीं हुई। कनास म हा कईबार एक सटका के माय आगे ही नडा। लेकिन यही शुभ्र और बही अन्त। न जाने कगा एक सत्ताच गन्धन का आगा मङ्ग और चन्डर पर छा गया। फिर कभी उम आर नग बडा।

और ना पन्ड का बात है। उम समय गन्धन पम्ट ईयर म पन्ता था। उम तिन गायद स्टुडन्ट-स्ट्राक् थी। तप हुआ था कि मभी कनिज स माय करन-करना मातूमत क नीधे जावर इन्टर् हाग। उम जुनूग म नड-कियाँ भी दासित हागा। गायद गगातिर नडका म बडा गान था। मभी तब कॉलेज-कम्पाउन्ड म इन्टर् हा गय सभी कुज गाडी लकर आ पहुचा।

एक सत्ती १ त्रिगवा नाम आज या नही है पूछा था आप क्या हम गागा क माय मगा जायेग ?

गन्धन तम मे निमन्कर रह गया। वग मन्जी मन यह बितन हा तिन मे उगए गय बात करना पाटू रहा था लेकिन पना नडा, क्या

हुआ उसे, जवाब तक नहीं दे पाया। किसी तरह सिर्फ 'नहीं' बहरर ही गाड़ी में बैठकर घर चला आया। बचपन में ही सत्कारत बच्चा शर्मिला था। अभी भी शर्मिला है, लेकिन पहले जितना नहीं। अब तो फिर भी खुशी में माय एव ही टकगी में बठकर उमने जितनी ही बात कर डाली। सितने ही सवाल पूछ डाले, काफी उत्सुकता दिखलायी।

सहका में से कोई-कोई पीठ पीछे कहता — लाइला बेटा ।'

छायद इतने दिना वह माँ-बाप का लाइला ही था। जन्म में उम कोई भी कभी कोई भी तकलीफ नहीं हुई। अब लगता है कि दूगर सहका की तरह अभाव की जिन्दगी ही उमने लिए अच्छी रहती। उन सागा की तरह आवारागर्णी करत घूमना ही उमने लिए अच्छा होता। तब उस इम नयी दुनिया के आमने-सामने लड़े हात यह भिन्न नहीं होती। वर भी आज मधुसुप्त लेन में शम्भू के बनव में नि गवाच बठा हाता। तब इम तरह खुता का सहक के मोह पर उतारकर जैसे आपत टल गयी नहीं माचता। बदार बाबू के अलावा और किसी भी ट्यूटर में पढन पर उमरा यह हात नग हाता।

'किधर जाना है सा'ब ?'

सत्कारत असारक जग मान-में चौक पडा। इतनी तरह तर अपन पिछर निना की याद में इतना माया था कि पता ही नहीं रहा किधर जा रहा है। सत्कारत न बाहर की ओर दगा। इममें पत्तन कभी इम ओर ता नग जाया। गान्त यही टानीगज है। दोना जोर टीरकी चानियाँ आर सपत्तन क भापन। यहाँ जा लोग रहने हैं य ही नायद गरणार्थी हैं। गान्त में और गन्क पर उत दगा है। पाकिस्तान बनन क बाद में ही य सात जा गत है और गन्क की गीह बढ रही है। य ही लोग जुनूम निमानत हैं, गन्क और गान्त गन्क करत हैं गहनक करत हैं। अगबारा में वह इही गागा क बार में गो पढ़ना रहता है।

सत्कारत न करत 'किदुस्तान पाक करत।

टकता घूमकर उल्टी ओर बनन सगी। टकगी गान्तकर का भी गान्तक रंग अचम्भा हुआ था। बाबू बहूबाजार में गन्क सटकी का गान्त निय आ गता है। फिर एक जगत् उग उतार भी निया। क्या गो बगया और क्या

जाकर दिया वह किमी भा तरह् ठीक नज़ा कर पा रहा था। और फिर
गंगा दूर टालीमञ्जकी ओर ही क्या बढ़ता रहा। जब फिर वही कालीघाट,
जिधर म आया था।

रामविशारा एवमू क माड पर एज जानी पहचानी मूरत देखकर सदा
ग्रन चीर उठा। ता कुन्ती अभी तक यन्ती ही है। भाग पास और भी बहुत
ग जागा की भाड है। वे लोग पना नहा किम बात का नेकर बहम कर
रहे थे।

पुत्रपाय क पाग गाड़ी रकत ही कुन्ती की नज़र भी उम पर पड़ी।
गणप्रत मह निराकर गणप्रत न पूछा 'तुम अभी तक खडी हो ?

इस तरह म पणडी जाएगी—कुन्ता न नही साचा था।

गणप्रत न फिर पूछा, अभी तक घर गही गयी ?'

कुन्ती न गिर दिनाया, कहा नती।

कालीघाट कत्र जानवाली थी ? रुपय मित ?

नहा।'

तब ? इम तरह् अस्ता गडी हा ? घर नही जाना ?

कुन्ता न कहा मैं चला जाऊंगा आप जाइय।

गणप्रत ठीक नज़ा कर पा रहा था क्या वह। फिर जम डरत डरत
कना जाटा साँका ता काफी दूर है जाने म दर लगेगी।

इम पर कुन्ती न कना तबित जाऊँगा कस ? बग-ट्राम ता गब बन्
है।

गणप्रत न सटप की आर दगा। बग या ट्राम कुन्त्र भा नही है। 'क्या,
बग-ट्राम बन् क्या है।'

धमता न म गाना कना ?' टियर-भाग छोडी गयी है। करीब डड
मी प्राण्मी मर है।

गणप्रत न कहा तबित इम लोग ता अभी उगा जार म आय हैं। उम
गमय ता कुछ भा रहा था।

'उम गमय रहा था उम म भाग ही हुआ।

फिर तुम पर कन जाओगी

कुन्ती न जवाब नगी लिया।

मन्नात्रन ने जल्दी से दरवाजा गोल किया। बोला 'बठा, यही सब तब
मटा ग्यागा कहा और ही पहुँचा दू यहाँ तुम्हें जाना हा।

कुन्नी न आनाकाना नहा की। टक्की म बठ गयी।

म्यानका का आर से चना। उधर स तुम्हें घर छोड दूगा।

'नहीं, मर लिए बरार म इतना पना किमलिए मराब क रह
है ?

'इमलिए कितुम मुनाबन म हा।

कुन्ना न कहा मुमीबन म क्या म अकेला पडी हूँ मेरी तरह और भी
दानान मी आदमी मुदिकल म पडे हैं।

"नकिन उरेंता मी पट्टानना नरी, तुम्ह जानता हूँ इमी स तुम्ह
गाडी में बटा तिया।

'लेकिन आप मुझे जानने ही सिना है ? मरा क्या जानने ह ?
मिऊ मेरा नाम छोडकर मर बार म और क्या जानने हूँ

मदात्रत जरा मुनरगया। कहा यह जोर जानता हू कि तुम
अम्यचार क्या म डाम करती हा। और भा एक बात जानता हू

'क्या ?

'तुम कम्युनिस्टों म घना करती हा जोर बडे आत्मिया स टरता
हा।'

नकिन कुन्ना यह बात मुनरर हेंम नहा पायी। बसे ती उम्भीर रती।
मिऊ कहा, यह बात छाडिए आपका तकनीक करन एतना दूर तक नहा
जाना होगा। मुझे अगर देगाप्रिय पाक के पाम ही उताव हें ता बरी कृपा
रानी।

'यहाँ तुम्हारा बोन है '

मर एक गितेगर है।

पहने ता यह नहीं बननाया या ?

'यह बनान की उम्मत नहा हूँ।

मन्नात्रन न फिर नी क्या, नकिन अपन घर जान म तुम्हें क्या
आरति है ? मुझे डग भा तकलाऊ नहा हागा।

'नहा, फिर नी रान दीकर।'

'कनिका कि कही मैं तुम्हारा पता ? मालूम कर ल, यही बात है न ?

कुन्ता उचका नहीं नहीं ! आप मेरा पता जान लेंगे तो इसमें नुकसान क्या है।

कमा-कमा तुम्हें तग करने पहुँच मक्का हूँ न !'

मुझे तग करनेवाले लोग वही कमी नहा है। कितने ही आते ह।

मैं वाई पानगान ता हूँ नहीं।

तुम्हारे की वाई ज़रूरत नहा है। मैं किसी मक्का का मेम्बर नहीं हूँ मैं कामा देखता भी नहा हूँ जोर लकिये ता खर करना जानता तब नहा। आज का दिन नहर मिके ता दिन गभू के किये गया हूँ वह भी अपना ही ज़रूरी काम म

नमी कुन्ती न कहा मुझे यहा उतार दीजिए। देनाप्रिय पाव जा गया।

कामा गयी। कुन्ती मुझे ही ज़रूरत मानकर उतर गया। चाकी, ज़रूर चकनाह। तमस्यार।

मगर तब क्या तबिन तुमने अपने घर का पता ता बतवाया ही नहा।

कुन्ती ने मुझे मया। फिर क्या हमारा मसान आप लामक नहा है।

फिर भी जान ता लू पायें कभी किसी काम आ जाऊँ।

अगर तना हा है ता मुनिका—बसींग बा, अहार टाना, मक्का वाई नहा।

मगर तब ने कहा टान है पाँ रहमा, बहुत-बहुत मुकिया।

इसक बाँ और जगना करना अच्छा नहीं लगा। टकमा चक दा।

मगर तब ने पाँ मइकर दगा—कुन्ती एक बह बगन क पोडियो के अन्दर घुम गयी। इसक बाँ उगाँ और कुन्ती नगी पाव पडा। मगर तब ने न किये की लपार बडा न।

मगर तब का पता मारिँ दे पा। कुन्ती उगी के अन्दर जाकर गयी ह।

गयी। माट समझे के पीछे खुद को टेंक लिया। मडक क आत्मो उमे नहीं देर सकते थे। एक गाय पुत्र पर आराम न बठी, आँउं बन्द रिय जुगाली कर रही थी। वानिग रिय दरवाजे क ऊपर पीनन की प्लेट म बेंगले क मालिन का नाम लिखा था। अंधेरे के कारण टीक-मे लिखलायी नहीं दे रहा था। कुन्ती काफ़ी देर वही खडी ग्ही। अब तक वह जा चुका हागा। फिर ननिक् बाहर की आर भाँक्कर देगा। टक्की नहीं ह। चली गयी।

उनके बाट घीर घीर पोटीको से निकल आयी।

नहीं टक्का नहीं है।

फुटपाय पार कर कुन्ती मडक पर आयी। फिर मडक पार कर बम-म्योप पर आर खडी हा गयी। वहाँ और भी कई आत्मा खडे ह। उनम म कई उमकी आर तखनखरा म देख रहे थे। देखें। अब तक गायद धम भी चनन लगी हागी। काफ़ी दूर पर एक डवन डेवर लिखलायी दी। कुन्ती न गाहा अच्छी तरह महानकर निमी तरह आग की मीट पर जाह कर ही सी।



राजरा पाक की मीटिंग काफ़ी दर पत्र सम हा चुकी थी। जो नाग आम-नाग रत्न हैं, व हा पाक म धूमन आन है। आखिम से सौत्रन क बाट गाम का जरा हवाभागी भी होता भाय ही बिना पत्र का नमागा भी दमन का मितना। पहले म कोई खबर नहा मितनी। खबर जानने की किमी को गाग लिखम्पी भी न थी। मितना और ड्रामा दउन क निण फिर नी टिकट लेना हाता है। यहाँ तो बिनकुन की। किमी मिन कापेम का मीटिंग ता किमा दिन जनमथ की। कभी पी० एम० पी० का बुद्ध कभी आर० एम० पा० या पॉरवट प्लाक का बुद्ध। अनगिनत पार्टी, अनगिनत राय। मना निनिट्टी काकर करना चाहा है। ऊपर ग रर काई देग-मेवा करना चाहता है। मव गरीबों का नमाई करना चाहत है। ममी गरीबा क गुम-बिनन है।

कुन गाडी का पाक रिय निपन जगट पर मडा था।

गिक्कगाद बाबू अच्छा भापा दन है। पाक का मारा जनता उनक मारण म मत्रमुप हो गयी था। उनकी एक-एक बान म जन आग बग्ग

रंग थी। वह कह रह थी, 'जिन्गी व भाष सुलह हो सवती है, लेकिन मौत के साथ नहा। मौत की मौत नहीं हाली मत्यु अविनागी है'

जिग समय वह मच मउर उग समय पर काई माव रहा था नि नाराजी सुभाष बाग अगर जिंदा हाने ता वह भी इतनी आग नहा बरना मरन थ।

गाडी व पाग आन हा कुज न गाडी का दरवाजा खोल लिया। गाडी म बन्दर गिवप्रमाद बाबू न सानी की चादर पास म रख ला। बोल उन।

विर लहाणक धान बज।

जी।

मरा भाषण सुना ? चिन्ता सुना ? गुरु स ?

'जा ही।

य गवान गुना की बज का आन है। पर भाषण व बाबू बज का इन गवान का जवाब देना होता है। पर बार ही बाबूजी का भाषण उम अच्छा लगता है।

तऊ कगा रगा ?

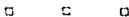
बहुत अच्छा।

गिवप्रमाद बाबू इना पर हा नहा मान। पूछा मरा अच्छा रगा या चिन्ता चीन्ती का ?

आदर हा जयान अच्छा था।

गमा मन म गुन रह थ ? चिन्ता न गडबड नहा की ?'

इगा मर व चिन्ते हा गवान का जवाब कुज का रना गना। यही रिम है। मर-बुद्ध अच्छा मानना जाता। कुज न यह माग लिया है। गिवप्रमाद बाबू की गाथा का इन्तजगी करने व लिए मर सत्र करना जरुरा है। नौरा मान ची गुनामा। बज विर माया रगे गाडी इन्तज करने रगा।



गानाजि जिग समय पर व गामा पहूना बाबा रान हा चुरी थी।

रव म गानबुद्ध निहामकर उगन गगा विग लिया। बत्तीग की

अहीर टाना, सिकण्ड बाई लेन। यह भी उम बार ही है। चितपुर पार कर उत्तर की ओर जाना होगा। बाई लेन—इसलिए जल्द ही काफी छोटी और सेंकरी मनी होगी। लडकी ने कहा था—हम लोग का घर जान नायक नहीं है। कलकत्ता में जान लायक कितने घर हैं।

टैक्सी रुकने ही बिग्या चुकाया, तैकिन मदर दरवाजे की ओर देखने ही चौक पडा। गैरेज में गाडी नहा थी। तब क्या पिताजी अभी तक नया मोट ? मोटिंग से क्या ओर कहा चल गय ?

तमा मां दिखनायी दी। देखने में बाड़ी परगान लगती थी। सदाब्रत को देखत ही बोली, 'इतनी देर कर दी ? आरकन क्हां जान ही ? उधर कलकत्ता में गोली चनी है इतनी रात कर दी, मुझे फिक्र मनी हानी ?

सदाब्रत हमेशा की तरह अपन कमर की ओर ही जा रहा था।

मन्दा ने फिर कहा 'तुम नी घर पर नहीं रहने क् भी बाहर जायें। फिर मैं किसने लिए यह गाम्ब्यी मन्हा न बँठी रहूँ ?

गाम्बत ने कहा, 'पिताजी मोटिंग में नहीं लौट ?'

'यान से क्या होता है। फिर निकल गय हैं।'

कहाँ गये हैं।'

"ओर कहाँ जायेंगे ? देना-नवा। अपने बारादार के लिए जायें, यह तो समझ में आता है, लेकिन कहाँ मन्नीपुर में बाहर आयी वह जायग। गाजा में बौन जाने क्या हा रहा है वहाँ नी जायेंगे। घर में एक नडका है उमका भी यही हात। फिर मैं किसने लिए घर की चौकीलाग क् ?'

"लेकिन पिताजी को क्या बिना न बुनाया है ?

'उन्हें सबर दनवाने लोग की कता कभी है। पूजा करत टटे ही थे। मैं गाना परोस रही था तभी टनाजान आया—पता नया बिधानराय, अनुत्प घोष मा प्रफुल्लवद्र बिगत बाने का। दम एकाएक चल गय।

गाम्बत ने और कुछ मनी क्। धार धार मोटिंग चक्कर ऊपर चला गया।



अब चितपुर। गहर की यह एक ग्राम ओर उमगा उमगा है। बिधानराय, अनुत्प घोष मा प्रफुल्लवद्र बिगत बाने का। दम एकाएक चल गय। गाम्बत ने और कुछ मनी क्। धार धार मोटिंग चक्कर ऊपर चला गया।

मग नी बिना मान काम नही चलता । चितपुर राड जहाँ बीडन स्वरायर क
 बाग गाथी उत्तर की ओर चना जाती है, उमा के आम-पास क इलाके की
 बाग कर रहा हू । तिन क समय यहाँ जाकर बुद्ध भा पता लगाना मुश्किल
 है । पाँच दूगर बाजार का तरह इमक पास भी जाडाबाजार है । मडक के
 पोना ओर बरतन दूकरा जोर तम्बाकू या हारमोनियम-तबल की दूकान ह ।
 ताम-बन की गिणिया १ बापर तावन पर दाना जोर एक-दूसरे म सती
 ताइन ना-नाइन दूरानें गिलामा देगा । वम उनम काई पास बात नही
 है । या ता मान चीना की नहा ना हुनके गुडगुटा, चना मुरमुरा या हार
 माणियम-नरना का थिनी हो रही है । मारा व मडा, मूया चीजें । लकिन
 रात को यह जगह रगात हा उठती है । तब इन जगह का बेहरा ही बन्द
 जाता है । मडक के दाना जा मारा फुटपाय और उम पर चलते सकडा
 चारा पाग ।

पन्ना मजिम पर पागा की नीच । लकिन दूगरी मजिल पर ?

ठगू ठग ररना द्रामा का आराज क बाच ही अखानर हन्ता मचता—
 गया गया-गया

चारा ओर स भीच आ नमता ।— क्या मात्र, जग-सा और हान
 पर द्राम क नाच जा जान न ! इम तरह ऊपर की जोर ताकर चला जाता
 ? ? तग मग-गुनार चना कीजिए !

उम ओर का मुरग ग गिणियाट्ट की आराज आती । लडकियाँ
 पहना चारा

मुरग चना ही टार पागा ! उगा सुरग क रात एक-म सीधे नार
 का माप पर नरन या बुद्ध का स्वग ना मानने है तब पहुँचा जा सरना
 है । जो पदुचन है व ना हाणियार पाग है । लकिन रात क समय टीक उमी
 हाण म गाथ उनका मारा गिणियार न जान कहाँ गाथ हो जाती है ।
 म गीन है कि काई-नाई आमी द्राम या बग का चपट म आन म बच
 पाता है । लकिन काई जोई मारमुच चपट म आ हा जाता है । और तब द्राम
 दग-दगगा ल भैगागाधा की क्कार लग जाता । तब ऊपर की रतिग से
 मरकर मभी नीच का नमाग दसन है । ऊपरक लोग नीच की ओर
 लगन है और नीच क माग ऊपर की ओर । ऊपर की माग दगो-मन

ये बार्द-बार्द गिर भुजाये तीर की तरह सुरग व अदर जा घुमते ।

लखिन पसरानी व पयट के बापड़े-बानून दूमर ही हैं ।

पसरानी पुगन जमान की ओग्त है । कहीं तीन चौयाई गुजरसर यह चौया आ लगी, अनोतर मूछ दक्कर जाग्गी नहा पहचान पानी बेग, जोर तुम नाग आग्गी पहचानागी ?'

दूमरी मजिन पर मीठी व मगर ही पसरानी का कमरा है । परग उगत ही वही म एकम मदर दरवाजे तर नजर जाना है । चाहन पर मर पुत्र दवा जा मरता है । मुह दरवाजा गुनन स नेकर गन के एक-ए वजन—बर्न, बर्मी रात व तीन बज तर भी मदर दरवाजा खुला रहता है । जिनी जिमी जिन तो बन्द ही गहा हाता लेकिन कुनकीवाला हा हा, या पूनवाता हा हा, या गुडा ब्रदमाग, गिरकट ही हा मभा नजर जान हैं । एक बार चेहरा रगत ही पसरानी आग्गी का पहचान नहीं है । उठकिया का भी यही मिनवानी । कन्नी—बाठकी बिल्ली हो या मिट्टी की पर-याग ता बेगी, चूहा पक पाना भी अगली चीज है ।

पानी रगर मिनने चाहिण । पसरानी गुन भी पा का लम अच्छी मर न जानती । हा मुग्ग म जोर भी कितनहा मरान हैं । मरान भी कम नग हैं सठकिया का भी कमी नग है । एक बार जान फेंकन ही मग भर जान की तरट । उठिन जा नाग यही रगत हैं उनम म वह अग है । जा लोग यही आन हैं व भी जानन हैं रि यही पमा ही मर-कुछ है । पगा फेंक, मरपट शानिर करारर ममान म मुह पादन घर घन जान हैं । लखिन गातिर एमी करना होगी नि लौट फिरकर यही आना पने । एग बार तो पसरानी व पयट म आता है भूतकर भा और कहीं नहा पकता ।

पसरानी इमी म मरता मनाती हुई रहती—पेंरा बौड़ी, गाआ पी, गुम का परग हा राजा '

और जगट जो हाता है यर्ग नही चरता । सभा का मामूम है रि शक्तिग गराव नाम की चीज मित्र पसरानी व यर्ग ही मिनती है । पसरानी पना पकटती है लेकिन नमरकतगम नहीं है । कहती है— मैं पमा गुनी, अमना मान दूगी बा म तुम्हारा धरम तुम्हारा मरा धरम मग । आर अगर मैं तुम्ह टानी हूँ बन तुम मुझे टगेग । तर तो मग माव भी गया

परलोक भी गया।

पाम म हा मुफ्त की दफान है। मुफ्त बेंकडे की भुनी हुई टांग और तिग्नी मछली का बनिया बड़ा जायकेदार बनाता है। दूर-दूर में खरीददार आते हैं। बांच व गा-नेम म माल मजानर रखता है। देखते ही तार टप बन लगता है। जबकि भाव एवदम सस्ता है। रात के समय ही ज्यादा भाट राना है। फिर भा काम-बाज के बांच ही किसी तरह ममय निकाल पस-गती व कमर व मामन आरर आवाज दता माँ।

कौन मुफ्त ? क्या बात है बेटा ?

टगर दीनी व कमर म ताला लगा है। गायद टगर दीनी है नहीं ?

क्या ? तरा कुछ पसा बाकी है क्या ?

मुफ्त बटना हाँ माँ यहा कोई तीन रुपया छ आना बाकी थ।

‘लविण पसा बाका छोड हा क्या ? पसे भी क्या वभी बाकी रखन गहिण बटा । तुम लाग रमान चेहरा दगन ही राव-कुछ भून जान हो। एम लादा म बाकी रखर बोइ काम करता है ? मैन तुभम पहन हा क्या था बटा ।’

मुफ्त फिर भी गडा रहता। पूछना ‘क्या टगर दादी वहाँ गया है ? आयगा नहीं ?

आयगा नहीं ता जायगी वहाँ बेटा ? यही जा वासती थी न मन्त्रह मन्तर कमरे म अब बारठ नम्बर म आ गया है पहचानता है न ? हाँ तो, पं वासता ही एक दिन मिजाज तिगाजर बुनबा बसान चली गयी थी। बर्ती था—स्या बरक बुनबा बमाजेंगी। मैन भी कह दिया—ता जाआ त बटा एग्गी म क्या-क्या मुग हैं बुनबा बसापर दग आआ त। हाँ तो, लयी भी। मैन मांग म निरूर भर लिया। दोना का आशीष दिया। दा मान पत्तहाला म घर लहर रहा। फिर एक दिन कान म एक बच्चा दवाय गता बिपगनी आ पट्टेचा—गमन गया, पिरोत पूरी हा गया है।”

य मय पुगनी बानें हैं। य बिमम मुफ्त भन ही न जान, पर और सब बिगदणन महहिपी जानती है।

अगर कार पूछा— फिर ?

तब पधरानी बहती—'कि बस ! कि यह पधरानी का पनट ही जानरा था—जगई मौ रूप का पनट नुत्सान सट्टर डेड मौ रूप म थिया तब पट पन रहा है। इतीनिए ठा वासन्तो म अब बहती हूँ—गूबया त्म माग माना नहीं जानती, बडा ? जानती है। साती क्या नहीं ? बन्तू है शगिया

पधरानी का बाउं कुछ भी हा मुनन सापव हाती है। सारे तिन अपन कमर म गाट पर बडी-बडी पनट चलाती है। मिस्जान एक गाँदरेज की आनमारा है उममे रूप रत्तर पलन म बाबी बापनी है। और काम हा या न हा, बिन्दू का पुकारती। कानी—बिन्दू ! आ बिन्दू !

पधरानी का नरोसा है—बिन्दू। बिन्दू हा पधरानी क लिए माना बनाता है। इती बडी गट्थी मम्हालती है। एक दरवान है वह नाम क नि। वह कब बही रहता है काई नहीं जानता। वास्तव म बिन्दू हा सब ताग की दोनमाल करती है और पधरानी के ह्वन की मामीन करती है। पधरानी क कमर में टमीडान है। जगानतर एसे ही पढा रहता है। मानिव बार कमी टादम पान है तो टेतीफोन करत है नहीं छो नहीं। उँ भी कितन ही काम रहते हैं। बीच-बीच म दारोगा-पुनिस मिशादिया का फोन आता है। वे ताग त्रिन दिन आनवाल होते हैं उमन पल ही पधरानी का हागिपार कर दत है।—'बातन बगरह बरा मम्हात क रगिएण, हम आ रह है।

मा पधरानी के पनट क सामने ही बासर हाडिर हुआ जॉज टाम मन (इदिया) ग्रावट निमिनेड आडिन वे रित्रिगन कनब का मेन्टेरी तुनन मापान। साथ म या अमिस्टेड मन्टेरा। बदल पाग और उसका माया मजय। मजय मरवार। मजय क उम्ब-म्ब घुपरात बात हैं। गजब की वाट किया है जानमगी औरेंदरब म। मधानॉजिवन, मिष्टागिवन मंगल कियो नी तरह का नाटक बाकी नहीं छोडा।

दुनान मापान जग जानाकाना कर र्छा था। तैरिन ऑजिन मे निनवर आगिर म तीन। ही नाथ ही निय। ड्रान मे उतरकर गात्रन गोवत नीता ही अगरी जगह आ पूवे। जरा जरा म नी लय रहा था। निध भी रह थे। तैरिन फीनेन गोन क लिए अब बिना फीनेन निय

काम नहीं चलाता ता शता साचन स क्या फायदा ।

अमल न बटा धत्तेर का, यह वहाँ ल आया तू ? यह तो रडियो का मुहना है !

मजब न कहा उसन क्या हुआ ? हम लाग बोई दम काम स तो आय रहा है—हम लाग तो आर्टिस्ट रोजने आय हैं ।

दुवाल गायाल तनिव गम्भीर आदमी है । हाथ म एक पाटपालिओ बग है । उमम पठ बाट्टेक काम साथ ल जाया है । कुछ नबद रूपम भाई । अगरे एडवान मांग पठ ।

दुवाल गायाल पूछा कौन सा घर ।

मुपन अपनी दूवान पर बठा गोग का घुघनी पका रहा था । मिथ मगाना और प्याज डालकर एमा घुघनी बनायी है कि सौंरी-सौधी मुगध म सारा घोट्टी गुनजार हो गयी है । घुघना उतारकर पराँठ सँकना मुफ करेगा । दम मुत्तल क रहनवाल बधादानर रात को राना नही पवाने, मुपन क यनी की चाट और पराँठ साथ ही गुजर कर लेते हैं । पसरानी क पत्रट क अधिसाग किरायनर रात को राना पवान का समय नही पान । बाबू सोगा क पम म गाना यमून करन हैं ।

मुपन न घुघनी बतान-बतान हा कहा गार जा तो अन्दर जाकर पूछ आ स्मि बरी कितनी जत चाणि ? और टगर क कमर का ताला अगरे गला हो तो आनर मुभ बताना ।

क्या ताइ यहाँ पघरना का पत्रट कौन-ना है बता सकत है ?

मुपन ने मुक्कर दगा । उम बाव करत की फुरगत नही है । बदली छया है नानी भीनी हया एग ही जिा म बाबू सोगा की भाड बसागतनर राना है ।

पघराना का पत्रट ।

मजब न तीव म दगा । धदर दगत हा पहचान गया, आकिग क बाबू है । पना करव मडा सूटा आय हैं ।

दहाई एधर क मन्द दरवाज म अन्दर चल जाइए ।

संविन मुत्तल का जग गलाय नही हुआ । बाता 'एक बात बताने मका हा भाई तुम ना यती क रहनगत हो । हम लाग एक काम

काई देनाई, मकड़ा

सु आय है।

क्या काम है कहिये न

“यहाँ बुन्ना गुग नाम की काई एक्केन ? मनवर नाटर बगर म
काम करती है।

बुन्नी गुग । मुख्य मनी उडकिया का पञ्चानता है। बाना नाटक
करती है ? नहीं बाबू नाटक ता काई नी नग करना नाटक बगनवागी
काई लडकी यहाँ नग रानी यर ता गुगव उडकिया का मकान है।

अमन न कहा सुगव उडकी हान म करा बिडना है ? हम पन
देगे पाट करक चता जायेगा। रम नाम की काई नाकी है या नहीं

मुख्य न कहा मैं ना टना मव नहा जानता। हाँ आय ना म
पूछ में।

मी ।

मुख्य न कहा हाँ उम दरवाड़े म सीधे अन्त चन जाइए। अन्त
कार जान की सीधी है। माडा म ऊपर चक्कर मामन ही देगे पन्ना-नग
एक टरवाडा। वहाँ पूछ लता।

मजब न क्या तुनातग तुम योग न जागे बाहर ही मर रग म
बकना ही जाना हूँ।

नेकिन धीर धा नीना हा जग धुन। अन्त जग-गुग मकान
था। इटा का पत्ता जान बौब म एक नाम प तकिड बन्व मन
रग था। अग्न के कान न धुआँ जा था। उन जाग ताग गाधि
है। नल-पागाना मव-कुछ। एक बिन्ना प कुमडग घुनवाव बडी प ।
दूमग मयित प ना हर जाग ताग-न-जान बमर प। कुछ बमरों क
गवाड़े बग प। किना किना बमर ग हाग्मानियम और घुपग्रा का
आपाव आ रहा था। नाँ कट आ चकाग तिछ मकरा म न रग। एक
मदका माडा पर रति के मगर मनी-नगी निग प ग थी। अगे चा
हान ही मुकवर दगा। बोना आन न।

तुनात मापान न क्या मबगार अमन आर मत दगा।
‘कौन है ?

नाँ कोई अगत हाप में क्याग निर रसाईपर की आर म द्र

पायी ।

'दुगी मे पूछ अमल ।

अमन आग बढ़ा । पूछा बयाजी, तुम लोग क यहाँ कोई कु नी गुहा
हना है ?

त्रिदू म गरम हुआ भी है मह मानना हागा । बाएँ हाथ से बन्न की
जाता जरा सम्हालकर ठीक की । मुँ जरा ढँककर कहा "आप लोग माँ से
दिया ।

एबिदू नीत है री ?

पचराती ने गाय ऊपर म सुन लिया था । परन की सन से सब
पाना है ।

बिदू न ऊपर चपन चढ़ते कहा माँ ये भल आदमिया के लडके आय
है पान नहा किम सोज रह हैं ।

फिर दुनात की ओर दगवर कहा, आइए आप लोग ऊपर
आता ।

उप आदमिया की आवाज सुनकर और भी कई लडकियाँ रेलिंग क
पान आ जुगी । एब-दूगर के ऊपर गिरती-पडनी सब की सब हँस रही
था । मजब एक्टव उसी ओर दगता सीढ़ी चढ रहा था । धोना, अरे
पाना मज हँना दान पर मक्की बठ जाणी ।

गाय-हा-माय और नी जार की तिलगिलाहट । उनम एक शायद
काजा बचन थी । बाना 'चपर आइए न मक्की मारत की मशीन हमार
पान है ।

दुनात गायाल भी पाछ पीछे ही था । डाँकर बोना, "ए सजब,
मबरनार मडात मन कर ।

उप मर पचराती का कमरा आ गया था । त्रिदू ने अन्दर धुमकर
पान उठा लिया । फिर रहा माँ य साग आय है ।'

बरा धरा मुम गागा का कमी धारिए । बहने-बहते धारपाई पर
धर ही-धर पचराती न बन्न पर की गाडा का सम्हाला । बोली, "तुम लोग
येगा धरा बिदू । जरा कुगियाँ गीच गा तो ।'

दुनात गायाल बैठ नहीं पा रहा था । अमन भी कुछ ठीक नहीं कर

पा रहा था। वह भी गुंडा था। लेकिन सजय बड़ चुका था। कमरा काफी तरलीव मे मजा था। चारपाई व नीचे एक काँच की पीकदानी रखी थी। माग कमरा अगरपती की गध मे मट्टन रहा था। गिल्लीना स मरी काँच की आलमागी रखी थी। दूध का प्याला हाय म लन हुए पधरानी ने पूछा 'तुम्हें कौन-सी पमाद है ? तीना क्या एक ही कमरे म बढेगे ?'

सजय ने कहा, "हम लाग कुन्ती गुहा की चाहते हैं। वही जा ठामा करती है—हम लाग नाटक खेल रहे हैं न।'

'नाटक ?'

"जी हाँ, हम लोग जॉज-टामसन (इडिया) प्रान्टवट निमित्त ऑफिस म आ रहे हैं हमार रिक्लिगन बनर की ओर मे 'जा एक दिन आदमा घे' नाटक मजा जाणगा। हम लाग हीरोन्त यात्र रह हैं। मुना है, आपक यहाँ कुन्ती गुहा नाम की बोइ लडकी है। उस हा सोज रह हैं।'

पधरानी न कहा, 'कुन्ती नाम की ता बार्ट लडकी नहीं है टगर है वागन्ती है जुधिरा है—लडकियाँ मरी कई हैं ममी दवन-मुनन म अच्छी हैं, चान चलन भी अच्छा है।'

सजय न पूछा 'लेकिन उहनि क्या कमी डाम म पाट किया है ? व नाग क्या नाटक म भाग ल पाएंगी ?'

'तुम लोग दग तान, तुम मागा व दसन म क्या बुराई है ? ओ बिन्दू खरा जा तो उन सजको बुला ला। वहना ऑफिस म भने घर क लडक आय ह।'

और कहन की दर नहीं हुई। चार-पाँच लडकियाँ गिलगिलतानी हुई आ पहुँची।

पधरानी न कहा, 'हाँ रा, टगर कहीं गयी ? टाप्पद कमरे म नहीं है ?'

'ती ना, टगर नहा है तो न गयी। यामन्ती है जुधिरा है गुनाबी है गिदू है। पधरानी व पन्ट की मगहूर मुल्कियो महकिय नेसन करली आ सदा हूँ। पधरानी के मामन विगा की खोनन की हिम्मत नहीं हानी। ममा एक-दुमर म सटी सारी थी। बनी बचनी लग रही थी। गुनाम मा पाव जा तो जग दम पुट रहा था। लेकिन पधरानी आर्मी

पहचानन म गनता तहा करती । बोनी, 'तुम लाग बातचीत करो न दूमरे बमर म जाकर एन लोगा म बात करा । बडी अच्छी लडकियाँ हु—मैं तो बटा माया-भागी बान पगल करती हूँ । भगी लडकिया बा भी वही हाल है । तभी ता एनग कहता हूँ मैं गुन दीवन ही रीमो जीर नमर पान ही राधा भरा नकिया के गुना बा पार नही पाजाग ।"

फिर जरा रुक-रूक कहा गुलाबी बोन न । बात कर न घेता । भन पर क लडक आय है आफिस म एन कर मनेगा ? य लाग रुपय दंगे, सान पा महन देगे—बात न ।

आगिर म दुतान मायाल का आर देगवर पसरानी ने कहा, "देग रह हा न बटा, एन लडकिया का एग रह हो न, ऐमी लडकियाँ तुम्ह सोना गाद्या म टन पर भी तहा मिलेंगी अच्छा एक काम करा, तुम जरा गुन हा एग गुलाबी क बमर म जाकर अवल म बातचीत कर लो भाव-तार करला लडका बडी नाजुक है । भर गामन बात करत गर्माता है । जा न गुलाबी बट को अपन बमर म ल जा न—जा ।

दुतान मायाल न कहा लेकिन हम लाग तो कुत्ती गुहा का खोज रह हूँ । गुना है बटा जग्धा एकिंग करती है ।'

बागनी तभी बाल उठा हम लाग क्या पगल नही आयी ? और कहन क साथ हा उमन आंग पिराकर एक बांजा-मा बटाक्ष निया ।

मजब एग रना था वह उठ गहा हुआ । बोला 'टाव है दुलाला मैं जरा टेग करव लगता हूँ आपन क्या पहल कभी प्ल किया है ?'

बागनी क कुछ कहन म पहने ही दुतान सायात ने टोरा । बाना, तहा रहने ला, बाई जरूरत नहा है । कुन्ना गन अगर होनी ता हम सोगा बा काम बनता ।

माँ !

तभी बाहर का आवाज का पहचानकर पसरानी बोन उठी 'ला टगर था लयी—आ बटा टगर यहाँ आ ।'

एन गारे अजाबियों को बमरे म दमगी कुत्ती न नहा गाया था । मबका एगवर जरा खोज गयी । पसराना न कहा, यह सो भरी टगर बगी भा लयी । गुट्ट पर पगल है बटा ? गिगलान पर यह तुम्हारा एन

कर लेगी। क्या रा टगर, बाबू लागा को ड्रामे के लिए लडका चाहिए—
तू कर पायेगी ?'

कुत्ता न दुवान सायान की ओर दगा। य लोग क्या उमे पहचानत
हैं ? फिर पछरानी की आर दावर कता 'मैं प्ले काना ना जानती नहीं
मां मैं प्य कर सकती हूँ किउन कहा ?

"कहगा कौन बेटा य लोग कुत्ता नाम की सिमा लडका का खोज रह
है। तो मैंन कहा कुन्ती नाम की ता काई है नहीं इनम म कोई पम्द रा ता
चुन ला।'

दुवान सायान और अमल घोष तब तक उठ गये हुए थे। बाले
"अमल म हम नाग कुन्ती का गानन जाय थे। मुना था कुन्ता गुना यहीं
रहती है, एमी पछराना के पलट म

कुन्ती का क्या एक सन्दृ हुआ। बाली, 'आप नागा का किमन
बनताया ?

"हम लागा की जान पचान क एक आदमी न।

कुन्ती न फिर पूछा 'आप लोगान उम दगा ?'

"उमका प्य गगा है कभी उमके माय प्य किया नहीं ह।

अमानक टनीफान की घटा बज उठा। चारपाद क पाम मे रिनावर
उठाकर पछराना न कहा 'ओ।

कुन्ती न दुवान सायान का आर घूमकर कहा 'नहीं आप लोग का
गनत छबर मिती है। कुन्ती नाम की एम पत्र म तो कोई नहीं है। यहाँ
मैं हूँ, मेरा नाम टार है इमका नाम वासना है उमका जुपिका बीर
उमका गुनाबी है। जीर जा हैं उनके कमरा म इन ममय महमान हैं।
गकिटा अनाव मम मे काई नहीं करता। जा नाग यही एग करन जान
हैं इम एग अपन कमर म बठानी हैं। अनी तब नहीं ममन पाए आप कि
यह कथाओं का काठा है।

दुवान सायान न और दगी नहीं की। जमन का गानना हुआ बाहर
घसा गया। मजय सायद तब भी अन्दर टहरना चाना था। बाता, तब
जाए ही बगिन न आपन ज्ञान म ही हम लोग का काम चर जाणा।'

बाहर मे दुवान न फिर आवज ली 'ए मजय, चना था।

गाय फिर नया रत्ता। बाहर नीचे व आंगा स भी कई लोगो की आवाज बान म आया। हो गवता है बाबू लोग ने आना शुरू कर दिया थे। अब पचराना व पनट व गुलजार हान का टाइम हो गया। अब मुख्य व दूकान स बॅंड की टांग, गोस्त की घुघना और मुगलाई परांठा का आना शुरू होगा। जोर उमर वान बजू का दूकान स बानला का आना शुरू होगा। फिर रात व आठ बान के बाद पचरानी के निजी भण्डार मे यारों निर्रोंगा। व दूमरा तरह की बातन। उम बोनल म माल व साथ गंभी मिता राना है। यह तुम जितनी चाहगे उतनी हा मिलगी। पचरानी सारा गन गल्पाद कर मरती है। फिर आपगी कुल्फी मलाई आलू त्रिफला और चाट पनीनीवाना तब आबगा बला का हार और जूड़े बचनवाना ओर तथा हारमोनियम और तबन के साथ शुरू होगा— चांद व आ चकारा तिरछा नजर म न दग।

पचराना न रानाकान रग व र मु पूमाया। बानती बगरह चली गयी था। बुना तब भा मडा था।

पचराना न क्या बयारी नहरी ले जिन स मरा पना ही नही है। बाबू लोग आकर सीर जान हैं। बान क्या है री ? मुकन के तीन रूप मडे छ आना बाकी रन छाड हैं ? जानिग हुआ क्या है तुम्हे ? बहती हैं घघा उग रहा है क्या ?

बुनो म मारी बाने गुना व निण ही गाय आयी थी। बोनी "मुपन व पन अभी जमा बराबर आया ह।"

और जुलाई व मरीन म मेरा बिराया बाकी पडा है गो "

'व ना जाया' — रहर पम म दम म रूपवे व दमना निरानकर पचरानी व हाप म निण— यह पन गो रूप आज बटा मुदिन मे ला आयी ह। म मदन दने रना म बा म और रना रा इतनाम बभेगी। मरा बाव बटा बामार है मा

पचरानी ने हाप व रूप मॉन्टेड की आनमारी म रगत हुए कहा मोई या बट्टे घप म मन रग लगाणी लो रूप वनी म आगे बया ? रूप बदा पट म बनने है ? और फिर मरी आर भा मा दगना गानि बया

टगर, मैं भी गरीब आदमी हूँ, मेरा दूध धी कहीं म आएगा ? इसके निवाय घर का टरकम है। तुम साग अगर किराया नहीं दोगी तो मेरी गुजर बस दोगी, क्या ? मैं क्या अब जवान हूँ जो इस उम्र म अपना कमर म घाटक बटाऊंगी ! तू अगर कमरा छोड़ दे तो मैं आज ही अटार्ड-मी स्पय म उठा दूँ। लेकिन मेरे तो बरम म ही नुकसान निभा है ! तुम साग ताबह दगुती नहीं हो। उम समय माचा था टगर की उम्र कम है अभी जरा जमा न। फिर खूब कमाएगी, बाद म ही दगी—तुम तो ममभंगर हो क्या ! माँ क बार म एक बार भी नहीं माचनी।

बुली न अपराधी की तरह गिर नीचा किये कहा बाप बीमार है इसी मे

“ बाप तो बीमार आज हुआ है पहन क्या हुआ था ? इस पहन तुमन कितन तिन गगाजल छिडककर दूकान खाना है जरा गिनकर बताओ ? ध्यापार नदमी है। वह नदमी ही अगर खचता हो जाय तो काग बार खिचना है ? भन भन घर क उडन आकर पूछन हैं—‘टगर कौन है टगर कहाँ है ? हाय, बचार दिल बहलान आते हैं जतरा मुँ नियो लोट जात है। देगजर तरग जाना है बटा। आनी नदमी का इस तरह ठुराना नहीं चाहिए। इस तमुहारा भला नहा हागा, यह बतना दना हूँ। समय ना बटा तुम मग कमरा खानी कर लो। अगई माँ स्पय म नयी नदरी खगा। अपना भी नुकसान मत करे और मुक्त गरीब माँ का भा नुकसान मत करे।

बुली न कहा, ‘अब मैं रोज आया करूँगा।’

पछरानी प्यार भर गवा म बानी, मैं तो तुम्हारे भन के सिग ही रहती हूँ। तुम्हारी माँ अगर जिंदा हानी तो यह भी यही रहती। यही तो गुनाबी है न। गुनाबी की गृहस्थी है मानिक है बच्चे बरब भी हैं। यह कम आनी है ? बटना कभी नागा नहीं करनी ? घर का काम काज निबटाकर बचना की गिना पिनाकर राउ ए बजे के अरर आकर दूकान गालती है। का मे रात के बाहू बजे या एक बजे ठीक घर घनी जागी है। मुक्त रहना भी नहीं होना। तुम्हारा तन महीना तक किराया भी बाका नग खगा घाटक भी नहीं लोयनी।’

तुन्ता घब रहा बुद्ध भा नहा वाली।

पछराना न दूध क बगारे म घट भरत हुए कहा 'मैं तुमन् यह तो नया कहता कि अपना उरु का मन बना बूढ़े बाप का मन रगना—याता रग आर रगार तिन तुनछरें उरुआ। यह ता गहा वह रगु बटा। तुम गुरम्भ परकी उडरा ना पर क लिए यहाँ आयी हा हावत अच्छा होन पर स्याह गाता बरक अपना गहम्या मम्हानगी। तुमन वह बरन का क्या गहा ना, बटा 'मैं क्या पिगाचह नहा उरु टगर एसे माँ-बाप स पदा ता हुरई हूँ।

अरकुता न बटा बई राउ म बग भभट चल रहा है, क्या बरु बुद्ध ममभ म ना नया जाता

पछराना न वाच मही गारा भभट किन नहीं है, बटा ' तिमरे भभट नहा है रग भभट र मारही ता उरी भन भल घर क लख यहाँ दोर जाव है आर वात मुह म गवर थाता र क लिए गानि साजन है।

कुता न बटा नहा पर दूगगा हा भभट ह—उगता है अब घर रगना हागा माँ।

क्या छाटना क्या हागा ? तिरावा ना दती ?

कुता न बटा मुगबिन ता यनी है। बन्ता का मवान टगर। दस रग रग तिरावा र रहा था। अर बई माल स बडाकर चौह दपन कर दिया है। अब गन है कि बन्ता मरम रगनी हागा अरकि उम मवान क पाछ मिन टा मी रगव गचें है। उगता स नया था जगता सगवाया है। बर दरवान आया था। बाना मरान छाटना हागा। छ मही का गमय रिया था अभी तर तिराव पर नहा छाता। अब मुता है गुणे मगावर बगता म आग मगश हगे।

कोन मगवाया ?

उगतर उमान का मानिस। बर-बट पर बनेगे, उगमे काफी तिरावा आगा। रग ममय मैं यनी मे आ रग हूँ।

पछरानी न बटा अब मरा बाप क्या बन्ता है ? उगता नीहरी है या रग रग ?

अचानक तनी मुफ्त कमर म आया । बोला, आज एग-बरा चढी
 गटपटा बनी है । एक पन्ट लाऊँ क्या, माँ ?

पछरानी न मुह बनाया ।

“तून बसा दिमाग बेच खाता है । तुम्हे पता नहीं आज पूनो है ? पूनो
 के तिन मुह गास्त मछनी अग बेकल कृद्य भी छून दगा है ? यह दग
 न, सीसता नहीं, गरम दूध पो र्ना हूँ ।”

किर जम अचानक याद आयी ।

“आ बिद्रू बिद्रू वहाँ गयी री, मरे तिए जग बात बा तन तो गरम
 कर ता ।

इसके बाद कुन्ता की जोर धूमकर कहा वर तिन मे बेगी, पाता नहीं
 पगा हा गया है कमर म एम चपा चवन है गीधे गढी भी नहा हा
 पाता । बदन उन दूर रहा है । अब दानी इ दिन पूरे हा आय ।

मुफ्त तब तर दूमर कमर म चना गया । उमर पाम बवन नहीं है ।
 कुन्ता भी गायद कृद्य और कन्नवाती थी कि अचानक किर म टनीफान
 की घटा बजा गयो । कुन्तीन कहा आज जानी इ माँ !”

‘बन आ रहा है न ?’

नी माँ बन में जस्त्र आऊँगा । बिना आय काम कमे चनेगा ।
 कन्नर माया कमर मे निकल गयी । पछरानी न टनीकुन का गिमीवर
 हाय म लेकर कहा, हाँ !



एक उम्या चीला धु प्रिण्ट प्जान टवन पर फलाव गिवरगात्र धारू
 मनभा रू थ ‘यह देगा यन्नवना की नाय-बन्ट माइड टुई, यही
 जारा माँगा, चिनपुर मर । एग जोर त्रिटी म कृद्य भी रहारण नहा
 हागी । रिमा दिन एभ्रूमट ट्रुस्ट अर हाय लगाव ता दूमगी बात है । मैं
 एग आर क बार म नहीं मार रहा हू । ईस्ट की अर अभी भा काऊँ स्थाप
 है । इधर मा० आइ० टी० गार क आन-याग दगा यह मेवक चानन है ।
 एर उग पार यह दगा गागी बजर जमीन पनी है—मार्गीउड । येगता,
 यनी नी एक तिन बन्नी हागा । एरन्न यनी विद्याधरी तब—यह हाव
 एगिया हा वाग्गव म अभी तक ‘पयानो’ पढा था । मरी ही नबर दम आर

मकम पहल पली ।

गनाप्रत चुपचाप सुन रहा था ।

जिम समय पाकिस्तान बना सभी के ता मिर पर हाथ था । रिपब्लिकी बा-आवर म्यानता स्टान पर जमा हा रहे थे । तुम डम गमम बाफी छाये थे । श्यामाप्रसाद बाबू और मैं इन सारी जगहा म घूमत् थे । अगर पार्टीगन नहा हाता तो मैं भी ग्रेटर बेलकटा मिटी अच्छी तरह स नहा लग पाता । उधर बट्टाजार का मारवाडी बम्बुनिटी न बाफी पमा दिया गवनमत् न भी बगडा रुपया गन किया । यहाँ जितना मस्जिदें थी, अधि बाग म रिपब्लिकी बग गय । जग्त् का अभाव फिर भी रहा । स्यालता का जोर मुगलमाना की जितनी दूकानें था उनम हिंदू लाग घुम बठे ।

इसबाद जग खबर बहा यह जानना तुम्हारे लिए जरूरी है इसा म कह रहा हूँ । आज तुम भी एक इंडियन सिटिजन हो, तुम्ह बोट न का अधिकार है—गा यू गुड नो । लेकिन आज तुम लोग दम रह हा बागमार दबुन बाग दबुन कितना कुछ हा रहा है । सना म्ठ तुम्हें जान सता बागिण । पाकिस्तान क न हात पर यह मव कुछ भी नही हाता—जोर अगर पाकिस्तान नही हाता तो मरा यह लड-स्पन्सूतगन भी इतना पनारिण नहा करता ।

गिबप्रसाद बाबू जम जोर भी उलाहित हो गय । 'सोचन हाग, रिजनम की बात म पॉन्टिक्म सबर डिगनगन क्या कर रहा हूँ ? लेकिन गुमो तो दरनामिक्म पना है । तुम जानन हाग राजनीति के माय अध ताति का कितना भय है ? प्राइम मिनिस्टर के एक सखर पर गयर मार्केट क भाग म पगा तजी मन्ग आ जाती है ? इम नड-स्पन्सूतगन का भी म्ग शय है । अगर पाकिस्तान नही हाता तो मरा रिजनम भी पनारिण नही करता । लेकिन पाकिस्तान आगिर बना क्या तुम जानन हा ?

बषदत म ही गनाप्रत को पिता के सखर गुनन की आगत है । आज भी जग यह छाटा हा । गनाप्रत छाट बच्चे की तरफ चुपचाप सुनता रहा

पाकिस्तान रिजन बापाया कुछ पना है ?

गनाप्रत न बाई जबाब नगी दिया ।

बगबाग म गम मग्त्-नरु का बागें पडागे । हिन्दी का सिताग

भा बहुत-बहुत लिखा है। मैं उस मद्र के बारे में नहीं कह रहा। असल में, मैं इनसाइड सर्किल में था, इसी में सीनेट जानना हूँ। पाकिस्तान को जन्म किसने दिया वही न। ब्रिटिश गवर्नर ने ?

सदात्रत न फिर भी कोई जवाब नहीं दिया।

'नहीं ब्रिटिश गवर्नर नहीं। तब किसने ? कौन ? महात्मा गांधी ? जवाहरलाल नेहरू ? सरदार पटेल ? मुहम्मद अली जिन्ना ? लियाकत अली खान ? मुहम्मद अली जिन्ना ? नहीं, नाज़िमुद्दीन सादत ? वह भी नहीं तो कौन ?'

शिवप्रसाद बाबू जम किमी ममा में भाषण दे रहे हैं।

'असल में इनमें से कोई भी जिम्मेदार नहीं है, इसका पीछे न हिन्दू हैं, न मुसलमान—पीछे है

बहकर सामन की ओर जरा झुक। आवाज़ जग धीमी की। बाल, 'मैं उस समय हाई कमान्ड के इनर सर्किल में था, जमली सीनेट तुम्हें बनाना हूँ तुम्हारा जान रखना जरूरी है असल सीनेट थी "

कौन जान क्या सीनेट थी। शायद कोई सीनेट होगी, लेकिन वह आपन नहीं हो पाया। अचानक टेलीफोन की आवाज़ में सब गोलमाल हो गया। शिवप्रसाद बाबू न रिस्पीक उठाकर कहा, 'हं, हं।'

फिर कहने लगे, 'हां हां, जग। दस्तावेज़, डीडम—मद्र मरे आफिस में ही हैं लाकन पुलिस का भाकट रगुगा। इनकी जिम्मेदारी भरी है। लेकिन मुझे उम्मीद है रिपब्लिकी नाम कुछ गड़बड़ उत्तर करेंगे। लेकिन जब डिप्टी हा चुकी है इजकामेंट आउट निकल गया है तब दखल करने के लिए मारपोट छाड़ उपाय हा क्या है ? जवम्नी कडा जब मासिन हा ही गया है समझ गया, मैं पपग लेकर अपन लडक को जापक पाम भेज रहा हूँ—हां, मरा लडका। उनको मारा बारबार समझा रहा हूँ और क्या। अच्छा नमस्कार।

रिस्पीक रफर आवाज़ में, "क्या, बड़े बाबू का बुला।"

हिमागु बाबू टबटान हडबडात अन्दर अग्य। शिवप्रसाद बाबू न कहा, हिमागु बाबू जावपुर की जमीन का जा पपग अपने आफिस में हैं वह प्राइव साइड जरा। मन्त्रत वह मय लेकर गोल्ड बाबू का पाग जायेगा।

हिमागु बाबू चले गये। शिवप्रसाद बाबू न कहा, 'तुम्हें भेज रहा हूँ क्योंकि

तुम्हें भी कुछ-कुछ ममक लेना चाहिए। अपनी पस के एडवोकेट गोलरु बाबू गानकबिहारी मरवार। उनसे साथ मुलाकात भी होगी, जान पहचान भी हो जायगी। हाँ जाणवपुर की बस्ती भी तुम्हें एक दिन दिखला जाऊगा। रिपयूजिया न उम जमीन पर मकान बनाने मौरसी पट्टा कर दिया है। जग गोचो उस प्लाट का अगर बेच भी दूँ तो इस समय कितना फायदा होगा। और कुछ रहा अगर कम किराया क पत्र ही बनवा दिये जाएँ तो भाँ हूँ मगने कम-भरम फिफ्टी ट मिक्स्टी परसेण्ट प्राफिट होगा। मगाने तो कह रहा था कि पाकिस्तान क बनने से अपना तो कोई मुशकिल रहा हुआ। तुम्हीं कहा न पाकिस्तान न हान पर क्या रिपयूजी करे आन ? और रिपयूजी लाग अगर रहा जाने तब क्या जमीन का भाव बनना बढ़ जाना ? तुम्हा कहो न—यह तो एक तरह से अच्छा ही हुआ।

सभा पादरें तिस दिमागु बाबू आ गय। गिरप्रसाद बाबू ने सारे पस तलाशने का तिलाक किया। फिर कहा 'वह तो और गोलरु बाबू का मकान जहारा टाता मम है। जहीरा टोना लन पहचानने हो न। और अगर तने म मानम ना बज जाना है। बज बतला दगा। जाओ! कुछ कहना तने हाग मिक पस द दना। वह मग हा सब ममक जावेंगे।

जारी गता। मलाप्रन जस गीक उता।

पादरें मगालकर उठ गता हुआ। बाना 'अच्छा!'

□

□

कुत्र गान जाह पर ही न गया। यह कितनी ही बार बाबू को यहाँ परीक मगने क मकान पर लाया है। इस जगह को अच्छी तरह से पत्रपालना है। गाम क समय तिनपुर राड पर ट्रफिक रुकासा रहता है। सडक मरगा है। उगो म ट्राम-नाशन। कभी कभी काफी समय के लिए ट्रफिक जाम हो जाता है। परिन बज सधा दृशा दृश्य है। मिजाज का भी ठहा। आग की मारी को ओवर-टेन करत की भी कागिन नहीं करता। वह मगम म गढो दृश्य कर रहा था।

'अच्छा बज

मलाप्रन कितनी गीट पर बग था। मकिन जम धार नहीं रोच पाया।

गाथा चनाते चवान ही कुत्र न पीछे मुडकर दत्ता । मन्त्रान् पृथ ही
बडा, 'जरीरी टाला मेकण्ड बाई लन पहचानन हा ?'

कत्र मव जानना है । इन्द्रव कत्र-कत्रन पकरा हा चुवा है । बोना,
'जानना हूँ छाट बावू !'

'पहले कवीन माहुर का घर पड़ेगा या मकान्ट बाइ उन पड़ेगा ?'

'मकान्ट-बाई लन पहल पड़ेगी । क्विन उम गरी म गाडी तो जा नहीं
सकी ।

मन्त्रान् ने कहा 'पहले तुम वहा चना । मुम एग मिनट म ख्याग
नहीं गगा । तुम ली क बाहर ही गाथो ना देना । मैं पदन ही जाकर
अपना काम निपटा आऊँगा ।

मच ही ना ख्याग टादम गन की बान ली क्या है । एमा बाई
मान वाम ता है ना । मरु अनावा जत्र एक्किग करनरानी लडकी
थै ना राही जामिदा का आना-जाना नी जगा थी । फिर नी लडकी न
कच था—कच घर जान लायक नहा है । गावद किंगी पुरान टूट पूटे
मरान म ना पत्र कचर लकन रखा गगी । लमन गम की करा बान है ।
जबकि रिचनगरा म बाइ-बोइ रहे आगमो भी हैं । ठग गिन रात्र का
रैकना म ठगरकर जिन बंगन क पाटिका म गयी, वह ता बाइ-बोइ आदमी
जान है । उनका मक का घर न भा ना वह मजान किराय का ही हा तत्र
भा कुछ कम नगी है । कम-मे-रम प्रदाइ-मी गय रिगवा ता दन ही हति ।
मेकिन मू एवनी गुगव क्या है ? लम गिन लडकी न काँकी मुनाश ।
कम्पुनिम्टा म नाराइ बडे नाग मे नाराइ । अनायदान है । कनकती म
नी कम कत्र नाग है ।

दना है मकान्ट-बाइ लन छाट बावू मरु अनावा गाडी नहीं जाणगी ।

मन्त्रान् न गाथा म बाहर निरनकर गयी का जाइ ताका । मँवरी,
प्रिय रिच । बावू मे भग टेग्य जावना । गाह्य का ही जन गाम
रखा था । गना बार का दावारा के प्नाम्टर म स ट्रे जम दौत्र गिमता
रग था । एक मूत्रना गुना । टाग्विन । नाते म पाम के मरान का मँटा
का मय महमट करन वह रग था । पीछे का और चनड क मूत्रग का
कारणता ए । गुनार की दूरान ।

मन्त्रालय न परिद मे नाट्युत्त बाहर निवाली । बसे पता याद ही या फिर भी एक बार मित्रा लना अच्छा हाता है । बत्तीस-बो, अहीरी टाना मण्डा-बाई लन ।

दावार पर नियम मकान-मन्त्रालय का दंगना हुआ सदाव्रत गला के अन्दर पुग गया ।

। L U

हिमागु बाबू पिछले मोनह माल से इग लड डेवलपमट सिंडीकट गिजिम म काम कर रह हैं । एक बार नया देगत ही समझ जात हैं जमान वसा है । पानी गता है या नही । जमीन डालू है या एकमार । हिमागु बाबू को यत् नत्र किमा न गिउलाया नही है । पहल एक वकील क यनी मनीगिरी करन थे । गिवप्रमात् बाबू उह वही म ले आय थे । उस समय जाफिम छाग था । क्तन बनक नही थे । हिमागु बाबू ही मनेजर अन्वी मर बुद्ध थ । गिवप्रमात् बाबू को आफिम दमने का समय ही कितना मित्रता था । गिजिम मन्त्रालय अभी जान ही वाली थी । हर ओर बददत जामा पची था । ग्यामाप्रमात् बाबू मन्त्र म मिनिस्टर हो गय । यार-गोस्त गभी मिनिस्टर नहा ता पार्लामन्टरी सत्रन्टरी । सभी न सोचा गिवप्रमाद बाबू भा कहा मिनिस्टर हा जायग । या ता मिनिस्टर नही तो स्टट मिनिस्टर, नही ता डिप्टी । बार बार लिखी जा रह थे ।

सर्वान बुद्ध भा नहा हुण । सायत गाचा होगा कि मिनिस्टर बनकर ही काम करेगे । साय म पगडा पहन चारामा घूमगा गाठी मिलगी हा मवता है माग तनगार ही मिल । घर क स्टवाड पर हर मवन लाल पगना का पहना रगता । अक्ति बम इतना हा । मिनिस्टर ता बम भी हाय म रहेंगे ही । बाप्रम पार्सी भी हाय म रहगी । पायदा अन्दर स ही होना है । फिर बकार म ग्याम गगात को क्या जकरत । टीक किया विग हान न विग मरर हाना कही अच्छा है । गिवप्रमात् बाबू वहा हुण । इपर आफिम का काम गिमागु बाबू न मन्त्रालय निवा ।

गिवप्रमात् बाबू न आम्तो अच्छा पूता था ।

अर्थात् महना और हिमाबा—हिमागु बाबू म तीन गुण थ । गिव प्रमात् बाबू लिखा न्य थ । हिमागु बाबू मन्त्रालय का कामवाज ममान

लग।

शिमामु बाबू वत्न, "य पुराना फाइलें पत्र पर दलिए।

एक गठर फाइल टब के ऊपर रख गये। पिताजी नहीं हैं। दूसरे दिन मही सदावन टार बकन पर आरिफ जा पहुँचना। मालिक के नाम पर अकता मंगलन था। गुरु-गुरु म पिताजी की चयन पर बटन जरा भिन्नक जाना। नताजी मुभाप राट की एक बड़ी विन्निग की तीवरी मजिन का एक पत्र। बीच भौकक दगन पर दिवनाया दना लान-की-नाइत गादिया और चीनी जम जानदिया की लातों। टार जय दीवार पर लान मंगलन चीन्टियां मर कौड का मान जानी हैं। और मिर पर भरी फाइल का म पत्राड और नगठकर मान किय नू प्रिट। चारा आर पेटेड गागा का पार्टीन। शीवार पर लान-की-नाइत फोटा। गाथाजा पर माडे बट है, जहाहरवाल नह माइफाफोन के मामन मुट्टी बांधे भापण कर रह हैं। किनी म गिरप्रमा बाबू डा० विधान राय के माय ताकिमी म यामाप्रमाद मुजर्जी के माय।

चारा आर फोटा श्वन जाने सदावन मायन रगता। अर-ही-अर म म जय एक धिया हुआ गव जाग उठता। वह भी ता हम मय का उत्तराधिकारी है। हा मकता है वह हम वस का लडका नग हा। फिर भा उत्तराधिकारी ता मका है। हमक गीग्व का उत्तराधिकारी हमर एचव का भागीदार। वह जय लकड़ी का पुतना है। बाद उम पुतने का काम चनाय के लिए मही बटा गया है।

एक फ्रान्स मकर मंगलत गुरु मे आशिर तर पर गया। जमान के गानदने मे गुरु कर बेचन लह। लकिन बुद्ध भी ममभ म नग आया। एक फ्रान्स और निरानी। उम भी बुद्ध जाने नहा पदा। जय मंगलन के को शम-वड पडिन। हमी कर्मगाने और नू प्रिट के मायन मे उनके जवन का जमून निरनता है। यनी जमून वक में रावर मपुचन का मण्टि करता है।

उम जिन वह और नहीं गव पाया। पूजा, अच्छा शिमामु बाबू हम गागा की परना काम निरनी है ?

किम धोड की दकम ?

‘इस फम की। मान हर महीन इस फम से पिताजी कितना ड्रॉ करते हैं?’

हिमाशु बाबू ऐसे प्रश्न के लिए तयार नहीं थे। फिर अपने को सम्हाल कर बोले, हम लोग की बलेस शीट है। अपनी बलेस-शीट हम लोग का ज्वाइंट स्टाक-कम्पनी के रजिस्टार के यहा सबमिट करनी होती है। मैं दिखलाता हू। अभी लाया।

सदाश्रत ने कहा ‘नहीं नहीं उसकी कोद जरूरत नहीं है। मैं जरा ऐसे ही जानना चाहता था। इस प्रिजनस से पिताजी की एप्रोक्सीमेट इन्कम कितनी है? आपका तो मालूम ही होगा।

शिवप्रसाद बाबू ही तो इस कम्पनी के मनेजिंग डायरेक्टर हैं उह अपन रोयस का डिवीडेंड मिलता है। इसके अलावा एक एलाउन्स है साठ चार सौ रुपय महीने का।

साठे चार सौ रुपय।

सदाश्रत ने मुट्ठे में कुछ नहीं कहा। सिर्फ साठे चार सौ रुपय। पिताजी की इन्कम इतनी कम है? इतना बड़ा मकान, यह गाड़ी, डाइवर, नौकर चाकर, महागज महरी—मब साठे चार सौ रुपय में। लेकिन कुज की तनस्वाह ही तो अम्मी रुपय है। और भी कितने ही खर्चे हैं। अभी तक उसका कॉलेज की फीस थी मास्टर साहब की फीस थी। फिर उसकी कित्तावा का खर्चा। उसने खुद ही तान जाने कितने रुपयो की कित्ताव खरीत डानी हैं। जब जा चाहा उने मिला। उसकी गाड़ी पुरानी हो गयी है फिर भी उसका खचा ता है ही।

हिमाशु बाबू शायद सदाश्रत के मन की बातें समझ गये। बोले, ‘अपनी फम क्या रिच ता नहीं है। इस समय उतना प्राफिट कहां हा रहा है? अब ता कितन ही लड स्पेक्यूलेशन आफिस हो गये हैं, कई राईवलकम्पनियों हो गयी हैं। पहले जसा प्राफिट अब कहां है।

सदाश्रत ने जवाब में सिर्फ कहा, ‘आह!’

‘इसी से तो अपन स्टाफ की तनस्वाह भी नहीं बढा पाते।

‘एक वनक का कितना मिलता है?’

हिमाशु बाबू ने कहा, जा देना चाहिए उतना नहीं दे पाता। वह जा

इस फम की। माने हर महीन इस फम से पिताजी कितना डा करते हैं ?'

हिमांगु बाबू ऐसे प्रश्न क लिए तयार नही थे। फिर अपने का सम्हाल कर बोले 'हम लोग की बलस शीट है। अपनी बलेन्स शीट हम लोग को ज्वाइंट स्टाक-कम्पनी के रजिस्टार के यहा सबमिट करनी होती है। में दिखनाता हू। अभी लाया।

सदाश्रत ने कहा, नही-नही उसकी काई ज़रूरत नही है। मं जरा ऐसे ही जानना चाहता था। इम बिजनेस से पिताजी की एप्रोक्सीमेट इन्कम कितनी है ? आपको ता मालूम ही हागा।'

शिवप्रसाद बाबू ही तो इस कम्पनी के मनेजिंग डायरेक्टर है, उह अपने शेयस का डिवीडड मिलता है। इसके अलावा एक एलाउन्स है साढे चार सौ रुपय महीने का।

साढे चार सौ रुपय।

सदाश्रत ने मुह मे कुञ्ज नही कहा। सिफ साढे चार सौ रुपये। पिताजी की इन्कम इतनी कम है ? इतना बडा मकान, यह गाटी डाइवर, नौकर चाकर महाराज महरा—सब साढे चार सौ रुपये म। लेकिन कुज का तनखाह ही ता अस्सी रुपय है। और भी कितन ही खर्चें ह। अभी तक उसक कलिज की फीस थी मास्टर साहब की फीस थी। फिर उसकी किताना का खर्चा। उमने खुद ही तो न जान कितन रुपया की कितानें खरीद डाला हैं। जब जा चाहा उस मिला। उसकी गाणी पुरानी हा गया है, फिर भी उसका खर्चा ता है ही।

हिमांगु बाबू शायद सदाश्रत के मन की बातें समझ गये। बोले, "अपनी फ्रम ज्यादा रिच ठो नहा है। इस समय उतना प्राफिट कहा हा रहा है ? अब ता कितन ही लड स्पेक्यूलेशन आफिस हो गय हैं, कई राईवल कम्पनिया हो गयी हैं। पहन जमा प्राफिट जत्र कहाँ है।"

सदाश्रत ने जवाब म सिफ कहा, ओह।

"इसा स तो अपने स्टाफ की तनखाह भी नही बडा पात।"

एक बलक का कितना मिनता है ?

हिमांगु बाबू न कहा जा दना चाहिए उतना नहा दे पाता। वह जा

‘नही कहा कुछ भी नहीं। पिताजी को पूछ रही थी। मैंने कह दिया दिल्ली गय है।’

हिमागु बाबू न कहा जोह, जब समना, शायद पाक-स्टीटवाली प्रापर्टी क बारे म बात करना चाहती होगी मैं ठीक से नहीं जानता। जप्रेज लोग तो जा रह है न अब सब कुछ मारवाडी लोग खरीद लेना चाहत ह।

मशरत न कहा “अच्छा जाप जाइये मैं फाटल दखू।”

कहकर जस हठात याद जाया। बोला “एक बात जोर हिमाशु बाबू उस वस्ती क मामले का क्या हुआ ? वही जिसकी फाइलें लेकर मैं उस दिन गोलक बाबू के यहा गया था ? उसका क्या हुआ ?”

उसका मारा इन्तजाम हो गया है।’

‘क्या इन्तजाम ?’

“वकील का काम वकील न किया। उहान पपस बगरह देल लिये है। हम नागा की ओर से कोई पला नहो है। जब सिफ बब्जा करना बाकी है।

बब्जा करना माने ?

हिमागु बाबू ने कहा ये सब रिपयूजी लोग यहाँ जाकर जम गये हैं। किमती उमीन है कुछ ठीक नहीं जिसे जहाँ जगह मिली घर बनाकर जम गया है। जबकि दखिय इही नागा का गवनमट म हजारों रुपये लोन और इम्पनसेगन क मिन हैं कपडे की दूकान खाली है। खा पीकर मजे से घूमत ह। पाकिस्तान न जा लोग जाये है—इन लोगो की बजह से हम टाम तक म जगह नपा मिलनी। जापको ता मालूम ही है। जसे यह इही का देश हो। हम नागा को तो जस जादमा ही नहीं मानते।’

‘तो नहीं मानें अब क्या मुकदमा करके इहे हटायगे ?’

हिमागु बाबू जरा मुसकराये। बोले, “नहीं नहीं, मुकदमा करके क्या इन नागा को हटाय जा सकता है। जहाँ जा जम गया है उस वहाँ से हटाना मुश्किल है। गवनमट भी उन लोगो से कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर सकती।’

क्या गवनमट क्या डरती है !

'डरगा नहा ? उन लोग का भी तो बाट दन का अधिकार है। चुनाव हान बाल हैं, दसासे उन्हें नाराज नही करना चाहती। कम्युनिस्ट लोग भी तो उन्हीं लोग की बकिंग पर चुनाव लड रहे हैं। गवर्नमट और अदालत उ कुछ भी नही हागा।

"तब उन लोग को कैसे हटापगे ?

"भारखर ! राता रात काम खत्म कर जना हागा। नही तो उन लोग क शोध कम्युनिस्ट पार्टी है। आर रायट जमा कुछ हाशाय ता हन लोग श्रिमानव-कस म फंस जावगे। इसी स वह सब भमना नही करना है। हम लोग का मय इन्तजान ह। किसी दिन सिड-नाइट म जातर मय भापड बगरह ताड फाडकर कडा कर लेंगे।

'लेकिन व लोग जावगे कहां ?

यह व लोग सनभे। रायट पार का दन बाधा जमान हम लोग न जमा तरह रिक्नम कर ली। जोर अपन इसी मुद्दत के एक विजनेमन हैं। उनही भी कुछ जमान रिपयूजिया न दवा ली थी। उहान भवमनमाहत कर जशनव म जस जनाया। जात्र नान नाल ही जय मानला भी चन रहा ह, गौठ क रुपय नो सच हुए ना अलग। अभी तक काइ फसला नहा हा पाया है। गिबप्रमाद बाजू उमें दसासिग कहा कि बिना भार नगाय व नाग जानवान नहा है। जब तक सा चार का सिर नहा फूटा दन लोग की मनन न नहा जावगा।'

उन दिन रात को तो मदारत टकी लसर गलाज रिपयूजा कलाना दरा गया था। उना दिन का बार्ते उम याद जान गया। मुडक क सिनार को जन्धो उमा जमान पर फट चिचडा टाटा टूट बासा और सपचिया ने सानागत्र क भापडे तपार किस है। सनाप्रत जात्रिन की खयर पर बटा बटा उम जम्ना की कम्पना करन गया। हिमागु बाजू तस बड बाब क सारण ही गायर लड डवनपमट सिडाकट बन रहा है। अभी जात्रिना म गायर एक-एक हिमागु बाजू हात है। उन लोग क लिए जात्रिम हा बिन्दता है। जात्रिष की छाटा-छाटा बाना स लसर बड-बड बरट जोर बनस्य-शाट इन लोग का खवान पर रहत है। कुछ हा दिना म सनाप्रत का पता लग गया कि हिमागु बाजू गुद भी एक फादन है। हजारा-लागा पून-जम कागडा क

बीच एक मरा हुआ कागज़ ।

हिमागु बाबू आफिस आत ही अपनी चेयर टेबल खुद ही डस्टर से भाड़ लेत । हिमागु बाबू काम करत-करते कहत 'तुम लाग सारे काम चपरासी स करत हो यह ता कोई अच्छी बात नहीं है । चपरासी है आफिस के काम क लिए उस चाय लन क्या भेजत हो ? चपरासी क्या तुम लोगा के घर का नौकर है ?

नन्दी कहता, तो हम लोगा का टिफिन की छुट्टी दाजिय ।"

हिमागु बाबू कहते, बगालिया म यह बडा भारी दोष है । हर बात म वहस करेगे । बगाली वहस करने म हां गय । मिलिटरी म क्या ऐम ही बगालिया को नहीं लते ।"

सदाब्रत अपन कबिन म बठा-बठा सब सुनता । मुनने म खूब मजा जाता ।

'कहता हू, टिफिन करने का अगर इतना ही शौक है तो गवनमट आफिस म नौकरी करो न । सारे दिन बठे बठ घटा भर टिफिन रूम म बिताकर मजे से घर चल आते, यहाँ क्या आ गये । हम लाग कोई खुशामद करने तो गय नहीं य । तुम लागा को बुलान भी नहीं गये थे कि अर नाई तुम लाग जाओ तुम लोगा के बिना मारा काम-काज रुका पडा है ।"

तभी एकाएक गल की आवाज बदलकर कहते "दत्त, चिट्ठी टाइप हुई ?"

टाइपिस्ट दत्त कहता जी जरा देरी होगी इस मशीन से और काम नहा चलेगा । एक नया मशीन मगाइए ।"

हिमागु बाबू कहते यह तो बहोगे ही । एक दिन मन अक्ल ही उस मशीन पर टाइप किया है । अकले हा आफिस की सारी फाइलें क्लीयर की हैं, और आज उसी काम क लिए इतन सार लोग हैं । मैंन मातक से तभी कहा था ज्यादा आदमी न लीजिए । ज्यादा लाग स जा काम होगा सा ता दीए रहा है ।

नन्दी म गायद और सहा नहा गया । बाबा, 'लेकिन हम लोग काम नहा करत हैं तो करत क्या हैं । आपक सामन हा ता बठ हैं ।"

एसा छाटी छोटी बाबा की बजह स सारा आफिस जस पत्थर हो गया

चा। सदाशत इनक पहल ना नहा जानता चा कि जहाँ से उसके घर की जाय हा रहा है, त्रिभ पस से उसकी गह्म्या चनता है, जिस आय क बूते पर उसकी गूद की पदाइ लिताइ हुइ, वहा न इतनी धिकायनें इतना अस-न्ताप। इनम से काई ना ता म्गु नही है। इन लोगा का साठ या सत्तर रुपय महाना मिलत हैं। और सदाशत अपना गाढा क पतान म ही ता पचास रुपय उडा दता है।

एक दिन हिमागु बाबू कविन म आय। उदाशत ने कहा, "अच्छा हिमागु बाबू एक बात पूछना भी।"

'कोनसी बात कहिए ?'

कह रहा चा रि क्या इन लोगा का, मान इन्हीं कुछ कलकों का तनस्वाह नहा बढ़ायी जा सकती ? वही काइ चार-पाँच रुपय महोन।"

'चुप, चुप।' हिमागु बाबू न चार-स कहत हुए अपन हाठा पर अँगुनी रगी और बात, 'व लाग मुन से। इतना जार म न बातिए।"

सदाशत न जाबाब धीमा करत हुए कहा 'नही, एक दिन दगा, टिफिन के समय कुछ ना नहा जा पाय। निऊ चाय पावर हा रह तय। और काई बाल नहीं है। तकिन यदनाप घर से मर त्रिण जना माता है, यह उन लोगों को मालूम है।

हिमागु बाबू पुसपुसाए, व और आय ? उन लोगा क साथ अपना तुनता कर रह है।

नही तुतना नहा कर रहा तकिन मान समय जान कता जाता है। बनीनाच जब प्लेटें धोता है, व ताग देखत हाग।'

हिमागु बाबू न कगा, 'अर नहा आप बरा ना त्रिक न कहिए। उन लोगा न पदाइ लिताइ कुछ ना नहा का है। इस नोकरी क बूत पर हा पट पास रह है। वही नोकरी न मिलन पर क्या करत जग मुनू ? यात तनस्वाह बड़ान का नाम न ताजिए। इन लोगा का 'उहमिरेगा।'

सदाशत न कहा, नहा मैं ताणस हा कह रहा था। जार बडा सकत।

नही, छोट बाबू ! वह उब मैं बटूत दगा है दा रुपय महान बदान उ उन लोगा क पर नहा पहुँचा। या ता म्गु म जापता, नही ता शराब